॥ श्रीः ॥

मिश्रबन्धु प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला ।

श्रीमन्मकरन्दाचार्यप्रणीत–

मकरन्द सारणी

सोपपत्तिव्याख्या, सोदाहरणं मकरन्दविवरणं, हिन्दीभाषोदाहरण सहितम् ।

सम्पादक

आचार्य रामजन्म मिश्र

ज्योतिषशास्त्राचार्य (गणित-फलित), एम० ए० (हिन्दी),

(रीडर) ज्योतिषविभाग, प्राच्यविद्या धर्मविज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी

प्रकाशक

मदालसा प्रकाशन, वाराणसी २२१००५

कार्तिक पूर्णिमा, संवत् २०३९, सन् १९८२

प्रकाशक

मदालसा प्रकाशन, वाराणसी

पिन २२१००५

[सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकेन स्वायत्तीकृताः]

सन् १९८२ प्रथम संस्करण २१०० प्रति

मूल्य—[illegible].००

मुद्रक

श्री विद्या प्रेस,

छित्त पुर, (बी० एच० यू०), वाराणसी

समर्पण



स्व० श्री पं० मदन मोहन मालवीय

सत्य सादगी सदाचार धर्माधिकार का
जनसेवा तप सरलहृदय व्रत स्वाभिमान का।
मार्ग दिखाया अति प्रशस्त तूने ही मुझको
हे भूतल के ईश ? समर्पण है यह तुझको ॥

श्रद्धावनत—

राम जन्म

ग्रन्थकर्तुः परिचयः

विश्ववन्द्यान् महाप्राज्ञान् ज्योतिर्विद्याविशारदान्।
आचार्यान् भास्कराद्यांस्तान् भूयोभूयो नमाम्यहम्॥ १॥

विद्यावतां बलवतां पुरुषार्थभृतां सताम्।
आगारमुत्तरप्रान्ते भाति बलियामण्डलम्॥ २॥

सिकर्योर्क पुरोतंसो वंशो गौतमगोत्रभृत्।
'विगही' नामके ग्रामे गुणग्रामेऽत्र राजते॥ ३॥

ग्रामेऽस्मिन् विश्रुतो विद्वान् नानाशास्त्रविचक्षणः।
श्रीमान् गोकुलमिश्रोऽभूत सर्वपूज्यो द्विजाग्रणीः॥ ४॥

तस्याभवत् सुता विज्ञः शिवगोविन्दसंज्ञकः।
शिव-गोविन्दयोर्यस्मिन् सम्यगभ्युदिता गुणाः॥ ५॥

स चोग्रतपसा प्रातत् पुत्रानभ्यर्चितान् जनैः।
नन्दनश्रीकरान् पञ्च देवद्रुमवरानिव॥ ६॥

क्रमेण श्रीदीनबन्धुं श्रीदेवशरणं ततः।
प्राज्ञं श्रीगिरिजादत्तं मध्यं मणिमिव स्रजः॥ ७॥

श्रीमत्कुवेरदत्ताख्यं चतुर्थं सम्मतं सताम्।
पञ्चमं रुद्रदत्तेन नाम्ना ख्यातं महात्मसु॥ ८॥

तत्र श्रीगिरिजादत्तमिश्रस्य पितुरन्तिकात्।
मातरि श्रीनगेश्वर्यां रामजन्माभवत् सुतः॥ ९॥

पूज्या श्रीमालवीयस्य विश्वविद्यालयेऽतुले।
प्राज्ञपूजितपादेभ्य आचार्येभ्योऽधिकाशिकम्॥ १०॥

विन्ध्येश्वरीप्रसादेभ्यो रामव्यासेभ्य एव च।
केदारदत्तजोशीभ्यो गुरुभ्योऽधिगतागमः॥ ११॥

प्राध्यापकपदं प्राप्य प्राच्यविद्यालये स्थितः।
छात्रानध्यापयम् प्रेम्णा तोषयँश्च सुधीश्वरान्॥ १२॥

मकरन्दंसमालोच्य विदुषां धुरि प्रस्तुवन्।
श्रीरामजन्ममिश्रोऽयं तुष्टिमात्मनि विन्दति॥ १३॥

स्नेहामृतं विना येषां ग्रन्थलेखनवर्त्मनि।
मरुप्राये गतिर्नस्यात्तान्नमः प्रेरकान् बुधान्॥ १४॥

प्रीयन्ते यदि सुप्रीता गुणदोषविदो विदः।
तदैव श्रमसाफल्यं गणयिष्याम्यहं हृदा॥ १५॥

विदुषामाश्रयो—
रामजन्ममिश्रः

सूचना

इस पुस्तक में पृ० ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९ और ९० के स्थान पर ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२ छप गया है इसको सुधार कर पृष्ठ समझें।

धन्यवाद !

श्रीः

भास्करो विजयते

भूमिका

सिद्धान्त संहिता और होरा रूप में त्रिष्कन्धज्योतिष त्रिभुवन में व्याप्त है। "शब्दशास्त्रं मुखं ज्यौतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ, यातु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पाद पद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः।" वेद पुरुष के षडङ्गो में नेत्ररूप प्रधान ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता सर्वविदित है, कुछ आधुनिक चाकचिक्य के कारण चपल दूषित मनोभिलाषी ज्योतिविद्मानी इसका स्वरूप कलुषित करते जा रहें हैं। अतएव विज्ञाननिकषनिर्घषित इस ज्योतिषशास्त्र के पुनरीक्षण की आवश्यकता पड़ गई है। इसी के प्रतिफल इस ग्रन्थ को प्रकाश में लाने का मेरा यह लघु प्रयास है।

इस मकरन्द सारणी के प्रणेता मकरन्दाचार्य ने अपने नाम से ही इस ग्रन्थ की रचना किया है। रचना का उद्देश्य विश्वोपकार तथा आधारशिला सूर्यसिद्धान्त को माना है, तथा काशी में इसकी रचना हुई है यह मकरन्द के आरम्भ के श्लोक

श्री सूर्यसिद्धान्त मतेन सम्यग् विश्वोपकाराय गुरुपदेशात्।
तिथ्यादि पत्रं वितनोति काश्यामानन्दकन्दो मकरन्दनामा॥

से व्यक्त होता है। इनके ग्रन्थ का आरम्भ शकाब्द १४०० है ऐसा पं० सुधाकर द्विवेदी जी ने अपने 'गणक तरंगिणी' में लिखा है। "ग्रन्थारम्भशकश्चतुर्दशशत १४०० समोज्ञायते"। किन्तु १५४४ शकाब्द से ही अपने तिथिकन्द का आरम्भ किया है अतः इनके मकरन्द निर्माणकाल या इनके जन्म शकाब्द का मात्र अनुमान ही किया जा सकता है। इनके मकरन्द पर श्री दिवाकर दैवज्ञ की 'मकरन्द विवरणम्' पुस्तिका उपब्ध है तथा विश्वनाथ का उदाहरण और गोकुलनाथ दैवज्ञ के द्वारा सारणियों की उपपत्ति लिखी गई है। सम्प्रति सभी प्रतियाँ अलभ्य हैं।

इस मकरन्द सारणी में तिथि नक्षत्र योग मध्यम सौर वर्षान्त के दिए गये हैं और १६, १६ वर्षो के अन्तर से उनकी ध्रुवा पढ़ी गई है। दैनिक और पाक्षिक तिथियों के मान भी पढ़े गये हैं। आचार्य मकरन्द ने १८४८ शकाब्द तक ही वल्ली आदि अपने तिथिकन्द में दिया है जिसे विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए सुगमता के लिए हमने २६०० तक बढ़ा दिया है। पञ्चाङ्ग निर्माण के लिए अपेक्षित सभी सामग्री सरल ढंग से ग्रन्थ में ग्रथित है विशेषकर गणित से ऊबने वालों के लिए यह अति

सरल साधन पञ्चाङ्ग बनाने का है 'भारतवर्षे सम्प्रति मकरन्दमेवाधीत्याऽत्मानं कृतकृत्यं मन्यन्ते प्रायः फलितं वेदिनो ज्योतिर्विदः" गणकतरंगिणी ।। पं० सुधाकर द्विवेदी।

इस मकरन्द सारणी के साथ ही पृष्ठ ६४ से ८२ तक श्री दिवाकर दैवज्ञ कृत मकरन्द विवरण सम्पूर्ण संशोधन पूर्वक दे दिया है और पृष्ठ ८३ से हिन्दी उदाहरण भी दे दिया है। हिन्दी उदाहरण एक अतिप्राचीन जीर्णशीर्ण पुस्तक से प्राप्त हुआ। उसमें आदि अन्त न होने से उदाहरण दाता का नामोल्लेख असम्भव होने पर भी लोकोपकार के उपयुक्त समझकर उसकी भाषा का यथा साध्य संशोधन कर तथा अपूर्ण भाग को पूर्णकर दे दिया है।

आशा है बुधजन इस प्रयास को अपनाकर हमें उत्साहित करेंगे। अतिमहर्घता के इस युग में प्रकाशन भार का वहन करना अति दुरुह होने पर भी कार्य में लगे रहने का एकमात्र कारण बाबू ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर, राजादरवाजा वाराणसी के प्रोप्राइटर श्रीगणेश जी हैं। इन्होंने कागज का भार लेकर मंगलाचरण किया अतः हृदय से उनके अहर्निश अभ्युदय की शुभ कामना करता हूँ।

आचार्य पं० श्रीचन्द्र पाण्डेय जी का मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन और आशिर्वाद से मुझे सफलता मिली है तथा यह ग्रन्थ पूरा हुआ है।

कार्तिकी पूर्णिमा
संवत् २०३९

रामजन्म मिश्र



विषय–सूची

	ग्रन्थ-विषय	पृष्ठाङ्क
१.	भूमिका	
२.	मङ्गलाचरणम्	१
३.	तिथिकन्दः	२
४.	तिथिगुच्छाः	३
५.	तिथि सौरभम्	४–५
६.	नक्षत्रकन्द, नक्षत्रशकावशेषित कोष्ठकाः	६
७.	नक्षत्र गुच्छाः, २ पृष्ठस्यशेषांशाः (तिथिकन्दः) ...	७
८.	नक्षत्र सौरभम्	८–९
९.	योगकन्द, योगशकावशेषित कोष्ठकाः	१०
१०.	योग गुच्छाः	११
११.	योग सौरभम्	१२–१३
१२.	मेषादि संक्रान्ति क्षेपकाः	१४
१३.	रविवाटिका	१५
१४.	चन्द्रवाटिका	१६
१५.	चन्द्रकेन्द्र वाटिका	१७
१६.	भौम वाटिका	१८
१७.	बुध वाटिका	१९
१८.	गुरु वाटिका	२०
१९.	शुक्र केन्द्र वाटिका	२१
२०.	शनि वाटिका	२२
२१.	केतोर्वाटिका राहोः सैकः ३०	२३
२२.	ग्रह दिन बल्ली कोष्ठकाः	२४–२६
२३.	अंशादि रवि फलम्	२७
२४.	अंशादि चन्द्र फलम्	२८
२५.	भौम फलं शीघ्रं मान्दश्च	२९–३०

२६.	बुध फलं शीघ्रं मान्दश्च	....	३१–३३
२७.	गुरो फलं शीघ्रं मान्दश्च	....	३४
२८.	शुक्र फलं शीघ्रं मान्दश्च	....	३५–३६
२९.	शनि फलं शीघ्रं मान्दश्च	... ...	३७–३८
३०.	वक्रीग्रहाणां पाद प्रवेशः ताराग्रहाणां शीघ्रकेन्द्रगतयः	...	३९
३१.	ग्रहाणां चरण प्रवेश चक्रम्	....	४०
३२.	मध्यलग्नम्	....	४१–४३
३३.	कलादि शरः	....	४३–४४
३४.	चन्द्रस्य विक्षेपांगुलादि	....	४५
३५.	नक्षत्रस्य गतैष्यादि क्रान्तिः	....	४६–४७
३६.	रव्यादिनां गतयः, चन्द्रदर्शन सारिणी	...	४८–५१
३७.	चरणगतनक्षत्राणि	... .	५२
३८.	उन्नतांशा द्वादशांगुलशंकुछाया	....	५३
३९.	नतघटी लम्बनम्	....	५४
४०.	रवि सौरभम्	... .	५५
४१.	चन्द्र ,,	... .	५६
४२.	भौम ,,	....	५७
४३.	बुध ,,	... .	५८
४४.	गुरु ,,	....	५९
४५.	शुक्र ,,	... ...	६०
४६.	शनि ,,	... .	६१
४७.	जीर्णपञ्चाङ्गातनूतनपञ्चाङ्गोत्पत्तिः	....	६१–६३
४८.	मकरन्दविवरणं सोदाहरणम्	... .	६४–८२
४९.	भाषा उदाहरणम्	....	८३–१३८

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री भास्करोविजयते ॥

॥ श्री मन्मकरन्दाचार्य प्रणीत ॥

॥ मकरन्द सारणी ॥

सोपपत्तिव्याख्या, सोदाहरणं मकरन्दविवरणं, हिन्दीभाषोदाहरण सहितम् ।

ग्रन्थकर्त्तुर्मङ्गलाचरणम्—

श्री सूर्यसिद्धान्तमतेन सम्यग्विश्वोपकाराय गुरुप्रसादात्[1] ।
तिथ्यादिपत्रं वितनोतिकाश्यामानन्दकन्दो मकरन्दनामा ॥ १ ॥

व्याख्याकारस्य मङ्गलाचरणम्—

यस्मिन् श्वसन्ति भुवि जन्मिन ऊर्जमाने खेटाश्च यं परित उद्भ्रमिणो भवन्ति ।
पन्थानमात्मयमिनां दिवि भास्करं तं नत्वा करोमि विवृतिं मकरन्दशास्त्रे[2] ॥

अन्वयः—काश्याम्, गुरुप्रसादात्, मकरन्दनामा विश्वोपकाराय श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन तिथ्यादि पत्रम् सम्यक् वितनोति ।

व्याख्या—काश्याम् = प्रसिद्धः वाराणस्यामिति । गुरु प्रसादात् = श्रीगुरूपदेशात् । आनन्दकन्दः = आनन्दस्वरूपः । मकरन्दनामा = मकरन्द नामकः । विश्वोपकाराय = जगद्धिताय । श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन । तिथ्यादिपत्रम् = पञ्चाङ्गोपयोगितिथ्याद्यानयन सारणी । सम्यक् = स्पष्टं । वितनोति = विस्तारयति ।

भाषा—काशी में अपने गुरु के आशीर्वाद को प्राप्तकर आनन्दकन्द मकरन्द नामक आचार्य विश्व के उपकार की भावना से सूर्यसिद्धान्त मतानुसार तिथ्यादि पत्र (मकरन्द सारणी) उत्तम प्रकार से कर रहे हैं ।

विशेष—इस मकरन्द सारणी में तिथि, नक्षत्र और योग मध्यम सौरवर्षान्त के दिये गये हैं और १६, १६ वर्षों के अन्तर से उनकी ध्रुवा पढ़ी गई है । दैनिक और पाक्षिक तिथियों के मान भी पढ़े गये हैं । ग्रन्थकार ने शक १८४८ तक का ही वल्ली आदि तिथिकन्द में दिया है जिसे विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए सुगमता के लिए हमने शक २६०० तक बढ़ा दिया है ।

१—'गुरूपदेशात्' इतिपाठान्तरम् (पृ० १०३ भारतीयज्योतिष डा० नेमिचन्द) ।

२—मकरन्दसारणी का अंग्रेजी अनुवाद जॉनवेण्टली साहब ने किया है (पृ० १०३ भारतीय ज्योतिष डा० नेमिचन्द) । श्री दिवाकर दैवज्ञ ने शक १५४० के आस पास मकरन्द विवरण नाम की टीका की है और श्री गोकुलनाथ दैवज्ञ ने शक १६८८ में इसकी सारणियों की उपपत्ति लिखी है (पृ० ३५५ भारतीयज्योतिष बालकृष्ण दीक्षित हिन्दी अनुवाद) ।

शकाद्यन्तरं वर्ष १६ तिथिकन्दे काश्यां वारादौ देशान्तरं* धनम् ४७ पलानि

(वाराणीतः देशान्तरं-आधुनिकं ५९ पलानि)

शकाः	०३५२	+ ० ३ २
तिथि	२६३६ २८	३३२६ ७
वार	७ ५६ २२	७ २८ ७
घटी	०७२६ ७	०२२६ ७
पल	२७ ३० ५५	४३२६ २७
वल्ली	० २ २७	२४२६ ०
घटी	३ २४ ३३	३६२६ ३
पल	७ २२ ३७	०१२६ ७
तिथि	१५ २७ ५	४२२६ १५
वार	५ ३ ५६	५ ३ २६
घटी	५५ ३३ ३०	५५ ३३ ३०
पल	४ ३ ३	४ ३ ३
वल्ली	६ २१ २०	६ २१ २०
घटी	५४ ४३ ३३	५४ ४३ ३३
पल	२२ ३६ ३८	२२ ३६ ३८
शकाः		
तिथि	२५ २८ ५	४२२६ २५
वार	४ २ ५६	४ २ २६
घटी	५५ ३३ ३०	५५ ३३ ३०
पल	३ ३ ३	३ ३ ३
वल्ली	६ २१ २०	६ २१ २०
घटी	५४ ४३ ३३	५४ ४३ ३३
पल	२२ ३६ ३८	२२ ३६ ३८

॥ शकावशेषः ॥

*कुछ प्रतियों में सैकं धनम् छपा है जो अनुपयुक्त है यहाँ धनम् मात्र होना चाहिए।

शेष तिथिकन्द पृष्ठ ७ पर देखें।

कोष्ठक	२ ३ ३	२ ३ ३	२ ३ ३	२ ३ ३	२ ३ ३
तिथि	२२ २५ २६	२२ २५ २६	२२ २५ २६	२२ २५ २६	२२ २५ २६
कन्द	२२ २३ २४	२२ २३ २४	२२ २३ २४	२२ २३ २४	२२ २३ २४
वल्ली	२५ ३० ३५	२५ ३० ३५	२५ ३० ३५	२५ ३० ३५	२५ ३० ३५
कन्द	२२ २७ ३३	२२ २७ ३३	२२ २७ ३३	२२ २७ ३३	२२ २७ ३३

॥ तिथि गुच्छाः गुच्छाङ्क कोष्ठान्तरं षष्टि ६० शुद्धं तिथि भक्तं फलं ऋणम् ॥

को०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
	०	०	१	२	२	३	४	५	५	६	०	१	१	२	३	४	४	५	६	०	१	१	२	३	४	५	५	६
गुच्छः	०	४५	३०	१४	५८	४२	२५	८	५१	३५	१९	४	४९	३५	२२	९	५७	४५	३४	२२	११	५९	४७	३५	२१	७	५३	३८
	०	३६	३२	५६	४३	१४	२४	३६	५८	४०	४७	२९	४८	४७	२५	३७	२४	५०	१०	५४	२८	४९	४३	५	५०	५५	१६	१६
तिथि	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
चालनं	५७	०	२	४	५	७	७	६	५	३	१	५८	५६	५३	५१	४८	४६	४६	४५	४५	४६	४८	५०	५३	५५	५८	०	
ऋणम्	३६	१६	२४	५२	५६	२०	१२	३२	१२	३२	१२	४४	४	२८	१२	५२	१६	४०	४	४४	३६	२४	३२	०	४०	३६	०	
	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२५	५७	२९	१	३३	६	३८	१०	४२	१५	४७	१९	५१	२३	५५	२८
वल्ली	०	८	१५	२१	२५	२९	३२	३५	३९	४३	४८	५५	२	१२	२२	३४	४७	२	१६	३१	४६	१	१४	२६	३७	४७	५४	२
	०	२३	२१	८	३२	२३	२८	४०	११	२६	३६	१	४८	१	३१	३३	४६	१५	३४	४९	४०	१	२४	३९	३२	०	५५	२५
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
वल्ली	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
चालनं	३३	२७	२३	१७	१५	१२	१२	१४	१७	२०	२५	३१	३६	४२	४८	५२	५७	५७	१	५९	५७	५३	४९	४३	३७	३१	३०	
धनम्	३२	५२	८	३६	२४	२०	४८	४	०	४०	४०	८	५२	०	८	५२	५६	१६	०	२४	२४	३२	०	३२	५२	४०	०	

॥ वल्लीकोष्ठकान्तरं तिथि भक्तं फलं धनम् ॥

वाराधिकः

घट्यादिकम्

तिथिसौरभम्

कोष्ठक		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
घटी	०	२४	२७	३०	३३	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	२९	२७
		५७	५०	४१	२७	३	३२	४९	५३	३९	१२	३४	३३	१८	४४	५४	४७	२५	४५	५४	४९	३०	३	२२	३२	३४	३०	१८	२	४२	२०
घटी	६	२५	२८	३०	३३	३६	३८	४१	४३	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३१	२९	२७
		१५	८	५८	४३	१९	४७	२	५	४९	२१	४१	३८	२२	४६	५४	४६	२२	४१	४८	४२	२२	५४	११	२१	२२	१८	५	४९	२८	६
घटी	१२	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४१	४३	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४३	४२	४४	३८	३६	३३	३१	१९	२६
		३२	२५	१५	०	३४	०	१५	१६	५८	३०	४८	४३	२५	४७	५३	४४	१९	३७	४२	३६	१४	४४	१	१०	१०	३	५२	३५	१४	५२
घटी	१८	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२६
		५०	४३	३२	१५	५०	१४	२८	२७	८	३८	५५	४८	२८	४७	५३	४२	१५	३२	३६	२७	५	३५	५०	५८	५८	४०	३८	२१	०	३८
घटी	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४३	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२८	२६
		७	०	४९	३१	४	२८	४१	३८	१७	४६	१	५३	३१	४८	५२	४०	११	२७	३०	१९	५७	२५	३९	४	४९	३७	२५	६	४८	२४
घटी	३०	२६	२९	३२	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४३	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३०	२८	२६
		२४	१६	५	४९	१९	४२	५३	४८	२८	५५	७	५७	३२	५०	५०	३८	७	२२	२४	१२	४८	१५	२८	३४	३३	२४	११	५३	३२	९
घटी	३६	२६	२९	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४५	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४१	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५
		४२	३३	२२	२	३४	५३	६	०	३६	३	१२	२	३६	५१	५०	३६	३	१७	१७	३	३९	५	१७	२२	२१	११	५८	३९	१८	५५
घटी	४२	२७	२९	३२	३५	३७	४०	४२	४४	४५	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३७	३४	३२	१०	२८	२५
		०	५०	३८	५७	४८	९	१८	१०	४५	११	१८	६	३८	५२	५०	३४	५८	१२	१०	५५	३०	५४	६	१०	८	५७	४४	२५	३	४०
घटी	४८	२७	३०	३२	३५	३८	४०	४२	४४	४५	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४७	४५	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२७	२५
		१६	७	५५	३३	३	२३	३०	२०	५४	१९	२३	१०	४०	५३	४८	३१	५४	६	३	५७	२१	४४	५५	५८	५५	४५	३०	११	४९	२६
घटी	५४	२७	३०	३३	३५	३८	४०	४२	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४६	४५	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	२९	२७	२५
		३३	२४	११	४८	१८	३७	४२	३०	३	२७	२८	१४	४२	५३	४८	२८	५०	०	५६	३८	१२	३३	४४	४४	४२	३१	१६	५७	३५	१२

को०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को०
००	२४	२२	२०	१७	१५	१३	११	९	७	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	११	१३	१६	१९	२२	घ०
	५७	३४	१२	५२	३६	२५	२०	२२	३२	५१	२४	५	०	९	२९	७	०	१०	३६	२१	२०	४३	१५	१	५	२२	५१	२७	१३	४	
६	२४	२२	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	४	२	१	१	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	११	१४	१६	१९	२२	६
	४२	१९	५७	३८	२२	१२	८	१०	२१	४२	१५	५८	५४	४	२६	६	०	१२	४०	२५	२७	५१	२४	१२	१८	३६	६	४३	३०	२१	
१२	२४	२२	१९	१७	१५	१२	१०	९	७	५	४	२	१	१	०	०	०	०	०	१	२	४	५	७	९	११	१४	१७	१९	२२	१२
	२८	५	४३	२४	९	५९	५१	०	१०	३४	७	५१	४८	०	२३	५	१	१४	४४	३१	३५	०	३४	२४	३१	५१	२१	०	४	३८	
१८	२४	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	७	५	४	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	४	५	७	९	११	१४	१७	२०	२२	१८
	१४	५१	२८	१०	५६	४७	४४	४९	०	२४	०	४४	४२	५६	२०	४	२	१६	४८	३६	४२	९	४४	३	४५	६	३७	१६	४	५४	
२४	२४	२१	१९	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	४	५	७	९	११	१४	१७	२०	२३	४२
	०	३७	१५	५६	४२	३४	३२	३७	४९	१५	५१	३७	३७	५१	१८	४	३	१८	५२	४३	५१	१८	५४	४८	५८	२०	५२	३२	२१	१२	
३०	२३	२१	१९	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	३	४	६	८	१०	१२	१५	१७	२०	२३	३०
	४५	२३	१	४३	३०	२१	२०	२	३९	६	४३	३०	३२	४७	१६	३	४	२१	५७	४५	०	२८	६	१	१२	३५	८	४९	३८	३०	
३६	२३	२१	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	३	२	१	०	०	०	०	१	१	३	४	५	८	१०	१२	१५	१८	२०	२३		३६
	३०	८	४७	३०	१७	८	८	१५	२९	५६	३५	२४	२७	४३	१४	२	५	२३	१	५३	८	३७	१६	१३	२६	५१	२३	५	५४	४७	
४२	२३	२१	१८	१६	१४	११	९	८	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१३	१५	१८	२१	२४	४२
	१५	५४	३३	१७	४	५६	५६	४	१९	४९	२७	१८	२२	३९	१२	१	६	२६	६	०	१६	४६	२७	२	४०	५	३९	२२	११	४		
४८	२३	२०	१८	१६	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१३	१५	१८	२१	२४	४८
	०	४०	१९	२	५१	४४	४४	५३	१०	४०	२०	१२	१७	३५	१०	१	७	२९	११	६	२४	५६	३८	३९	५४	२०	५४	३९	२९	२२		
५४	२२	२०	१८	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	१	२	३	५	६	८	११	१३	१६	१८	२१	२४	५४
	४७	२६	५	४८	३८	३३	३३	४२	०	३२	१२	६	१३	३१	८	०	८	३२	१६	१२	३२	५	४९	५२	७	३५	११	५६	४६	३९		

॥ नक्षत्रकन्दे काश्यां वारादौ देशान्तरं सैकं धनम् ०।०।४७ ॥

१५९२	१६२६	१६४०	१६६४	१६८८	१७१२	१७३६	१७६०	१७८४	१८०८	१८३२	१८५६	१८८०	१९०४	१९२८	१९५२	१९७६	शक:
१६	१२	८	४	२७	२३	१९	१५	११	७	३	२६	२२	१८	१४	१०	६	नक्षत्राणि
२	४	६	२	४	६	१	४	६	१	३	५	१	३	५	०	२	
४	४७	५९	१२	२५	३७	५०	२	१५	२८	४०	५३	५	१८	३०	४३	५६	वार घटी पला
४८	२४	५९	३४	९	४३	१८	५३	२८	३	३८	१३	४८	१३	५८	३३	८	
१०	१९	२७	३५	४	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	७	१६	२४	
४०	३	२५	४८	१०	३३	५६	१८	४१	३	२६	४९	११	३४	५३	१९	४२	बल्ली
३३	९	४५	२१	५७	३३	९	४५	२१	५७	३३	९	४५	२१	५७	३३	९	

॥ नक्षत्र शकावशेषित कोष्ठकाः ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	कोष्ठका:
१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	नक्षत्राणि
१	२	३	५	६	०	२	३	४	६	०	१	२	४	५	५	०	१	२	४	५	६	०	२	
१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	वारादिकम्
३	६	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४५	४८	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३२	३५	
१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१८	३४	४९	५	२०	३६	५१	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५२	८	
२६	५२	१९	४५	१२	३८	५	३१	५४	२४	५०	१७	४३	११	३६	५१	१७	४३	१०	३६	३	२९	५६	२२	बल्ली
२७	५६	२१	१८	१५	४२	९	३६	३	३१	५८	२५	५२	१९	४६	०	२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३६	

॥ नक्षत्र गुच्छाः ॥

वारान् विहाय गुच्छाङ्क कोष्टकान्तरं सप्तविंशति भक्तं फलं धनम् ॥

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	००
	०	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	६	५	५	४	
गुच्छाः	०	२०	४०	५९	१९	३७	५६	१४	३३	५१	१०	३०	५०	१०	३०	गुच्छाः
	०	१०	१८	४९	०	४४	३	३७	०	२८	४७	२४	२४	३३	४५	
	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
धनम्	४४	४४	४३	४३	४१	४०	४१	४०	४१	४२	५३	४४	४४	४४	४४	चालनं
	४८	४४	२२	३७	३०	४२	१५	५१	२	५६	३६	२७	४६	५३	४५	धनम्
वल्ली	५३	२६	१३	४९	४६	१३	३३	६	१३	०	०	०	४०	२०	०	घट्यादिः
	२०	४०	२०	४०	४०	२०	२०	४०	२०	०	०	०	०	०	०	
	०	५९	५९	५८	५८	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५२	
वल्ली	०	३१	२	३२	२	३०	५९	२६	५३	२१	५०	२१	५२	२३	५४	वल्ली
	०	२७	५१	५४	१२	३३	०	०	३०	२५	५२	७	१४	२७	३९	
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
वल्ली	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	वल्ली
चालनं	१६	१६	१३	११	९	९	९	७	८	१२	१४	१६	१६	१६	१६	चालनं
धनम्	३३	२६	२६	४६	४०	५३	४०	४९	४२	९	०	०	०	०	०	धनम्
	२०	४०	४०	४०	०	२०	०	४०	२०	४०	०	०	०	०	०	

२ पृष्ठस्यशेषांशाः—(तिथिकन्दः)

॥ वल्ली कोष्टकान्तरं सप्तविंशति भक्तं धनम् ॥

शकाः	२२९९	२३१२	२३२५	२३३८	२३५०	२३६३	२३७६	२३८९	२४०२	२४१५	२४२७	२४४०	२४५३	२४६६	२४७९	२४९२	२५०४	२५१७	२५३०	२५४३	२५५५	२५६८	२५८१	२५९४	२६००
तिथि	६	३	०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९					
वार	५	४	३	२	१	०	६	६	५	४	३	२	१	०	६	५	४	४	३	२					
घटी	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१९	२५	३१	३७	४३	५०	५६	२	८	१४					
पला	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७					
वल्ली	१३	१८	१४	१९	२५	३०	३६	४१	४७	५२	५८	३	९	१४	२०	२५	३१	३६	४२	४७					
घटी	१९	५०	२०	५०	२१	५१	२१	५१	२२	५२	२२	५३	२३	५३	२३	५४	२४	५४	२४	५५					
पला	५३	१०	२७	४४	१	१८	३५	५२	९	२६	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४२	५९	१६					

॥ नक्षत्र सौरभम् ॥

को०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	कोष्टका
०घ.	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३७	३९	४१	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४०	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२७	२५	० घटी
	४	४३	२०	५२	१६	३३	३९	३४	१४	३९	५५	५०	३३	५८	८	२	४३	७	२१	१७	८	४८	१५	३४	४४	४९	४७	४०	३०	१८	
६	२३	२५	२८	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४२	४४	४४	४५	४६	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४०	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२७	२५	६ ,,
	२०	५९	३५	७	३०	४६	५१	४५	२३	४७	१	५५	३७	०	८	१	४०	३	१६	११	१	४०	५	२४	३३	३६	३५	२७	१७	५	
१२	२३	२६	२८	३१	३३	३६	३८	३९	४१	४२	४४	४५	४५	४६	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४१	४०	३८	३७	३५	३३	३१	२९	२७	२४	१२ ,,
	३६	१५	५०	२२	४४	०	३	५५	३२	५५	७	०	४०	१	७	०	३७	०	१०	४	५३	३१	५५	१३	२२	२४	२२	१४	४	५२	
१८	२३	२६	२९	३१	३३	३६	३८	४०	४१	३३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४४	४२	४१	४०	३८	३७	३५	३३	३१	२९	२६	२४	१८ ,,
	५२	३१	६	३६	५८	१२	१५	६	४१	३	१३	५	४३	२	७	५८	३४	५५	४	५७	४६	२२	४५	२	१०	१२	९	१	५१	३९	
२४	२४	२६	२९	३१	३४	३६	३८	४०	४१	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३८	३६	३४	३३	३०	२८	२६	२४	२४ ,,
	८	४७	२१	५२	१२	२५	२६	१६	५०	११	२०	८	४३	३	६	५६	३१	५०	५७	५०	३८	१३	३५	५१	५८	०	५७	४८	३८	२६	
३०	२४	२७	२९	३३	३४	३६	३८	४०	४१	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	३० ,,
	२४	३	३६	७	२५	३७	३८	२६	५९	१८	२६	१२	४८	४	६	५५	२७	४५	५०	४३	३०	३	२५	४०	४७	४८	४४	३५	२४	१३	
३६	२४	२७	२९	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२३	३६ ,,
	४०	१८	५२	२०	३८	५०	५०	३६	७	२५	३१	१७	५०	५	५	५३	२४	४०	४४	३६	२२	५४	१५	२९	३६	३५	३२	२२	१०	५८	
४२	२४	२७	३०	३२	३४	३७	३९	४०	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२५	२३	४२ ,,
	५३	३४	७	३४	५३	३	१	४५	१५	३३	३६	२१	५२	६	५	५१	१९	३६	३७	२८	१४	४५	५	१८	२४	२४	१९	९	५८	४४	
४८	२५	२७	३०	३२	३५	३७	३९	४०	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३७	३६	३४	३२	३०	२७	२५	२३	४८ ,,
	१२	४३	२२	४८	९	१५	१२	५५	२३	४१	४१	२५	५४	७	४	४८	१५	२१	३०	२२	५	३५	५५	७	१२	१२	६	५५	४४	३१	
५४	२५	२८	३०	३३	३५	३७	३९	४१	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४०	३९	३७	३५	३४	३२	२९	२७	२५	२३	५४ ,,
	२८	५	३७	२	१९	२७	२३	४	३१	४९	४६	२९	५६	८	४	४३	११	२६	२४	१५	५६	२५	४५	५५	०	०	५३	४३	३२	१८	

॥ नक्षत्रसौरभम् ॥

को०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को०
०	२३	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	५	४	२	१	१	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१५	१७	२०	घ०
	४	५०	३८	२८	२१	२०	२४	३४	५१	१९	०	५१	४७	१	२५	५	०	१०	३५	१८	१३	२९	५४	३४	२९	३५	५२	१६	४८	२५	
६	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	६	८	१०	१३	१५	१८	२०	६
	५०	३६	२५	१५	८	८	१२	२३	४२	१२	५३	४४	४२	५७	२२	४	०	१२	३९	२२	२०	३७	४	४५	४१	४९	६	३१	३	४०	
१२	२२	२०	१८	१६	१३	११	१०	८	६	५	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	६	८	११	१३	१५	१८	२०	१२
	३७	२२	१२	२	५६	५६	१	१३	३३	३	४६	३७	३७	५३	२०	४	१	१४	४३	२७	२७	४५	२३	५६	५४	२	२०	४३	१९	५७	
१८	२२	२०	१७	१५	१३	११	९	८	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	११	१३	१६	१८	२१	१८
	२४	१०	५९	४९	४४	४४	५०	३	२३	५४	३९	३०	३२	४९	१७	३	२	१६	४७	३१	३५	५३	२३	७	५	१५	३४	१	३४	१२	
२४	२२	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	४	५	७	९	११	१३	१६	१८	२१	२४
	१०	५७	४६	३६	३१	३२	३९	५३	१४	४६	३२	२४	२७	४५	१५	२	३	१८	५१	३७	४२	१	३२	१८	१९	२९	४८	१६	५०	२८	
३०	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	४	५	७	९	११	१४	१६	१९	२१	३०
	५६	४४	३३	२४	२०	२१	२८	४३	५	३८	२५	१८	२३	४१	१३	२	४	२०	५६	४२	५०	९	४२	३०	३१	४२	३	३१	६	४४	
३६	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०	१	१	२	४	५	७	९	११	१४	१६	१९	२२	३६
	४३	३१	२०	११	८	१०	१७	३३	५५	३०	१८	१२	१८	३७	११	१	५	२२	१	४९	५७	१८	५२	४२	४५	५६	१७	४६	२१	०	
४२	२१	१९	१७	१५	१२	१०	९	७	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०	१	१	३	४	६	७	९	१२	१४	१७	१९	२२	४२
	३०	१७	७	०	५६	५८	६	२३	४६	२२	११	४	१३	३४	१०	१	६	२५	४	५५	५	२७	२	५३	५६	१०	३१	१	३७	१६	
४८	२१	१९	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	३	१	१	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२२	४८
	१७	४	५५	४६	४४	४६	५५	१३	३७	१५	४	५८	८	३१	८	०	७	२८	८	१	१३	३६	१३	५	८	२४	४६	१६	५३	३२	
५४	२१	१८	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१५	१७	२०	२२	५४
	३	५१	४१	३३	३२	३५	४५	३	२८	७	५७	५२	५	२८	६	०	८	३१	१३	७	२१	४५	२२	१७	२२	३८	१	३२	८	४८	

॥ योगकन्दे कार्य्या वारादौ देशान्तरं धनम् ०।०।४७ ॥

१५२०	१५५५	१५८८	१६१२	१६३६	१६५०	१६७५	१६८८	१७१२	१७३६	१७६०	१७८५	१८०८	१८३२	१८५६	१८८०	१९०५	शकः
१	२४	२०	१६	१२	८	४	०	२३	१९	१५	११	७	३	२६	२२	१८	योग०
२	५	०	२	४	०	२	४	६	१	४	६	१	३	५	१	३	वारादिः
५९	११	२४	३७	४९	२	१४	२७	३९	५२	५	१७	३०	४२	५५	८	२०	
१६	५१	२६	१	३६	२१	४६	२१	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	१	३६	
४५	५३	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२६	३४	४२	५१	५९	बल्ली
३४	५६	१९	४१	४	२७	४९	१२	३४	५७	२०	४२	५	२७	५०	५३	३५	
२	३८	१४	५०	२६	२	३८	१४	५०	२६	२	३८	१४	५०	२६	२	३८	

॥ योग शकावशेषित कोष्ठकाः ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	कोष्ठकाः
१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	योग
१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	५	०	१	२	४	५	६	०	२	
१७	३५	५३	११	२९	४७	५	२३	४०	५८	१६	३४	५२	१०	२८	४९	७	२५	४३	१	१८	३६	५४	१२	वारादि०
५३	४६	३८	३१	२३	१६	९	२	५४	४७	४०	३२	२५	१८	१०	३३	२६	१८	११	४	५६	४९	४२	३५	
१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१८	३४	४९	५	२०	३६	५१	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५२	८	
२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३१	५४	२०	४६	५२	३८	४	३०	५६	२२	बल्ली
४	१८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	१	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	

॥ योग गुच्छाः ॥

गुच्छाङ्क कोष्टान्तरं खतर्कानलतोविशुद्धं सप्तविंशति भक्तं फलं ऋणम् ॥

योग	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	कोष्टका
	०	४	१	६	३	१	५	३	०	४	२	६	४	१	५	३	
०	०	२७	५६	२५	५५	२३	४९	१४	३७	५९	२०	४१	३	२७	५२	१८	वारादि क्षेपका
	०	२४	२६	५७	८	१६	५२	४२	४५	२८	२८	३६	४२	१५	३१	५०	
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
	२५	२२	२१	२१	२४	२७	३१	३५	२८	४०	३९	३७	३४	३०	२८	२८	
०	४९	८	४	४८	८	३३	२८	२९	२४	०	४२	३३	२०	३१	११	११	चालनं ऋणम्
	४०	५३	२६	५३	५३	२०	५३	४०	४०	०	१३	२०	०	६	६	०	
	०	२०	४०	२०	२०	०	२०	०	०	०	०	०	०	४०	४०	०	
	०	५५	५०	४६	४१	३७	३२	२८	२३	१८	१३	९	४	५९	५४	५०	
०	०	५६	५५	२५	५५	२३	४७	७	२४	३७	४९	२	१६	३३	५५	२४	वल्ली क्षेपका
	०	५५	२४	५२	३४	१२	२७	५१	४	४४	५०	१४	४४	४७	८	८	
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	
०	१३	१६	२१	१९	१४	७	५८	४९	४३	४०	४०	४५	५१	०	१७	०	चालनं धनम्
	८	३७	२	२०	४४	१३	४०	२२	४२	१३	५३	३३	१३	२४	४६	०	
	५३	४६	१३	०	२६	२०	०	१३	१३	२०	२०	२०	२०	२६	४०	०	
	२०	४०	२०	०	४०	०	०	२०	०	०	०	०	०	४०	०	०	

॥ वल्ली कोष्टकान्तरं सप्तविंशति भक्तं धनम् ॥

॥ योग सौरभम् ॥

को०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	कोष्टका
० घ.	२१	२३	२६	२८	३०	३३	३४	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३१	२९	२७	२५	२३	० घटी
	२७	५४	१८	३९	५३	०	५७	४३	१७	३५	४७	३९	१९	४२	५४	५०	३१	०	१७	२२	१५	१	३४	०	१८	२९	३५	३७	३४	३३	
६	२१	२४	२६	२८	३१	३३	३५	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४०	३९	३७	३६	३४	३३	३१	२९	२७	२५	२३	६ ,,
	४२	८	३४	५१	६	१२	८	५३	२५	४३	५२	४४	२२	४५	५४	४९	२९	५६	१२	१६	९	५२	२५	५१	८	१८	२३	२५	२४	२१	
१२	२१	२४	२६	२९	३१	३३	३५	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४०	३९	३७	३६	३४	३२	३१	२९	२७	२५	२३	१२ ,,
	५७	२३	४८	७	१९	२४	१९	३	३३	५०	५९	४८	२५	४६	५४	४७	२६	५२	७	१०	१	४४	१६	४१	५७	७	११	१३	११	८	
१८	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३८	३९	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४०	३८	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२४	२२	१८ ,,
	१२	३८	२	२०	३२	३६	३०	१३	४१	५७	४	५२	२८	४८	५३	४६	२३	४८	२	३	५४	३६	७	३१	४६	५६	०	१	५९	५६	
२४	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३८	४०	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२४ ,,
	२७	५३	१६	३३	४४	४८	४१	२३	४९	५	१०	५६	३१	४९	५३	४४	२०	४४	५७	५६	४७	२८	५८	२१	३५	४५	४९	४९	४६	४४	
३०	२२	२५	२७	२९	३१	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	३० ,,
	४१	७	३०	४७	५७	०	५२	३२	५७	१३	१५	०	३३	५०	५३	४२	१७	४०	५१	५०	४०	१९	४८	११	२४	३३	३७	३७	३३	३१	
३६	२२	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३७	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	३६ ,,
	५६	२२	४४	०	१०	१२	३	४१	५	२०	२०	४	३५	५१	५३	४०	१४	३६	४६	४३	३२	११	३९	१	१३	२२	२५	२५	३२	१९	
४२	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३७	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३३	३२	३०	२८	२६	२४	२२	४२ ,,
	११	३६	५८	१४	२३	२४	१२	५०	१२	२७	२५	८	३७	५२	५२	३८	११	३१	४०	३६	२४	२	२९	५०	२	१०	१३	१३	१०	६	
४८	२३	२५	२८	३०	३२	३४	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३१	२९	२८	२६	२३	२१	४८ ,,
	२५	५०	१२	२७	३५	३५	२३	०	२०	३४	३०	१२	३९	५३	५२	३६	७	२६	३४	२८	१६	५३	२०	४७	५१	५८	१	१	५८	५३	
५४	२३	२६	२८	३०	३२	३४	२६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३१	२९	२७	२५	२३	२१	५४ ,,
	४०	५	२६	४०	४७	४३	३३	९	२७	४१	३५	१६	४१	५४	५१	३४	३	२२	२८	२२	८	४४	१०	२९	४०	४७	४९	४८	४३	४०	

को०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को०
घटी	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	७	९	१२	१४	१६	१९	घ०
	२७	२१	१९	१७	१८	२५	३६	५४	२०	५४	३९	३२	३७	५४	२३	४	०	११	३५	१५	७	१९	३७	११	५७	५४	१	१५	३५	०	
६	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१९	६
	१४	८	६	५	७	१४	२५	४४	१०	४६	३२	२६	३२	५१	२०	३	०	१३	३८	१९	१३	२७	४५	२१	८	७	१४	२८	४९	१४	
१२	२१	१८	१६	१४	१२	११	९	७	६	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	१२
	१	५६	५४	५३	५६	३	१४	३४	१	३८	२५	२५	२७	४७	१८	२	१	१५	४२	२४	२०	३४	५४	३१	१९	१९	२७	४२	४	२९	
१८	२०	१८	१६	१४	१२	१०	९	७	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	१८
	४८	४४	४१	४१	४४	५२	४	२५	५३	३०	१८	१४	२३	४३	१६	२	२	१७	४७	२९	२७	४१	४	४१	३१	३१	४०	५६	१८	४३	
२४	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२४
	३५	३२	२९	२९	३२	४१	५४	१५	४३	२२	११	८	१९	४०	१४	१	३	१९	५०	३४	३४	४९	१३	५१	४२	४४	५४	१०	३२	५९	
३०	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	८	१०	१३	१५	१७	२०	३०
	२२	२०	१७	१७	२१	३०	४३	६	३५	१५	४	३	१४	३७	१२	१	४	२१	५४	३९	४०	५७	२२	१	५४	५७	७	२४	४६	१३	
३६	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	५	४	२	१	१	०	०	०	०	०	०	१	२	४	५	७	९	११	१३	१५	१८	२०	३६
	१०	८	५	५	९	१९	३३	५६	२६	७	५८	५७	१०	३४	१०	१	५	२३	५८	४४	४७	५	३१	१२	६	१०	२०	३८	१	२७	
४२	१९	१७	१५	१३	११	१०	८	६	५	४	२	१	१	०	०	०	०	०	१	१	२	४	५	७	९	११	१३	१५	१८	२०	४२
	५८	५६	५४	५४	५८	८	२३	४७	१८	०	५१	५२	६	३१	८	१	६	२६	२	५०	५७	१३	४१	२३	१८	२२	३४	५२	१६	४२	
४८	१९	१७	१५	१३	११	९	८	६	५	३	२	१	१	०	०	०	०	०	१	१	३	४	५	७	९	११	१३	१६	१८	२०	४८
	४६	४३	४१	४३	४७	५७	१३	३८	१०	५७	४४	४७	२	२८	७	०	८	२९	६	५५	५	२१	५०	३५	३०	३५	४७	६	३१	५७	
५४	१९	१७	१५	१३	११	९	८	६	५	३	२	१	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	६	७	९	११	१४	१६	१८	२१	५४
	३४	३१	२९	३१	३६	४७	३	२९	२	४६	३७	४२	५८	२५	५	०	९	३२	११	०	११	२९	०	४६	४२	४९	१	२०	४५	१२	

॥ मेषादि संक्रान्ति क्षेपकाः एते सर्वे मेष संक्रमणेयोज्याः ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशिः
०	२	६	३	६	२	४	६	१	२	४	५	वारादिः
०	५७	२३	०	३०	३०	५५	४८	१७	३६	३	५३	क्षेपक
०	१	१	५१	४	२६	४८	३१	११	४	१५	२१	

२५८	२५९	२६०	२६१	२६२	२६३	२६४	२६५	२६६	२६७	२६८	शकाब्दा
०	३	५	०	२	४	०	२	४	६	१	
५३	६	१६	३१	४४	५६	६	२२	३४	४७	५६	वारादि
५३	२६	५	४१	१७	५३	२६	५	४१	१७	५३	

॥ मेष संक्रमणेदेशान्तरं धनं० पल ४७ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	कोष्ठकाः
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	
१५	३१	४३	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	वारादि
३२	३	३५	६	३८	९	४१	१२	४४	१५	४७	१८	५०	२१	५३	२४	५६	२७	५८	३०	२	३३	५	३६	

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ऽनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	प्र.अ.	नि.अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र
०	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	४	३	३	२	१	०	६	२	६	५	४	३	२	२	१	
०	४१	३०	२४	२३	२४	२९	३२	३२	३०	१९	५	४३	११	३६	५६	५	१२	१७	१९	१९	९	२३	२६	३०	४०	५१	११	४२	वारादि
०	३४	०	३५	३६	५७	३८	३९	४०	४	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	११	५०	५१	३५	१५	०	०	०	०	०	०	क्षेपकाः

वारे रूपं तिथौ रुद्रा ११ नाड्यां पञ्चदशैवतु ॥ जीर्णपत्रप्रमाणेन ज्ञायते सूर्यसंक्रमे ॥ १ ॥
मीने मेषोदये चन्द्रे सततं दक्षिणोन्नतम् ॥ शेषेषु-उत्तरं शृङ्गं समश्च वृषकुम्भयोः ॥ २ ॥

षड्गुणस्य ग्रहस्यादेर्लिप्ताशद्भक्तो गृहादिकाः । अथवा पञ्चभिर्भक्तो राशिः स्याद्दशभिर्लवाः ॥ १ ॥
अथ रविवाटिकादेशान्तरं ऋणं काश्यां ०।०।४७ नैमिषे ०।०।३८ ऋणम् । हस्तिगावे ०।०।३५ ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	
९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३५	४५	
५१	५१	४२	३४	२५	१६	८	५९	५०	४२	३३	२४	१६	७	५९	५०	४१	३३	२४	१५	७	५८	४९	३१	३२	२४	१५	६	५८	४९	
२१	२१	४३	५	३६	४८	१०	३१	५३	१५	३६	५८	२०	४२	३	२५	४७	८	३०	५२	१३	३५	५७	१८	४०	२	२४	४५	७	२९		
४१	४१	२३	५	४६	२८	१०	५२	३३	१५	५७	३९	२०	२	४४	२६	७	४९	३१	१२	५४	३६	१८	५९	४१	२३	५	४६	२८	१०		
४४	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१७		
२	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	५०	२२	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८	०	
५	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	
५५	५	१५	२५	३५	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४३	५२	२	११	२१	३१	४१	
४०	३२	२३	१४	६	५७	४९	४०	३१	२३	१४	५	५७	४८	३९	३१	२२	१३	५	५६	४८	३९	३०	२२	१३	४	५६	४७	३८	३०		
५०	१२	३४	५५	१७	३९	१	२२	४४	६	२७	४९	११	३२	५४	१६	३७	५९	२१	४३	४	२६	४८	९	३१	५३	१४	३६	५८	२०		
५२	३३	१५	५७	३८	२०	२	४४	२५	७	४९	३१	१२	५४	३६	१८	५९	४१	२३	४	४६	२८	१०	५१	३३	१५	५७	३८	२०	२		
१	४५	२९	१३	५७	४१	२५	९	५३	२७	२१	५	४९	३३	१७	१	४५	२९	१३	५७	४१	२५	९	५३	३७	२१	५	४९	३९	१८		
२	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	
३०	३५	४०	४५	५०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	

आद्यस्य वेदाद्युगलस्य वह्नेर्वह्नेर्यमाद्वेद मितास्य भूमेः । चत्वारि-एवं सकलांक योगोवाद्याग्रहाणां खलु कन्द एव ॥ १ ॥
रेखास्य देशान्तर योजनघ्नीगतिर्ग्रहस्वाभ्रगजैर्विभक्ता । लब्धं विलिप्ता खचरे विधेयाप्राच्यामृणंपश्चिमतो धनं स्यात् ॥ २ ॥ श्री रामायनमः ॥

॥ अथ चद्रवाटिका देशान्तरं ऋणं ०।१०।३२ मिथिला ०।२०।४८ मालवत्यादेशेकलादि ०।७।२७ ऋणम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
२	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४६	४८	५०	५२	५४	५७	५९	१	३	
११	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५७	९	३१	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	
४५	४५	३१	१७	३	४९	३४	२०	६	५२	३८	२३	९	५५	४१	२७	१२	५८	४४	३०	१६	२	४७	३३	१९	५	५१	३६	२२	८	
४८	४८	३७	२६	१४	३	५२	४०	२९	१८	६	५५	४४	३२	२१	१०	५८	४७	३६	२४	१३	२	५३	३९	२८	१६	५	५४	४२	५१	
४०	४०	२१	१	४२	२३	३	४४	२५	५	४६	२६	७	४८	२८	९	५०	३०	११	५२	३२	१३	५३	३४	१५	५५	३६	१७	५७	३८	
४८	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७	
१०	१०	२१	३२	४२	५३	४	१४	२५	३६	३७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१६	२७	३८	४८	५९	१०	
४२	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	३८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	

॥ इतिचन्द्रवाटिका ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
५	८	१०	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५४	५६	५८	०	२	५	७	९	
५२	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	१२	३४	
५४	४०	२५	११	५७	४३	२९	१५	०	४६	३२	१८	४	४९	३५	२१	७	५३	३८	२४	१०	५६	४२	२७	१३	५९	४५	३१	१७	२	
२०	८	५७	४६	३५	२३	१२	१	४९	३८	२७	१५	४	५३	४१	३०	१९	७	५६	४५	३३	२२	११	५९	४८	३७	२५	१४	३	५१	
१९	५९	४०	२०	१	४२	२२	३	४४	२४	५	४६	२६	७	४७	२८	९	४९	३०	११	५१	३२	१३	५३	३४	१४	५५	३६	१६	५७	
५	४३	२१	५८	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७	५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७	५	४३	३१	५९	३७	१६	५४	३२	
२१	३१	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	
०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	

॥ अथ चन्द्रकेन्द्रवाटिका देशान्तरं ऋणम् ०।०।५ मालवत्र्यादेः कलादिः ०।०।४ ऋणम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
२	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८	०	३	
१०	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६	५७	७	१८	२९	३९	५०	१	११	२२	३२	४३	५४	४	१५	२६	३६	४७	५८	८	
३८	३८	१७	५६	३५	१४	५३	३२	११	५०	२९	८	४७	२६	५	४४	२३	२	४१	२०	५९	३८	१७	५६	३४	१४	५३	३२	११	५०	
५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	२५	३४	२३	३२	३०	२९	२८	
५५	५५	५१	४६	४२	३७	३३	२८	२४	१९	१५	१०	६	१	५७	५०	४८	४३	३९	३४	३०	२५	२१	१६	१२	८	३	५९	५४	५०	
३१	३१	२	३३	५	३६	७	२८	१०	४१	१२	४४	१५	४६	१७	४९	२०	५१	२३	५४	२५	५६	२८	५९	३०	१	३३	४	३५	७	
१६	१६	३३	५०	६	२३	४०	५६	१३	३०	४७	३	२०	३७	५३	१०	२७	४३	०	१७	३४	५०	७	२४	४०	५७	१४	३०	४७	४	
४२	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	४६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	

॥ अथ चन्द्रकेन्द्रवाटिका देशान्तरं ऋणम् ०।०।५ ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
५	७	९	११	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४४	४६	४८	५१	५३	५५	५७	५९	१	४	६	८	
१९	३०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	४९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५	५६	७	१७	२८		
२९	८	४७	२६	५	४४	२३	२	४१	२०	५९	३८	१७	५६	३५	१४	५३	३२	११	५०	२९	८	४७	२६	५	४४	२२	१	४०	१९		
२७	२६	२५	२४	२७	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	१	०	५९	५८	५७	५६	
४५	४१	३६	३२	२८	२३	१८	१४	९	५	०	५६	५१	४७	४१	३८	३३	२९	२५	२०	१६	११	७	२	५८	५३	४९	४४	४०	३५	
३८	९	४०	१२	४३	१४	४६	१४	४८	१९	५१	२२	५३	२४	५६	२७	५८	३०	१	३२	३	३५	६	३७	९	४०	११	४२	१४	४५		
२१	३७	५४	११	२७	४४	१	१७	३४	५१	८	२४	४१	५८	१४	३१	४८	४	२१	३८	५५	११	२८	४५	१	१८	३५	५१	८	२५		
०	४२	२४	२६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	

चन्द्र वल्लीमध्ये चन्द्रकेन्द्रवल्ली हीनंकृत्वा सा चन्द्रोच्चवल्ली भवति । पुनः चन्द्रोच्चवल्ली चन्द्रवल्लीमध्येहीनंकृत्वाचन्द्रस्य मन्दकेन्द्रंस्यात् ॥

अथ भौमवाटिका देशान्तरं ऋणम् ०।०।२४ भौमोभवति, भौमगुरुशनीनां शीघ्रोच्चं मध्यमो रविः भौमगुरुशनीनां मध्येमध्यमो-रविः शोधितोजातं भौमगुरुशनीनां शीघ्रकेन्द्रंस्यात् षड्भाधिककेन्द्रं तदाचक्राच्छुद्धंतस्यांशं कृत्वा अंशप्रमितकोष्टको फलंग्राह्यं सानुपातम् ॥१॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	
५	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४१	४७	५२	५७	२	८	१३	१८	२३	२९	३४	३९	४४	५०	५५	०	५	११	१६	२१	२६	३१	
१४	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९	२४	३८	५२	७	२१	३६	५०	४	१९	३३	४८	२	१७	३१	४५	०	१४	२९	४३	५७	
२४	२४	४९	१४	३८	३	२	५२	१७	४२	६	३१	५६	२१	४५	१०	३५	५९	२४	४९	४३	३८	३	२८	५२	१७	४२	६	३१	५६	
४१	४१	२३	५	४७	२९	११	५३	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२७	९	५१	३३	१५	५७	३९	२०	२	४४	२६	८	५०	३२	१३	
५१	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५२	४३	३५	२६	१८	९	१	५२	४४	३५	२७	१८	१०	१	५३	
२९	२९	५८	२८	५७	२७	५६	२५	५५	२४	५४	२३	५३	२२	५१	२१	५०	२०	४९	१८	४८	१७	४७	१६	४६	१५	४४	१४	४३	१३	
२५	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	०	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	०	२५	५०	१५	४०	५	

॥ अथ भौम वाटिका ॥ एकाह्निका भौमगतिः ३१।२६।२८।११।८।५

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	
३७	४२	४७	५२	५८	३	८	१३	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८	५३	५८	३	९	
१२	२६	४१	५५	९	२४	३८	५३	७	२२	३६	५०	५	१९	३४	४८	२	१७	३१	४६	०	१४	२९	४३	५८	१२	२७	४१	५५	१०	
२०	४५	१०	३५	५९	२४	४९	१३	३८	३	२७	५२	१७	४१	६	३१	५६	२०	४५	१०	३४	५९	२४	४८	१३	३८	३	२७	५२	१७	
५५	३७	१९	१	४३	२५	४६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	५९	४१	२३	५	४७	२९	११	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४५	२७	१९	
४४	३६	२७	१९	१०	२	५३	४५	३६	२८	१९	११	२	५४	४५	३७	२८	२०	११	३	५४	४६	३७	२८	२०	११	३	५४	४६	३७	
४२	११	४१	१०	४०	९	३९	८	३७	७	३६	६	३५	४	३४	३	३३	२	३२	१	३०	०	२९	५९	२९	५७	२७	५६	२६	५५	
३०	५५	२०	४५	१०	३५	०	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	•	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	

रसाहता खेटलता भवेयुर्भागा विभक्ता खगुणै ३० र्ग्रहाःस्युः । तेऽप्यर्क भक्ता भगणा भवेयुः संमार्जनीया गणकैः प्रयत्नात् ॥ १ ॥
वह्नी शिराङ्केषुलवोगृहाणि शेषं दशाप्तं यदि वा लवादि । भादीनि सिद्धानिफलानियानि चन्द्रज्ञ शुक्रोच्चक वाटिकातः ॥ २ ॥
तानीहकेन्द्राणिभवन्ति तेषामुच्चानिनैवेत्यवगच्छनूनं । तुङ्गं भवेत्केन्द्रविहीनखेटस्तुगोनखेटः किलकेन्द्रमेवम् ॥ ३ ॥

अथबुधकेन्द्रवाटिकादेशान्तरं ऋणमंशादि ०।३।१६ बीजंधनं बुधवाटिका रविवाटिकामध्येशोधिता बुधोच्चं भवति बुधोच्चे बीजं धनं कृतं बीजसंस्कृतबुधोच्चं रविमध्येशोध्यं बुधस्य शीघ्रकेन्द्रं स्यात्॥ मिथि० ०।६।३२।५ मालवत्यांकलादि ०।२।१२अंशाद्रिभूगुण ३१७९ युतः शाको कल्पाब्दो भवति कल्पाब्द भाजक ७५० लब्धम् बीजमंशादिधनम् ६।१६।५२ इति बुध वाटिका०॥

चा०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	२८	२८	२९	५८	५६	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५	४४
	५५	५५	२८	५७	२६	५५	२४	५३	२२	५१	२०	४९	१८	४७	१६	४५	१३	४२	११	४०	९	३८	७	३६	५	३४	३	३२	१	३०	५९
	५८	५८	५५	५१	४७	४३	३९	३५	३१	२७	२३	१९	१५	११	७	३	५९	५५	५१	४७	४३	३९	३५	३१	२७	२३	१९	१५	११	७	३
	१४	१४	५८	५६	५४	५२	५१	४९	४७	४५	४४	४२	४०	३८	३७	३५	३३	३१	३०	२८	२६	२४	२३	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	९
	४५	४५	१४	२९	४४	५९	१३	२८	४३	५८	१२	२७	४२	५७	११	२६	४१	५६	१०	२५	४०	५५	९	२४	३९	५४	८	२३	३८	५३	७
	२९	२९	४५	३०	१६	१	४७	३२	१८	३	४९	३४	२०	५	५२	३६	२२	७	५३	३८	२४	९	५५	४०	२६	११	५७	४२	२८	१३	५९
	२०	२०	२९	५८	२८	५७	२६	५६	२५	५४	२४	५२	२२	५२	२१	५०	२०	४९	१८	४८	१७	४७	१६	४५	१५	४४	१३	४३	१२	४१	११
	४८	४८	२०	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३०	५१	१२	३३	५४	१५	३६	५७	१८	३९	०	२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९

बुधकेन्द्रस्यैकाह्निका गतिः ११।२६ ५३।३४।४९।२८।३९।५२ केन्द्रचालनम् ११।८।१५।१०।४६।१९।५०

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को०
४४	४३	४३	४२	४२	४१	४१	४०	४०	३९	३९	३८	३८	३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	२९	२९	२८
२७	५६	२५	५४	२३	५२	२१	५०	१९	४८	१७	४६	१५	४४	१३	४१	१०	३८	८	३७	६	३५	४	३३	२	३१	०	२९	५८	२७	५५
५९	५५	५१	४७	४३	३८	३४	३०	२६	२२	१८	१४	१०	६	२	२८	५४	५०	४६	४२	३८	३४	३०	२६	२२	१८	१४	१०	६	२	५८
७	५	३	२	०	५८	५६	५५	५३	५१	४९	४८	४६	४४	४२	४१	३९	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	२०	१८	१६	१४
२२	३७	५२	७	२१	३६	५१	६	२०	३५	५०	५	१९	३४	४९	४	१८	३३	४८	३	१७	३२	४७	२	१६	३१	४६	१	१५	३०	५४
४४	३०	१५	१	४६	३२	१७	३	४८	३४	१९	५	५०	३६	२१	७	५२	३७	२३	८	५४	३९	२५	१०	५६	४१	२७	१२	५८	४३	२९
४०	९	३९	८	३७	७	३६	५	३५	४	३४	३	३२	२	३१	०	३०	५९	२८	५८	२७	५६	२६	५५	२४	५४	२३	५२	२२	५१	२०
३०	५१	१२	३३	५४	१५	३६	५७	१८	३०	०	२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३०	५१	१२	३३	५४	१५	३६	५७	१८	३९	४८

॥ अथ गुरुवाटिका ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
४९	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२	२३	२४	
५१	४९	३९	२९	१९	९	५९	४९	३८	२८	१८	८	५८	४८	३८	२७	१७	७	५७	४७	३७	२७	१६	६	५६	४६	३६	२६	१६	५	
२८	५१	४२	२४	२५	१७	८	०	५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५२	४३	३४	२६	१७	९	०	५२	४३	३५	२६	१८	९	१	५२	
५	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	९	३७	५	३३	१	२९	५७	२५	५३	२१	५०	१८	४६	१४	४२	१०	३८	६	३४	
५७	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	१७	२३	२९	३५	४८	४७	५३	
५६	५७	५५	५३	५१	४९	४७	४५	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	
१७	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	

॥ गुरुवाटिका ॥

दिवसस्यैकस्य गुरोर्गतिः ०।४।५९।८।४८।३५।४७

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२४	२५	२६	२७	२८	२९	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३९	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
५५	४५	३५	२५	१५	५	५४	४४	३४	२४	१४	४	५४	४३	३३	२३	१३	३	५३	४३	३२	२२	१२	२	५२	४२	३२	२१	११	१	
४४	३५	२६	१८	९	१	५२	४४	३५	२७	१८	१०	१	५३	४४	३६	२७	१९	१०	१	५३	४४	३६	२७	१९	१०	२	५३	४५	३६	
२	३१	५९	२७	५५	२३	५१	१९	४७	१५	४३	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	१४	५३	२१	४९	१७	४५	१३	४१	९	३७	
५८	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५१	
५८	५५	५३	५१	४९	४७	४५	४३	४१	३९	३७	३२	३३	३१	२९	२७	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	
०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	

। गुरुवाटिकादेशान्तरंऋणम् ०।०।४ मिथिला ०।०।८ मालवत्यां कलादि ०।०।२ कल्पाब्द भाजकः १५००१० बीजं ऋणम् ॥

॥ शुक्रकेन्द्रवाटिका देशान्तरं ऋणंकाश्यां १।१७ कलिग.तभाजकः १००० अंशादि धनं इति शुक्रवाटिका० ॥

शेषाङ्क ऋणम्

०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	५३	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७
६	५०	५३	४७	४१	३५	२९	२३	१६	१०	४	५८	५२	४६	३९	३३	२७	२१	१५	९	२	५६	५०	४४	३८	३२	२५	१९	१३	७	१
९	४	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४१	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	१२
५५	२५	४	८	१२	१७	२२	२६	३०	३५	३९	४४	४८	५३	५७	१	६	१०	१५	१९	२४	२८	३२	३७	४१	४६	५०	५५	५९	३	८
३४	३०	२५	५१	१६	४२	७	३३	५८	२४	४९	१५	४०	६	३१	५७	२२	४८	१३	३९	४	३०	५५	२१	४६	१२	३८	३	२९	५४	१०
२८	१३	३१	२	३३	४	३६	७	३८	९	४०	१२	४३	१४	४५	१७	४८	१९	५०	२१	५३	२४	५५	२६	५८	२९	०	३१	१	३३	४
४६	१५	१३	२६	३९	५३	६	१९	३२	४६	५९	१२	२५	३९	५२	५	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१८	३१	३४	४८	१	१४
४४	५८	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	५४	२०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	१२	१८	३४

एकाह्निका शुक्र केन्द्र गतिः ११।२९।२३।०।२६।३३।७।१९ सप्त गुणित केन्द्र चालनम् ११।२५।४१।३।५।५१।५१।१३

शेषाङ्क धनम्

०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
५९	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५३
५३	५५	४८	४२	३६	३०	२४	१८	११	५	५९	५३	४७	४१	३४	२८	२२	१६	१०	५	५७	५१	४५	३९	३३	२७	२०	१४	८	२	५६
५०	२	५२	४२	३२	३२	१२	२	५२	४२	३२	२२	१३	३	५३	४३	३३	२३	१३	३	५३	४३	३३	२३	१३	३	५४	४४	३४	२४	१४
४	१२	१७	२१	२६	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	१	५	१०	१४	१९	२३	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	३	७	१२	१६	२१
२५	३५	११	३६	२	२७	५३	१८	४४	९	३५	०	२६	५१	१७	४२	८	३३	५९	२४	५०	१६	४१	७	३२	५८	३३	४९	१४	४०	५
३१	३५	६	३९	१०	४२	१२	४३	१५	४६	१७	४८	२०	५१	२२	५३	२४	५६	२७	५८	२९	१	३२	३	३४	५	३७	८	३९	१०	४२
१३	२७	४१	४	१७	३१	४४	५७	१०	२४	३७	५०	३	१७	३०	४३	५६	१०	२३	३६	५०	३	१६	३९	४३	५६	९	२२	३६	४९	२
१६	५०	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	९	३०	४६	२	१८	३४	५०	३	२२	३८	५४	१०	२८	४४

॥ शनि वाटिका देशान्तरं ऋणम् ०।०।२ शनि भाजकः १००० शनि वीजं धनमिति शनिवाटिका० ॥

शेषाङ्क	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
लेप०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०	२०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
३	३	२०	४०	७	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२१	४१	१	२१	४१	१	२१	४१	१	२१	४१	१	२१	४१
४८	४८	३	७	११	१५	१९	२२	२६	३०	३४	३८	४१	४५	४९	५३	५७	१	४	८	१२	१६	२०	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४६	५०
५४	५४	४५	३७	२६	१५	४	५३	४२	३१	२०	९	५७	४६	३५	२४	१३	२	५१	४०	२९	१८	७	५५	४४	३३	२२	११	०	३९	२८
१७	१७	५४	४८	४२	३७	३१	२५	२०	१४	८	२	५७	५१	४५	४०	३५	२८	२३	१७	११	५	०	५४	४८	४३	३७	३१	२६	२०	१४
४८	४८	१७	३५	५३	११	२९	४६	४	२२	४०	५८	१५	३	१५	२३	२७	४४	२	२०	३८	५६	१३	३१	४९	७	२५	४२	०	१८	३६
००	००	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

शेषाङ्क	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९
	१	२१	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	३	२३	४३	३	२३	४३	३	२३	४३	३	२३	४३
	५४	५८	२	५	९	१३	१७	२१	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	३	६	१०	१४	१८	२२	२६	२९	३३	३७	४१	४५
	२७	१६	४	५३	४२	३१	२०	९	५८	४७	३६	२५	१४	२	५१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	११	०	३९	३८	२७	१६	५
	८	३	५१	५१	३६	४०	३४	२८	२३	४७	११	६	०	५४	४९	४३	३७	३१	२६	२०	१४	९	३	५७	५२	४६	४०	३४	२९	२३
	५४	११	२९	४७	५	२३	४०	८	१६	३४	५२	९	२७	४५	३	२१	३८	५६	१४	३२	५०	७	२५	४३	१	९	३६	५४	१२	३
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

॥ केतोर्वाटिका राहोः सैकः ३० ॥

६०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को०
५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
२८	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५२	५३	५२	५२	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५	४५	४४	
१२	२८	५६	२४	५२	२१	४९	१७	४५	१३	४२	१०	३८	६	३४	३	३१	५९	२७	५५	२४	५२	२०	४८	१७	४५	१३	४१	४२	३८	
३०	१२	२५	३७	५०	२	१५	२७	४०	५३	५	१७	३०	४२	५५	७	२०	३२	४५	५७	१०	२२	३५	४७	०	१२	२५	३७	५०	२	
५०	३०	१	३२	३	३४	५	३५	६	३७	८	३९	१०	४०	११	४२	१३	४४	१५	४५	१६	४७	१८	४८	२०	५०	२१	५२	२३	५४	
२	५०	४०	३०	२०	१	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	११	
५	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४३	४६	४९	५२	५५	५८	१०	४५	७	१०	१३	१६	१९	२२	२४	
४०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३१	२७	२३	१८	१४	९	५	१	५७	५२	४८	४४	४०	३५	३१	२७	१३	१९	१४	१०	६	१	५७	

दिनस्यैकस्यराहोर्गतिः ११।२९।५६।४९।१५।५।५८।१७ सप्तगुणिते राहुचालनम् ११।२९।३७ ४४।४५ ३५।२

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को०
५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
४४	४३	४३	४२	४१	४१	४०	४०	३९	३९	३८	३८	३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	२९	
६	३४	२	३०	५९	२७	५५	२३	५१	२०	४८	१६	४४	१२	४१	९	३७	५	३४	२	३०	५८	२६	५५	२३	५१	१९	४७	१६	४४	
१५	२७	४०	५२	५	१७	३०	४३	५५	८	२०	३३	४५	५८	१०	२३	३५	४८	०	१३	२५	३८	५०	३	१५	२८	४०	५३	५	१८	
२५	५५	२६	५७	२८	५९	३०	०	३१	२	३३	४	३५	५	३६	७	३८	९	४०	१०	४१	१२	४३	१४	४५	१५	४६	१७	४८	१९	
१	५१	४१	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	१२	२	५२	४२	३२	२२	१२	२	५२	४२	३२	२२	१२	२	५२	४२	३२	२२	१२	
२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	०	३	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४३	४९	५२	
५३	४९	४४	४०	३६	३२	२७	२३	१९	१५	१०	६	२	५७	५३	४९	४५	४०	३६	३२	२८	२३	१	१५	१०	५	१	५७	५३	४६	

॥ देशान्तरं ऋणं कलादि ० ॥ २ ॥

॥ अथ ग्रह दिन बल्ली कोष्टकाः ॥

को०	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५
वल्ली	५०	५६	२	९	१४	२०	२७	३३	३९	४५	५१	५७	३	९	१५	२१	२७	३४	४०	४६	५२	५८	४	१०	१६	२२	२८	३५	४१	४६
	४७	४२	३६	०	५४	४९	१३	७	३१	२५	१९	४३	३८	३२	५६	५०	४५	९	३	२७	२२	१६	४०	३४	२८	५२	४६	१०	५	५९

	६	४	१	०	४	२	१	५	४	१	५	४	२	६	५	२	०	६	३	२	०	४	३	०	४	३	०	६	४	१

वाण

	सू०	चं०	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०	रा०	उ०	चके०	बुके०	शुके०	बुके०	शुके०
वल्यासप्तदिनावधि चालनम्	०	३	०	०	०	०	०	०	०	३	०	०	११	११
	६	२	३	२८	०	११	०	०	०	१	२१	४	८	२५
	५३	१४	४०	३८	३४	१२	१४	२२	४६	२७	४४	१८	१५	४१
	५७	४	५	४६	५४	५४	२	१५	४६	१७	४९	५६	१०	३
	११	४	१७	२४	१	५	४	१४	४९	१४	१७	५४	४६	५
	१२	२६	१८	५३	४०	२०	४०	३५	३५	५२	५७	८	२५	०
	०	४३	०	०	०	०	१४	०	०	०	०	०	०	०

रव्यादयो सप्तदिनावधौ चालनम्० ॥

दिनगणभवरवेटे वल्याचालनम् ॥१०।०।६।५ ॥

	चैशु०	व०	वैशु०	व०	जेशु०	व०	आशु०	ऋव०	भाशु०	व०	ऋभाशु०	ऋव०	धआशु०	धव०	वाशु०	व०	माशु०	व०	पौशु०	व०	माशु०	व०	फाशु०	व०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५
	१५	३०	४४	५९	१४	२९	४३	५८	१३	२८	४२	५७	१२	२७	४१	५६	११	२६	४०	५५	१०	२५	४०	५४
	१	२	२	३	४	५	५	६	०	१	१	२	३	४	४	५	६	०	०	१	२	३	४	४

॥ वल्या पाक्षिकं चालनं धनम् ॥

शेषांक क्षेपकः	५७	१९२८	१९८९	१७४२	१७९९	१८५७	१९१३	१९७०	२०२७	२०८४	२१४१	२१९८	२२५५	२३१२	२३६९	२४२६	२४८३	२५४०	२५९७	२६५४	शकः
	०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	राशि
	५	७	१३	१९	२५	३०	३६	४२	४८	५३	५९	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५१	अंश
	४३	४२	२९	१६	३	५०	३७	२४	११	५८	४५	३२	१९	६	५३	४०	२७	१४	१	४८	कला
	५९	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	विकला
वार	१	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	वारा०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५५	१	६	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५	२	७	१३	२०	२६	३२	३८	४४
२४	१८	१३	३७	३१	५५	४९	४४	८	२	५६	२०	१५	९	३३	२७	५१	४५	४०	४	५८	५२	१६	११	५	२९	२३
६	३	१	०	४	४	०	५	४	१	५	४	२	६	५	२	१	५	३	२	६	३	२	०	४	३	०

॥ सायनग्रहस्य अंशं कृत्वा षड्भक्तं लब्धं कोष्ठफलं गृहीत्वा ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	कोष्टक०
३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३३	३३	३३	काश्यां
०	२४	४७	१०	३३	५५	१६	३६	५४	२२	२७	४१	५२	०	४	५	४	०	५२	४१	२७	
३०	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३३	३३	कान्य-
०	२४	४८	१२	३६	०	२२	४२	२	२०	३८	५०	२	१०	१६	१८	१९	१०	२	५०	३८	कुब्जे

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	कोष्टक०
३३	३२	३२	३२	२१	३१	३१	३०	३०	३०	२९	२९	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२६	२६	काश्यां
१२	५४	३६	१६	५५	३३	१०	४७	२३	०	२७	१३	५०	२७	५	४४	२४	६	४८	३३	
३३	३३	३२	३२	३२	३१	३१	३०	३०	३०	२९	२९	२८	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२६	कान्य-
२०	०	४२	२२	०	३६	१२	४९	२४	०	३७	१०	४८	२४	०	३८	१८	५८	४०	२२	कुब्जे

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	कोष्टक०
२६	२६	२६	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	४८	२९	२९		काश्यां
१९	८	०	५६	५५	५६	०	८	१९	३३	४८	६	२४	४४	५	२७	५०	१३	३७		
२६	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९		कान्य-
१०	५८	५०	४४	४२	४४	५०	५८	१०	२२	४०	५८	८	३८	०	२४	४८	१०	३६		कुब्जे

दिनमानसार आदौ स्फुटरविं सायनं कृत्वा स्थाप्यस्तस्यराशिस्थाने त्रिंशता गुण्य अंशा संयोज्य षड्भिर्भाज्यस्तत्समानकोष्टफलं ग्राह्यमन्यदनुपातेन ज्ञेयम् ॥

॥ अंशादि रविफलं रवेर्मन्दोच्चं भ० १७।२।१७।१७।२१।१९ ५५८८४९०४ वर्षगणसौरमतेन सूर्य्यगतिः ५९ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	कोष्ठ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	
२	४	७	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२९	३२	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५८	०	२	४	६	फलम्
२०	४०	०	१९	३७	५६	१५	३३	५१	७	२३	३९	५५	१०	२४	३७	४९	१	१२	२२	३१	३९	४७	५३	५८	१	२	३	३	३	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	
१८	१८	१७	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५७	५६	गतिफलम्

मन्दोच्चम् धनम् ९ १२ ४२ ३९

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	कीष्ठ०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
८	९	११	१३	१५	१७	१९	२८	२२	२४	२६	२८	२९	३१	३२	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४३	४४	४६	४७	४८	४९	५१	५२	५३	फलम्
३	५७	५२	४७	४०	३१	२०	८	५४	३८	२१	३	४६	२३	५८	३२	४	३५	४	३३	०	२६	४५	२	१८	३३	४७	३	१२	२५	
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
५५	५४	५३	५२	५१	४९	४७	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	गतिफलम्

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	कोष्ठ०
१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	फलम्
३०	३४	३५	३४	३३	२७	२३	१४	४	५१	३५	१७	४७	३५	११	४५	१७	४५	१२	३५	५८	१८	३६	५१	३	१३	२१	२७	३१	३२	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१	५८	५६	५४	५२	५०	४९	४७	४६	४३	४१	३९	३७	३६	३३	३१	२९	२७	२४	२२	२०	१८	१५	१२	१०	८	६	४	२	०	गतिफलम्

॥ अंशादिचन्द्रफलं ॥ चन्द्रस्य मन्दोच्चं १०।१४।६।२८ चन्द्रगतिः ७९०।३५ ॥

कोष्ठ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फलम्	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	५	१०	१६	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५२	५८	३	८	१३	१८	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५८	३	८	१३	१८	२२	२७	३२
	२०	४०	०	१९	३६	५४	१२	३१	४४	५७	१०	२३	३५	४१	५३	०	५	९	१०	९	७	३	५६	४५	३२	१९	४	४६	२५	२
गतिफलम्	६९	६९	६९	६९	६९	६९	६९	६८	६८	६८	६८	६७	६७	६७	६६	६६	६६	६५	६५	६५	६४	६४	६३	६३	६२	६२	६१	६१	६०	५९
	३९	३६	३३	२८	२१	१३	३	५३	४३	२९	११	५२	३६	१७	५७	३८	१८	५७	३६	१४	५०	२४	५६	२४	५३	२०	४८	३	३५	५६

कोष्ठ०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फलम्	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
	३६	४१	४५	४९	५४	५८	२	७	११	१५	१९	२३	२७	३०	३४	३८	४३	४५	४९	५२	५५	५९	३	५	८	११	१४	१७	१९	२२
	३५	२	२७	५०	११	३४	५४	५	१२	१६	१८	१४	९	५५	५९	२	१२	३८	८	३०	४७	३३	२	८	१६	१६	११	०	४३	२९
गतिफलम	५९	५८	५८	५७	५६	५५	५५	५४	५३	५२	५२	५१	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३	३६	३५	३४
	२०	४१	०	१९	३७	५३	१४	३१	४४	५८	१२	२३	३८	३६	५४	०	५	९	१२	१९	२७	३२	३७	४१	४४	३७	५०	११	४८	४५

कोष्ठ०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फलम्	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५
	२५	२७	२९	३९	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	४९	५१	५२	५३	५५	५६	५७	५७	५९	५९	०	१	१	२	२	२	२	२
	६	३६	५९	१९	३७	५३	५४	५४	५२	४०	२४	५	३९	८	३३	५९	९	१५	१६	१३	६	५३	३३	१८	४१	३	२२	३७	४५	४८
गतिफलम्	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१६	१५	१४	१३	१२	१०	९	८	७	६	४	३	२	१	०
	४४	३९	३५	२९	२३	१३	७	१	५५	४९	४१	३४	२४	१४	४	५२	३९	२५	१४	३	४३	४१	२०	१४	२	५१	४०	२७	१४	०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	को०
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	शी
२४	४७	११	३५	५८	२२	४६	९	३३	५६	२०	४४	७	३०	५५	१८	४१	५	२८	५१	१५	३९	३	२१	४९	१२	३५	५८	२१	४४	घ
०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	मा
१२	१३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४५	५६	१७	२८	३९ २८	४८ ३९	५९	१० ५९	२१	३०	४०	५१ ४०	५२ ५०	१	११	२०	न्द

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	को०
१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२२	शी
७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५५	१८	४१	३	२५	४८	१०	३२	५४ ५५	१७	३६	१	२३	४५	७	२९ २८	५०	१२	३४	५६	घ
५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	मा
३०	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	४९	५६	३	१०	१७	२३	३०	न्द

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	को०
२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	शी
१६	३७	५९	२०	४१	२	२२	४३	४	२४	४५	५	२५	४५	५	२५	४५	५	२४	४३	३	२१	४०	५९	१७	३६	५४	१२	३०	४८	घ
९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	मा
३६	४३	४९	५५	१	७	१२	१७	२२	२७	३२	३६	४१	४५	४९	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	न्द

॥ अथ भौमफलं शीघ्रं मान्दञ्च ॥ मन्दोच्चं भ० ९२।४।१०।२।३५।२६ गतिः ३१।२६

| | | |

॥ अथ बुध फलं शीघ्रं मान्दञ्च ॥ मन्दोच्चं भ० १६६।७।१०।१२८।१३।२३ गतिः २४५।३२

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	को.
०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	शी
१७	३३	४९	५	२१	३७	५३	९	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२१	३७	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५७	घ्र
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	मा
५	१०	१४	१९	२४	२८	३३	३८	४३	४७	५२	५६	१	५	१०	१४	१९	२४	२८	३२	३६	४१	४५	४९	५४	५८	२	६	१०	१४	न्द

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	को.
८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	शी
१२	२७	४२	५७	१२	२७	४२	५७	१२	२७	४२	५६	११	२५	४०	५४	८	२२	३६	४९	३	१७	३१	४४	५७	१०	२३	३६	४९	२	घ्र
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	मा
१८	२२	२५	२९	३३	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३४	३७	४०	४२	४५	४७	५०	न्द

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	को.
१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	शी	
१४	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१३	२४	३४	४४	५५	६	१६	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३७	४५	५३	०	७	घ्र
३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	मा
५३	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२५	२५	२५	२३	२६	२७	२७	२७	न्द

॥ बुधस्य वक्रांशाः २१६ मार्गांशाः १४४ पश्चादस्तांशाः २०५ प्रागुदयांशाः १५५ प्रागस्तांशाः ५० पश्चादुदयांशाः ३११ अस्तदिनानि १६ वक्रदिनानि २४ मार्गदिनानि ३ अस्तदिनम् ३२ ॥

	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
को०																														
शी	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
घ	१४	२१	२८	३५	४१	४६	५१	५६	१	५	१०	१४	१८	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३१	३१	३१	३१	३०	२९	२८	२५	२२	१९	१६
मा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३
न्द	२७	२८	२८	२७	२७	२७	२७	२६	२६	२५	२४	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१२	११	९	८	६	४	२	०	५८

	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
को०																														
शी	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१५	१५	१५
घ	१२	८	३	५७	५१	४४	३६	२९	२०	१३	४	५४	४३	३२	२०	८	५५	४२	२७	१३	५९	४२	२४	६	४८	२९	९	४९	२८	६
मा	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२
न्द	५६	५४	५२	४९	४७	४४	४१	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	८	५	२	५९	५५	५१	४७	४३	३९	३५	३१	२७	२३

	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
को०																														
शी	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	११	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	६	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०
घ	४४	२१	५८	३४	९	४३	१७	४९	२३	५५	२७	५७	२७	५७	२३	५५	२३	५०	१८	४५	१२	३८	४	२९	५५	२०	४५	११	३६	०
मा	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
न्द	१९	१५	११	६	२	५७	५३	४८	४४	३९	३५	३०	२५	२०	१९	११	६	१	५६	५१	४६	४०	३६	३१	२६	२१	१५	१०	५	०

॥ गुरोर्वक्रांशाः २३० मार्गांशाः १३० पश्चादस्तांशाः १४ प्रागुदयांशाः ३४६ वक्रदिनानि=११२ अस्तदिनानि ३२ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	को०
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	शी
१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२७	३७	४७	५७	७	१६	२६	३६	४६	५५	४	१४	२४	३३	४२	५२	२	११	२०	३०	३९	४९	घ्र
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	मा
५	१०	१५	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५२	५७	२	७	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	५७	१	७	११	१५	२०	२४	२९	न्द

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	को०
४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	शी
५९	७	१७	२६	३४	४३	५२	१	९	१८	२६	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४१	४८	५६	४	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५४	घ्र
२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	मा
३३	३८	४२	४७	५१	५५	५९	४	८	१२	१६	२०	२३	२७	३१	३५	३९	४२	४५	४९	५२	५६	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	न्द

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	को०
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	शी
१	८	१४	२१	२८	३४	४०	४५	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२८	३३	३७	४१	४६	५०	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१६	घ्र
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	मा
२२	२५	२७	३०	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५२	५४	५५	५६	५७	५९	०	१	१	२	३	४	४	५	५	५	न्द

अथ गुरोः फलं शैघ्रं मान्दञ्च । मन्दोच्चं भगणादिः ४०७।५।२१।२२।४।३ गतिः ५।० मन्दोच्चम् ५।१८।५३।५७ ०।०

९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	को०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	शी
१९	२२	२५	२७	२८	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३०	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२२	१९	१६	१३	१०	६	२	५९	५५	५१	घ
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	मा
६	६	६	६	६	५	५	४	४	३	३	२	१	०	५९	५८	५७	५५	५४	५२	५०	४९	४७	४५	४३	४१	३८	३६	३४	३१	न्द

१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	को०
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	६	६	शी
४६	४१	३६	३१	२५	१९	१३	७	१	५४	४७	३९	३२	२५	१७	९	०	५१	४१	३२	२२	१२	२	५२	४१	३१	१९	८	५७	४६	घ
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	मा
२९	२६	२३	२१	१८	१५	१२	९	६	३	५९	५५	५२	४९	४५	४१	३७	३३	२९	२५	२१	१७	१३	८	४	०	५५	५०	४६	४१	न्द

१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	को०
६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	०	शी
३४	२३	११	५९	४७	३४	२१	८	५५	४२	२९	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५५	४१	२७	१३	५९	४४	२९	१५	०	घ
२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा
३६	३१	२७	२२	१७	१२	७	२	५७	५१	४६	४१	३५	३०	२४	१९	१३	८	२	५७	५१	४५	४०	३४	२९	२४	१८	१२	६	०	न्द

॥ अथ शुक्र फलं शैघ्रं मान्दञ्च ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	को०
०	०	१	१	२	३	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	शी
२५	५१	१६	४२	६	३१	५७	२२	४१	१२	३७	३	२८	५३	१८	४३	८	३३	५८	२४	४९	१४	३९	४	२९	५४	१९	४४	९	१३	घ्र
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा
२	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३०	३२	३४	३६	३८	३९	४१	४३	४४	४६	४८	४९	५१	५३	५४	५६	न्द

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	को०
१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	शी
५८	२३	४८	१३	३७	२	२७	५१	१६	४१	५	३०	५४	१९	४३	७	३२	५६	२०	४४	८	३२	५६	२०	४४	८	३२	५६	२०	४४	घ्र
०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	मा
५७	५९	०	२	३	५	६	७	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न्द

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	को०
२५	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	शी
७	३०	५३	१६	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२०	४३	५	२७	४९	१२	३५	५७	१९	४०	३	२३	४४	६	२८	४९	१०	३१	५२	घ्र
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	मा
३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	न्द

॥ अथ शुक्रफलं शैघ्रं मान्दञ्च ॥ मन्दोच्चं भगणादिः २४२।२।१९।५२।७।६ गतिः ९६।८

	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	
को०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	
शी	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	
घ्र	१२	३३	५४	१४	३४	५३	१२	३१	५०	९	२७	४४	३	२१	३९	५६	१३	३०	४७	४	२०	३६	५१	८	२१	३५	४९	२	१५	२७	
मा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
न्द	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४१	४१	४०	४०	३९	३९	३७	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३३	

	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	
को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	
शी	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४४	४४	
घ्र	३९	५०	१	१२	२२	३१	४०	४९	५६	२	८	१३	१७	२०	२३	२४	२४	२४	२३	२०	१५	७	५६	५०	३९	२६	११	५५	३७	१६	
मा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
न्द	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१२	१०	९	८	६	५	३	२	०	५९	५७	५६	

	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	
को०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	
शी	४३	४३	४२	४२	४१	४१	४०	३९	३८	३८	३६	३५	३४	३३	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१२	१०	७	५	२	०		
घ्र	५४	२७	५८	२६	५०	११	३०	४५	५५	०	५८	५४	४६	३३	१२	४७	१५	३६	४५	५०	५६	५३	४०	२१	५८	२९	५६	१९	४०	०	
मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
न्द	५४	५३	५१	४९	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३७	३५	३३	३१	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०		

॥ भृगोर्वक्रांशाः १५७ मार्गांशाः १६३ पश्चादस्तांशाः १८३ प्रागुदयांशाः १७७ प्रागस्तांशाः २४ पश्चादुदयांशाः ३३६ प्रागस्तदिनानि ७४ पश्चादस्तदिनानि १० वक्रदिनानि ४८ ।

॥ शनि फलं शैघ्रं मान्दञ्च ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	को.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	शी
६	१२	१८	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	घ्र
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	मा
८	१५	२३	३०	३८	४६	५३	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४	१	८	१५	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	३९	न्द

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	को.
२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	शी
५७	२	८	१३	१८	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	२	७	११	१६	२०	२५	३०	३५	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	घ्र
३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	मा
४६	५२	५८	५	११	१७	२३	३०	३६	४२	४८	५४	०	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४३	४८	५३	५८	२	७	११	१६	२०	२५	न्द

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	को.
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	शी
१५	१८	२१	२५	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४६	४८	५१	५४	५७	५९	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	घ्र
६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	मा
२९	३३	३६	४०	४४	४८	५१	५४	५८	२	५	८	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२७	२९	३०	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	न्द

॥ अथ शनिफलं शैघ्रं मान्दं च ॥ मन्दोच्चं भगणादिः १७।७।२६।३७।३३।२२। गतिः २।० शीघ्रोच्चगतिः ५९।८

को०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
शी	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५
घ्र	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१७	१६	१५	१४	१२	१०	७	५	३	१	५८	५५	५२	५०	४७
मा	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६
न्द	३९	४०	४०	४०	४०	४०	३९	३८	३८	३७	३७	३७	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१

को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
शी	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३
घ्र	४५	४२	३९	३५	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	५९	५४	५०	४५	४०	३५	३०	२५	२०	१४	८	३	५७	५२	४६	४०	३४	२८
मा	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४
न्द	४८	४३	३९	३५	३१	२७	२३	१९	१४	९	४	५८	५३	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४१	३४	२७	२०	१३	५

को०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
शी	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ्र	२२	१५	९	३	५७	५०	४३	३६	३०	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	१९	१२	५	५८	५१	४३	३६	२९	२२	१५	८	०
मा	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०
न्द	५८	५१	४३	३५	२८	२१	१३	५	५७	४९	४२	३४	२५	१७	९	०	५२	४४	३६	२७	१८	९	०	५२	४३	३५	२६	१७	९	०

शनेर्वक्रांशाः २४५ मार्गांशाः ११५ पश्चादस्तांशाः १७ प्रागुदयांशाः ३४३ अस्तदिनानि ३६ वक्रदिनानि १३४

॥ वक्रि ग्रहाणां पादप्रवेशः ॥ ताराग्रहाणां शीघ्रकेन्द्रगतयः मं० २७ बु० १८६ गु० ५४ शु० ३७ श० ५७
४३ २४ ८ ० ६

	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ऽनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र
	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	०	
४	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	चतुर्थ ४
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	वृ.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	मी.	
	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	
३	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	तृतीय ३
	०	२०	४०	०	२०	४०	मि.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	तु.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	कु.	२०	४०		
	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	
२	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	द्वितीय २
	४०	०	२०	४०	बृ.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	मं.	२०	४०	०	२०		
	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	
१	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	प्रथम १
	२०	४०	मे.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	सिं.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	ध.	२०	४०	०	२०	४०	०		

॥ इष्ट कोष्ठमध्ये यदाग्रहः पतति तदा मिश्रमानमध्ये तत्फलं ऋणं कार्य्यम् ॥ स्पष्ट ग्रह मध्ये यदा चरणं पतति तदा मिश्रमानमध्ये तत्फलं धनं कार्यं अथागस्त्योदयाऽस्तांशाः ४।१९।२०।१ ईदृशेर्केऽगस्त्योदय १।१०।३३।२० ईदृशेर्केऽगस्त्यास्तः ॥

॥ ग्रहाणां चरण प्रवेशचक्रम् ॥ इदृशेऽर्के । अगस्त्यास्तम् १।२।०।० इदृशेऽर्के अगस्त्योदयः ४।२४।०।० काश्याम् ॥

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र
	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	
१	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	प्रथम
	२०	४०	बृ.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	म.	२०	४०	०	२०	४०	०	
	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	
२	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	१३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	द्वितीय
	४०	०	२०	४०	मि.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	तु.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	कु.	२०	४०	०	२०	
	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	
३	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	तृतीय
	०	२०	४०	०	२०	४०	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	वृ.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	मी.	२०	४०	
	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	०	
४	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	चतुर्थ
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	सिं.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	ध.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	

पठित केन्द्रांशा अधिका-इष्टकेन्द्रांशा न्यूनास्तदा फलं मिश्रमान वारादिमध्ये ऋणं, यदा इष्ट कोष्ठ केन्द्रांशा अधिका-पठित-केन्द्रांशान्यूनास्तदाफलं मिश्रमानवारादिमध्ये धनम् ॥ वर्तमानपाद प्रवेशः परन्तु पूर्वपदेनान्तरंकार्यम् ॥

॥ मध्यलग्नम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को०
२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	घ०
४७	५६	५	१४	२४	३३	४८	५१	१	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	प०
०	१६	३५	५१	७	२२	३९	५२	११	२७	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वि०

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	को०
७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	५२	घ०
३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४७	५८	९	२०	३१	४१	५२	प०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४३	४२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	१८	३४	वि०

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	को०
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	घ०
३	१४	२४	३५	४३	५७	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५४	४	१५	प०
२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४३	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	१	४८	३४	वि०

॥ मध्यलग्नम् ॥

को०	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१
घ०	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१८
प०	२४	१४	४	५४	४४	३४	२४	१४	४	५४	४४	३४	२४	१४	४	५८	५२	४१	३०	२०	९	५८	४६	३७	२६	१५	४	५४	४३	३२
वि०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	४३	४७	५१	५५	०

को०	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
घ०	२८	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२६	२६	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१
प०	९	५१	५२	३१	२२	१३	४	५४	४४	३४	२४	१४	४	५४	४४	३४	२४	१४	४	५४	४४	३४	२४	१४	४	५४	४४	३४	२४	१४
वि०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०

को०	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१
घ०	३२	३२	३२	३२	३२	३१	३१	३१	३१	३१	३०	३०	३०	३०	३०	२९	२९	२९	२९	२९	२८	२८	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२७	२७
प०	४७	२८	१९	१०	०	५१	४२	३३	२३	१४	५५	४६	३७	२८	१९	१०	०	५१	४२	३३	२३	१४	५५	४६	३७	२८	१९	१०	०	५१
पि०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०

| | | |

| | | |

॥ चन्द्रस्यविक्षेपांगुलादि ॥ सपातचन्द्रो विराहुर्वाचन्द्रषडधिकश्चेच्चक्रा १२ च्छोध्यः अन्यथा यथास्थित एव तस्यांशाः कर्त्तव्यास्ते षड्भिर्भाज्यालब्ध कोष्टकस्थोः विक्षेपो अंगुलादिर्भवति ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	शर अं
९	१८	२७	३६	४५	५२	६०	६६	७२	७७	८२	८५	८८	८९	९०	८९	८८	८५	८२	७७	७२	६६	६०	५२	४५	३६	२७	१८	९	०	गु ला दि
२४	४३	४९	३६	०	५४	१३	५३	४४	५७	१३	३६	२	३०	०	३०	२	३६	१३	५७	४४	५३	१३	५४	०	३६	४९	४३	२४	०	को.

सायनांशग्रहषडधिकश्चेच्चक्राच्छोध्यः तस्यांशाः षड्भिर्भाज्याः लब्धकोष्टकस्थाक्रांतिसानुपातात्ग्राह्याः पश्चात्षड्गुणितांशादिरथूलक्रांतिर्भवति ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	को.
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	३	३	३	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	अंशार्ध क्रान्तिः
२४	४८	१२	३५	५७	१८	३७	५५	१२	२६	३८	४७	५४	५८	०	५८	५४	४७	३८	२६	१२	५५	३७	१८	५७	३५	१२	४८	२४	०	
२५	३२	१२	१३	२०	१८	५६	५३	७	१५	७	३४	२६	३६	०	३६	२६	३४	७	१५	७	५३	५६	१८	२०	१३	१२	३२	२५	०	

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
१	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२९	४	३०	५०	७	२२	३५	४३	५६	४	११	१८	२३	२८	३१	३४	३६	३७	३७	३८	३८	३८

भानुभाज्यं च दशभे निशिचन्द्रोदयो भवेत् । प्रतिपत्पूर्णिमासन्धौ विधुग्रहणमादिशेत् ॥ १ ॥
मासाभिधाननक्षत्रात्षोडशक्षेपया रविः । दिवामाप्रतिपत्सन्धौ सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥ २ ॥
पञ्चसु सर्वग्रहण सप्तसु पादोनितं भवत्यर्द्धं । एकादशेचतुर्थांशनास्तिग्रहणं चतुर्दशेभागे ॥ ३ ॥
राहुचन्द्रमसोर्मानं योगार्द्धं शर वर्जितम् । ग्रासचन्द्रस्यतस्यार्द्धं त्रिघ्नंविंशोपकारमृताः ॥ ४ ॥

५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	००	नक्षत्रभोग
११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	०	चन्द्रबिम्ब
३४	२२	१०	५९	४८	३७	२७	१७	१७	५८	४८	०	
२९	२८	२८	२७	२७	२६	२५	२५	२४	२४	२४	०	पातबिम्ब
३४	५४	१६	३८	२	२७	१३	२०	४९	१८	४८	०	
९७	९४	९२	९१	९०	८७	८४	८२	८०	७८	७७		बिम्ब चन्द्र भुक्तिः

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	संक्रान्तयः
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	बिम्ब
४३	३५	२७	२६	३३	४४	५७	८	१४	१५	८	५८	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पातबिम्ब
२२	३१	३७	३७	३१	२२	१४	५	१	०	५	१३	
५८	५७	५६	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६१	६०	५९	रविभुक्ति
४५	४२	५८	५७	३३	३४	४२	५२	१८	२२	१५	१८	कलादिः

नक्षत्रस्यगतैष्य घटिकैक्य भोगतद्वशात् चन्द्रबिम्बं च तत्र पात बिम्बं संक्रान्तिवशात्सैकेन योज्यं चन्द्रबिम्बं पातबिम्बं कलादिना हीनमंगुलादिग्रासो भवति। ग्रासो विंशति गुणितः चन्द्रबिम्ब भक्तो विंशोपकास्यु इति चन्द्रग्रहणम्। अथ संक्रान्तिः प्रत्यशः सायनांश ग्रह भुक्तांश सम्मितकोष्टकस्था क्रान्ति सानुगतात् ग्राह्या ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	०	०	०
२४	४२	१३	३७	२	२३	५०	१४	३९	३	२७	५१	१५	३८	२	२३	४९	१३	३३	५९	२२	४५	८	३१	५३	१६	३८	०	०	०
३५	५०	१५	४०	५	३०	४२	५४	४	८	१०	१२	०	४७	२३	७	४६	१४	३५	३५	४६	३७	२८	१८	३९	००	१९	०	०	०

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४३	४४	४५	४५
५४	४३	४०	३३	२४	१६	६	५६	४५	३४	४१	९	५५	४०	२५	९	५२	३५	१६	५७
८	७	४१	६	४२	१	५८	२३	४३	२	४९	५२	११	१६	२५	४७	५२	१९	५७	४५
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
४६	४७	४७	४८	४९	४९	५०	५०	५१	५१	५२	५२	५३	५३	५४	५५	५५	५५	५६	५६
३७	१६	५५	३२	८	४४	१९	५२	२५	५७	२८	५८	५७	५५	१२	४८	१३	५७	०	२२
४३	५०	५	२७	५६	३२	१३	५८	४८	४१	३८	३७	३५	४०	४३	४३	४९	१३	५३	५४
७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
५६	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०
४३	२	२२	४०	५७	०	२७	४१	५३	०	०	४०	०	४०	०	५१	५५	५७	०	०
५२	४८	४२	३३	२०	४०	४४	२०	५१	०	०	०	०	१७	०	१४	४	४८	०	०

अथ चन्द्र दर्शने कर्त्तव्यता कुहु घटी प्रतिपत्पर्यंत ६० क्षिप्तेदहर्मितं। रवीन्दुपातनाडिकातिरेकतः शशीदृश्यते ॥

अस्यार्थः अमावास्या घटी षष्ट्या प्रोह्य दिनेशान् संयोज्य सूर्य राहु घटी पंचाशदधिकास्तदा शशोदृश्यते।
मीनेमेषोदयेचन्द्रः प्रायः स्यादक्षिणोन्नतः। शेषेषुचोत्तरं शृंगं समता वृष कुम्भयोः विधुरः स्यात्समेचेंदुर्दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ॥ १ ॥

॥ रव्यादीनां सप्तदिनगतयः राश्यादिः ॥

सू.	चं.	मं.	बुके.	बृ.	शुके.	श.	रा.	चंद्र.	बुउ.
०	३	०	११	०	११	०	०	०	०
६	२	३	८	०	२५	०	०	०	२८
५३	१४	४०	१५	३४	४१	१४	२२	४३	३८
५७	४	५	१०	५४	३	२	१५	४३	४३
११	२३	१७	४३	१	५	४०	१४	४६	२५
०	०	०	०	०	५१	०	०	०	०

ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	क्र.	ध.	क्र.
१२	४३	१८	१६	४०	५१	१४	२४	३४	०
४६	२६	२	५०	१०	५२	०	५७	४६	०
२७	२४	३५	३०	३३	४२	२७	५६	४८	०
३०	०	३७	०	१६	०	२२	५५	५६	०

॥ चन्द्र दर्शन सारिणी ॥

०	०	१	रा२	रा३	रा४	रा५	रा६	रा७	रा८	रा९	रा१०	रा११	रा१२	रा१३
मे.	१२.	४३	५४	५५	५२	५६	५५	५४	५३	५२	५५	५३	५२	
वृ.	२२.	४८	५१	५४	५८	५७	५७	५५	५३	५०	४६	४७	४७	
मि.	३२.	४४	४७	५६	५७	५६	६३	६३	६१	५६	५१	४६	४४	
क.	४२.	४८	४६	५३	६०	६४	७३	७७	७७	७२	६६	६२	५२	
सिं.	५२.	६४	५८	५६	६४	७१	८२	८६	६४	६३	८२	८२	७२	
क.	६२.	७६	६६	६५	६५	६६	७८	८८	६७	१०२	१००	६७	८६	
तु.	७२.	८४	७४	६६	६२	६४	६६	७५	८४	८२	६७	६७	६२	
वृ.	८२.	७८	७१	६३	५७	५४	५४	५७	६४	७३	७८	८२	६६	
ध.	९२.	६६	६३	५७	५२	४८	४५	४२	४८	५३	५६	६३	६६	
म.	१०२.	५८	५८	५६	५३	५०	४७	४६	४६	४८	५१	५४	५६	
कु.	११२.	५३	५६	५५	५४	५३	५२	५१	४६	५०	५१	५२	५३	
मी.	१२२.	५५	५३	५५	५६	५५	५५	५४	५६	५३	५३	५४	५४	

मार्गी

स्वा.	६	६	४०	चि.
वि.	६	२०	०	स्वा.
ज्ञु.	७	३	२०	वि.
ज्ये.	७	१६	४०	ज्ञु.
मू.	८	०	०	ज्ये.
पू.	८	१३	२०	मू.
उ.	८	२६	४०	पू.
श्र.	९	१०	०	उ.
ध.	९	२३	२०	श्र.
श.	१०	६	४०	ध.
पू.	१०	२०	००	श.
उ.	११	३	२०	पू.
रे.	११	१६	४०	पू.
रे.	१२	१०	०	उ.
आदि				अन्त

मार्गी

अ.	०	०	०	रे.	अथ भौमादीनां वक्रांशाः
भ.	०	१३	२०	अ.	मंगल १६४
कृ.	०	२६	४०	भ.	बुध १४४
रो.	१	१०	००	कृ.	बृहस्पति १२५
मृ.	१	२३	२०	रो.	शुक्र १६३
आ.	२	६	४०	मृ.	शनि ११५
पु.	२	२०	००	आ.	इमेघट्याधिकशतत्रये
पु.	३	३	२०	पु,	मध्ये पातित मार्गांशाः
श्ले.	३	१६	४०	पु,	मं० १९६ बु० २१६ बृ० २३० शु० २९७
म.	४	०	०	श्ले.	श० २४५ एतत्समये-
पू.	४	१३	२०	म.	शीघ्र केन्द्रे वक्रारम्भ मार्गारम्भः
उ.	४	२६	४०	पू.	भौमादीनां प्राच्योदयांशाः
ह.	५	१०	०	उ.	भौ० २८ गु० १४ श० १७ भौमादीनां पश्चा-
चि.	५	२३	२०	ह.	दस्तांशाः भौ० ३३२ गु० ३४६ श० ३४३

अतश्चन्यूनाधिकत्वे अनुपातो विधेयः ॥

सूर्यगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	१२	१३	१४	१५	१६
५९	४८	४७	४७	४६	४५
८	४६	५४	२	१०	१८
१०	१२	२२	३२	४२	५२
१०	१५	२५	३६	४६	५६
२४	१४	३८	३	२७	५१
१२	४२	५५	७	२०	३२
३०	३०	०	३१	१	३१
४	५२	५६	०	४	८

चन्द्रगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	५	६	६	७	७
१३	२१	४	१७	०	१३
१०	१७	२८	३८	४९	५९
३४	३३	८	४३	१७	५२
५२	१६	८	०	५३	४५
३	४९	५३	५७	१	४
४९	३८	२७	१७	६	५५
८	४४	५२	०	८	१६
२	२९	३१	३४	३६	३८
१६	२८	४४	०	१६	३२

चन्द्रोच्चगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	१	१
६	२६	३३	४०	४६	५३
४०	५२	३३	१४	५५	३६
५८	४३	४१	४०	३६	३८
४२	१२	५५	३७	२०	२
३१	४४	१५	४६	१७	४८
६	१८	२४	३०	३६	४२
०	४	४	५	५	५
२०	२०	४०	०	२०	४०

चन्द्रपातगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
३	४१	४४	४७	५०	५४
२०	१६	३०	४१	५१	२
४४	४१	२६	१	५५	४०
४३	२१	४	४७	३०	१३
१०	१०	२१	३१	४२	५२
४	५७	१	६	३	७
२४	१३	३७	१	२५	४६
५	५	१०	१५	२०	२५

भौमगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	६	७	७	८	८
३१	४८	२०	५१	२३	५४
२६	४४	१०	३७	३	२६
२८	६	३४	२	३०	५६
११	२४	२६	४७	५८	६
८	५६	५	१४	२३	३२
५६	१४	११	७	४	०
३१	४८	२०	५१	२२	५४
२६	३८	४	३०	५६	२२

बुधशीघ्रोच्चगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	१	१	१
४	५३	५७	१	५	६
५	१२	१७	२३	२८	३४
३२	०	३२	५	३७	६
२०	२६	४६	१०	३१	५१
४१	४	४५	२७	६	५१
५१	६	५७	४६	४०	३१
१६	३३	४६	६	२२	३६
२५	३२	५७	२३	४८	१४
३३	६	४२	१५	४८	२१

गुरुगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	१	१
४	४	६	१४	१६	२४
५६	४८	४८	४७	४६	४५
८	५४	३	१२	२०	२६
४८	३१	२०	८	५७	४६
३५	४५	२१	५६	३२	८
४७	१६	६	५४	४१	२६
३७	७	४४	२२	५६	३६
२८	४	३२	०	२८	५६

शुक्रशीघ्रोच्चगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
१	२०	२२	२४	२५	२७
३६	४६	२५	१	३८	१४
७	४०	४८	५५	३	११
४३	१७	०	४४	२७	११
३७	४	४१	१६	५६	३३
१६	३६	५६	१३	३०	४६
५२	२७	२०	१३	६	५६
५४	५२	४६	४०	३६	३१
४७	११	५८	४५	३२	१६

शनिगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
२	२६	२८	३०	३२	३४
०	४	५	५	६	६
२२	५७	२०	४३	६	२६
५३	३४	२८	२१	१४	८
२५	३५	०	२६	५२	१८
४६	६	५३	४०	२६	१३
४०	५०	३१	१२	५२	३३
४८	२४	१२	०	४८	३६

बुधशुक्रयोः प्रतीच्यामुदयांशाः बु० ५० शु० २४ प्रतीच्यामस्तांशाः बु० १५५ शु० १७७ प्राच्यामुदयांशाः बु० २०५ शु० १८३ प्राच्यामस्तांशाः बु० ३१० ॥

सूर्यादि ग्रहों की गतियाँ राश्यादिक दश अवयवों तक दे दिया गया है तथा इनका १३, १४, १५, १६ और १७ वाँ घात भी दे दिया गया है। ऐसा आचार्य ने गणित की सुविधा के लिए कर दिया है।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.
०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	६	६	७	७	७
१	१२	४	२१	७	१८	१०	१६	२१	६	१६	२६	२४	४	१	३	१५	२१
३६	२६	१८	५६	११	१६	१६	०	२८	०	११	४४	५४	५४	५४	४६	४४	२१
३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	६	१०	१०	१०
१४	२४	६	१६	२	१३	३	१४	१६	१४	१७	६	१६	१६	१८	१	८	२६
३६	४८	४	३६	१७	४८	१८	४५	४८	४८	१६	१५	५४	१२	१८	३०	०	०
६	६	६	७	७	८	६	६	६	१०	११	११	११	११	०	१	१	१
१२	२६	१०	१६	२७	६	७	१६	२४	६	३	१४	१२	२०	१०	२	१६	१६
५८	१७	३०	५०	२०	१६	२०	०	१२	०	११	५६	४४	४८	२२	१८	२४	२४

मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	११
६	१८	२३	२१	२२	२८	२०	१८	२६	१७
५८	२६	३०	२	१२	२	३७	५०	५०	४५
११	११	०	१	२	२	२	३	३	३
२३	२३	१७	०	४	१०	२०	३	३	३
३	२४	१८	०	५७	२६	२	५४	५४	५४
१	२	२	३	३	४	४	५	५	५
२६	११	१७	१८	१६	२	१६	६	१८	२६
२	१	५	३३	४६	१२	४६	३०	४१	५०

ह.	ब्र.	आ.	व.	आ.
०	४	४	५	०
२४	१२	१२	२७	६
४५	३०	३०	४५	६
०	४	४	५	०
२४	१२	१२	२७	६
४५	३०	३०	४५	६
७	८	१	७	६
२७	१६	१	३	२२
६	२४	१	१२	५४

(३६६) २ ३ ३६ लग्नम् ।
११ ६ ३६ मध्यलग्नम् ।
८ ३ ३६ अस्तलग्नम् ।

॥ चरणगत नक्षत्राणि ॥

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ऽनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	
०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	प्रथम
०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	६	१०	२३	६	२०	३	१६	चरण
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	
०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	११	११	द्वितीय
३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	७ ४३ २३	१३	२६	१०	२३	६	२०	चरण
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	३०	२०	४०	०	२०	४०	०	
०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	तृतीय
६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	८ ४३	१६	०	१३	२६	१०	२३	चरण
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४५	४०	०	२०	४०	०	२०		
०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	चतुर्थ
१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	९ ५० ७	२०	३	१६	०	१३	२६	चरण
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	३०	०	२०	४०	०	२०	४०	

॥ उन्नतांशाद्वादशांगुलशंकु छाया ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	४
१८७	३४३	२२८	२७१	१३३	११४	९७	८५	७५	६८	६१	५६	५१	४८	४४	४
२५	२६	५७	२६	१०	२६	४३	२३	४५	३	४४	२७	५८	७	४७	
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	४
४१	३९	३६	३४	३२	३१	२९	२८	२६	२५	२४	२३	२२	२१	१०	४
५०	१५	५५	५१	५८	१५	४२	१६	५७	४४	३६	३३	३४	३८	४७	
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४
१९	१९	१८	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	१२	४
५८	२२	२८	४७	८	३१	५५	२१	४९	१८	४८	१९	५२	२५	०	
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	४
११	११	१०	१०	१०	९	९	९	८	८	८	७	७	७	७	४
३५	११	४९	२५	४	४३	२२	२	४३	२४	५	४७	२९	१२	५५	
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	४
६	६	६	४	५	५	५	४	४	४	४	३	३	३	३	४
३९	२२	६	४१	३५	२०	५	५०	३६	२२	७	५३	४०	२६	१२	
७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	४
२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	४
५९	४६	३३	१९	७	५४	४१	२८	१५	१०	५०	३७	२५	१२	०	

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	को.
१७३	१७६	१७८	१७९	१७९	१७९	१७९	१७९	१७९	१७९	१७९	१७७	१७५	१७२	१६८	१६३	१५७	उन्न-
३४	६	०	०	३३	३५	५२	५१	४२	२४	३०	१५	९	०	१२	१८	४०	तांश
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	को.
१५२	१४४	१३७	१३१	१२५	१२०	११७	११५	११६	११८	१२२	२७	३३	४०	४७	५४	६०	६५	१००	उन्न-
४८	२४	४२	३	१९	४५	१४	१८	२१	४०	२७	४८	५१	३०	२७	४	१२	३६	६	तांश

॥ नतघटी लम्बनम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
०	१	१	२	२	३	३	३	३	३	४	३	३	३	३	३	३
४२	२४	५९	३१	५६	१४	३४	४६	५४	५८	०	५९	५५	४९	४१	२८	१०

दर्शान्तनतनाडीभ्योलंबनं ग्राह्यं सार्द्धघटीद्वयाधिक नतशीघ्रभागसंस्कृत यथागत सूर्यांशकादुन्नतिग्राह्या लंबनमुन्नतिघ्नमशीत्यधिकशत १८० भक्तं स्फुटं स्यात् । तद्दर्शांतप्राङ्नते ऋणं पश्चान्नते धनं लम्बनसंस्कृतम् पर्वान्तस्फुटं स्यात् सार्द्धम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
२८१	२९२	३०२	३१२	३२७	३३७	३३१	३३३	३३९	३२९	३२४	३१७	३०८	२९८	२८७	२७५	२६८	२५७
०	३०	५७	४३	०	३६	४४	३९	९	५१	४५	२५	४५	३०	२१	५०	१८	५७

१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
२४३	२३२	२२४	२१६	२११	२०६	२०३	२०२	२०२	२०५	२०८	२१३	२१९	२२७	२३६	२४७	२५७	२६९
१७	३०	३	३३	३९	३६	२४	१२	३८	४२	३	१५	४०	९	४८	०	५७	२७

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
३९	१६	२६	४०	४९	५७	४	१०	१६	२१	२५	२९	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४४	४५	४५	४५

१०	१०	१०	६	४	४	६	१०	१०	१०
१६	१७	१८	१९	२०	३४	३५	०	१	२
५३१	३३७	१९६	६४	०	०	४६	१९९	१६७	५३१
४५	०	०	९८	०	०	९८	०	०	४५

घटी द्वयाधिक स्फुटपर्वान्तं नतं कुर्यात् रसघ्ननतभाग संस्कृत सूर्यांशा दशकात्सैकादवनितग्राह्या स्फुटचन्द्रभुक्ति त्रयोदशांशः स्यात् । स्फुटार्कगत्या (२१२२) सहयोगस्तस्य मानसंज्ञाः यथागत पर्वांत कालीन सूर्यस्त्रयोदशलंबन घटिकाभिः संस्कृतः सवदा राहुणैवहीनः कार्यः तदंशकाद्विक्षेपो ग्राह्यः विक्षेपावनत्योः सदतरं स्फुट शरः,शर माने प्राप्य ग्रासः स्यात् ग्रासो दशघ्नो रविभुक्तिः ॥

॥ रविसौरभम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
०	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
५०	३०	५७	२७	२९	३७	४७	५४	३	११	१९	२६	३२	३७	४३	४९	५४	५९

१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	८	११	१४	१७	२१	२५	२७	२९	३१	३१	३३	३५	३७	३८	३९	४०	४०

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	स्पष्ट
२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५९	५७	५५	५२	५०	४८	४६	४५	४३	४२	४०	३९	४८	३८	३८	३८	३८	सूर्य
१४	३८	४८	४६	३५	१२	२९	४२	२५	४३	३४	२०	१	४३	२६	३	५४	४६	४५	५१	७	३३	१०	५८	५८	१३	३९	२०	१५	२३	

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	० को.
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५९	५७	५८	५९	स्पष्ट
३८	३९	४०	४१	४२	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	००	२	५	७	९	११	१३	१५	१६	१७	१९	२०	२७	२१	२१	२१	२१	सूर्य
४६	२३	४२	१४	२९	३०	३१	३८	२४	१७	२६	४०	५८	४	१७	३४	५७	६	१४	१५	९	३	३७	५०	२	२	४७	३१	४२	४५	३७	

ग्रासः स्याद्राहुसूर्यान्तरलवगुणिता पञ्च षष्टि ६५ र्विशुद्धा राह्वोर्दूरेर्ककेत्वोदललवगुणिता चन्द्रभुक्तिः स्फुटा याः ।
ग्रासोवाणाग्निनिघ्नः स्फुटशशिगतिहृविंशकास्युर्ग्रहस्य स्थित्यर्द्धं तेन हीनान्विततिथिघटिकाः स्पर्शमोक्षौ भवेताम् ॥

चन्द्र सूर्य ग्रहणे विंशोपकेभ्यस्थित्यर्द्धं—

ग्रासोभाद्वह्नयः प्रोक्तं खाश्विविंशोपकाधिकं ॥ निमीलोन्मीलनकेत्वो.....

॥ चन्द्रसौरभम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
०	४४	४९	४४	३९	३४	३०	२६	२२	१९	१६	१३	११	१०	९	९	९	१०	११	१३	१६	१९	२२	२६	३०	३४	३९	४४	४९	४४	फ
०	४१	२६	२४	२२	४०	१८	८	२५	७	१५	५२	१९	३१	४९	३२	४०	३०	४९	५०	१५	१०	२५	०	१४	३०	२२	२४	३०	४१	ल म्
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
०	०	०	०	१	१	२	३	४	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२५	२३	२३	भु
०	९	२८	४७	१८	४७	२८	११	५	५९	५८	५	८	२४	३४	४६	५०	८	२३	२८	३४	३३	२७	२१	४	४५	१४	४५	१४	१७	क्ति:
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
५	१०	१५	२०	२५	२९	३३	३७	४०	४३	४६	४८	४९	५०	५०	५०	५०	४८	४६	४३	४१	३९	३७	३४	२९	२५	२०	१५	१०	५	फलम्
०	२१	३०	३६	३८	२०	४४	५१	५१	५३	१५	२०	१	२२	११	२०	११	२	१	२०	४६	५३	३४	०	४६	२०	४०	३५	३४	२१	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
२३	२३	२३	२२	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१२	११	१०	९	८	७	५	४	४	४	३	२	१	१	०	०	०	भु
२३	१७	१४	४५	१४	४५	४	२१	१७	३३	३४	२८	२३	८	१७	४६	३४	२४	८	४	१८	५९	५९	५	११	३८	४७	१८	४७	२८	१०	क्ति:

॥ भौमसौरभम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
३९	३८	३७	३७	३७	३७	३७	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३७	वल्ली
१९	७	५६	४४	३२	२१	९	५९	४६	३५	२५	१४	४	५४	४४	३५	२७	१९	१२	६	१	५९	५९	०	६	१७	३४	०	३७	२४	फल.
३७	४४	०	१४	३३	५७	३१	७	५५	५३	६	३०	१२	१२	४४	३५	७	१९	३३	३१	५५	२	२१	२५	१८	४	३७	५६	२५	४३	
२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	उप	
०	४४	३७	२७	१६	६	५७	४७	४९	३१	२५	१९	१३	९	६	५	४	५	७	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५३	७	२०	३२	४६	कंद.
०	४२	५४	३९	३५	३५	५	५९	३५	५५	१	१	५७	५९	५९	१२	३८	२०	१८	३५	९	१	९	२७	५४	२४	४८	२	५५	१८	फल.
८	८	८	७	७	६	६	६	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	सुव.	
४७	२३	०	३६	१२	४९	२५	२	३९	१७	५४	३२	१०	४९	२९	८	५०	३१	१५	५९	४५	३३	२४	१८	१७	२१	३३	५४	३०	२२	फल.
४६	४०	०	२०	४४	१३	५२	४१	४७	२०	३६	३२	५७	४५	१०	१६	१४	५५	०	२४	४२	३७	३५	४९	३२	३६	३२	५४	०	३७	

॥ भौमसौरभम् ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
३८	३९	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४०	४०	४०	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३९	३९	३८	३७	३८	
१९	१४	१	३८	१०	२२	३२	३८	४०	४०	१७	३२	२६	१९	१७	३	५४	४४	३५	२४	१४	३	५२	४१	२९	१८	६	५५	४३	३१	वल्ली
३७	२८	४९	१८	३७	१०	५६	४९	५६	२२	१९	३३	५१	५३	७	३९	३०	५९	२	४१	८	२१	१९	७	४३	१७	४१	०	१५	७	
२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	उप
०	१३	२७	३२	५२	३	१४	२३	३३	३८	४४	४९	५२	५४	५५	५४	५३	५०	४३	४०	३४	२८	२०	१२	०	५३	४३	३२	२२	११	कंद.
०	४३	५	५८	१२	२६	६	३३	५१	५९	५४	२५	४२	४०	२२	४८	१	५	३	४४	५८	५	५५	११	५८	२५	२	५५	८	९	फल.
४	६	८	९	११	१२	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	९	९	सु
३५	१०	०	४२	२४	३७	३०	५	२६	३८	४२	४१	३५	३३	१४	०	४५	२८	९	५०	३०	१०	४३	२७	५	४३	२०	५७	३४	१०	वल्ली
३५	१८	०	४२	२५	२३	०	६	३८	३४	३२	११	२५	१३	२८	३१	०	५	४३	४४	५०	१५	३	२८	२४	०	२३	३९	८	४७	फलम्

॥ बुध सौरभम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
२३	२३	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	व.
१९	११	३	५५	४७	३९	३२	२४	१७	१०	४	५८	५२	४७	४२	३६	३५	३३	३२	३१	३२	३५	३९	४५	५३	३	१५	२९	४५	२	फ.
२४	२७	१६	१३	२५	४४	७	४४	३६	४५	४७	८	२५	१४	४३	५८	२	१५	०	५४	४	४२	५४	४६	५४	५२	५८	४१	१४	५८	
२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	उप
०	५५	५०	४३	४१	३७	३३	३०	२७	२४	२१	१९	१७	१६	१५	१५	१५	१६	१६	१८	२०	२२	२५	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५४	कंद
०	१५	३३	६	४७	४२	५३	०	८	१४	४५	४५	५३	४०	०	२६	३०	०	१८	२६	०	३८	२६	३७	११	९	२५	०	५०	५१	फलम्
८	८	८	७	७	७	६	६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	६	सु
३२	१६	०	४३	२७	११	५६	४०	२५	१०	४६	४२	२९	१७	६	५३	४६	३९	३१	२७	२५	२५	२७	३२	४०	५३	८	२८	५२	२०	वल्ली
१७	१०	०	५०	४३	३७	६	४०	२५	४०	२३	४२	४५	२८	२	०	३७	०	११	४२	१३	०	२६	३३	५९	४	४९	५५	४७	३०	फलम्

॥ बुध सौरभम् ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२३	२३	वल्ली
१९	३६	५३	९	२१	३४	४४	२२	५८	३	५	६	६	५	३	५९	५६	५१	४४	४०	३४	१६	२१	१४	४१	५९	५१	४३	३५	२७	
२४	५०	३४	७	०	५६	५४	२२	५४	६	४४	५४	४८	३	४३	५	४५	३२	३३	४०	३१	३	१२	४	४१	४	२५	३५	३२	५९	फलम्
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	उप
०	५	१०	१५	१९	२३	२७	३१	३४	३७	३९	४१	४३	४४	४४	४४	४४	४३	४२	४०	३८	३५	३२	३०	२६	२२	१८	१३	९	४	कंद
०	९	१०	०	३५	५१	४९	२३	३४	२२	४०	३४	१	१	२०	३४	१०	२०	३	२५	१५	४५	५२.	०	७	३८	१३	५४	२४	४५	फल.
६	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	८	सुव
५१	२५	०	३४	८	३९	७	३१	५१	६	१९	२७	३२	३५	३४	३२	२८	२०	१३	४	५३	४३	३०	१७	३	४९	३४	१९	३	४८	ल्ली
४०	८	०	५२	२०	३६	१३	५	५	५६	१	२४	४०	०	४७	१८	४५	५३	२३	२०	४८	३२	१५	२८	२७	२०	३५	२०	५७	२३	फलम्

॥ गुरु सौरभम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
३१	३१	३१	३१	३१	३१	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	वल्ली
२६	२२	१७	१२	७	२	५८	५४	४९	४५	४२	३८	३५	३३	३१	३०	२९	२८	२९	३०	३२	३४	३८	४२	४७	५२	५८	५	१२	१९	फलम्
३४	४३	१९	०	१३	३१	९	९	३३	३६	०	४४	५३	२७	३३	४	१३	५८	२३	३१	२१	३८	१९	२४	१४	४१	४४	१८	१३	१	
२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	उप
०	५४	४९	४४	३९	३५	३०	२६	२३	१९	१६	१४	२२	१०	९	९	९	९	१०	१२	१४	१७	२०	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५४	कंद
०	४७	३८	३९	३७	९	३६	४३	०	३८	४२	११	०	३६	३६	४	७	४४	१०	३०	४७	३०	४४	२८	३६	९	४	१५	४०	१७	फलम्
८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	सु
१९	९	०	५०	४०	३०	२१	११	२	५४	४५	३८	३०	२४	१८	१३	९	७	५	४	५	७	११	१६	२३	३१	४१	५२	४	१७	वल्ली
३०	४२	०	१८	३०	४९	१७	५७	५४	९	५२	४	५२	२०	३७	४५	५२	१	१७	४८	३८	५३	३३	४७	३०	२१	२०	३४	२१	२७	फलम्

॥ गुरु सौरभम् ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	वल्ली
३६	३३	४०	४६	५४	०	५	१०	१४	१८	२०	२२	२३	२४	२३	२३	२१	१९	१७	१४	११	७	३	५८	५५	५०	४५	४१	३५	३१	फलेम्
३४	४७	४५	५०	२४	२७	५४	४४	४८	१०	४७	३७	४१	१०	५४	४	३८	४१	५	२४	२८	३२	१८	५९	७	५६	५०	८	४८	२५	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	उप
०	५	११	१६	२१	३६	३३	३५	४९	४२	४५	४७	४९	५०	५०	५०	५०	४९	४८	४५	४३	४०	३७	३३	२९	२४	२०	११	१०	५	कंद
०	४३	४६	४५	१६	५१	४४	३१	१६	३०	१३	१०	१०	१६	५३	५६	४५	२४	०	४९	१८	२२	०	१७	३४	५१	२४	२३	२२	१३	फलम्
७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	सु
३१	४५	०	१४	२८	४२	५५	७	१८	२८	३६	४३	४८	५२	५४	५५	५४	५०	५०	४६	४१	३५	२९	२१	१४	५	५७	४८	४८	२९	वल्ली
१७	३४	०	२६	४३	४३	३९	४६	४०	१९	३०	१७	७	७	२२	१२	३३	५९	८	१५	४३	४०	८	२६	८	५०	६	५	४३	११	फलम्

॥ शुक्र सौरभम् ॥

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
को.																														
वल्ली	४३	४६	४६	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४४	४४	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४४	५५
फलम्	३१	१८	६	५३	३१	२८	१६	४	५१	३९	२७	१६	४	५३	४१	३२	२२	१३	३	५५	४९	४३	४०	३९	४०	५०	५	३१	४३	१४
	२८	५१	१४	३८	१०	४१	२०	०	२८	४७	५२	१३	४८	३८	४६	१२	१८	३८	५८	५७	१२	५१	२१	२९	१७	१७	३२	४०	२७	४१
उप	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कंद	०	५८	५६	५४	५२	५०	४९	४८	४७	४५	४४	४३	४३	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४४	४५	४६	४७	४९	५०	५२	५४	५४	५८
फलम्	०	४	१०	२०	३६	५८	४८	४	४९	४६	४८	५९	२०	५६	३६	३०	३४	४९	१२	४७	३३	३२	३३	४८	१२	४४	२३	१०	१०	०
सु	८	८	८	७	७	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	२
वल्ली	२५	२५	०	३४	९	४४	१८	५४	२९	५	४०	१६	५२	४९	६	४४	२२	१	४१	२२	४	४८	३५	२४	१७	१६	२१	३७	३७	०
फलम्	२८	२५	०	४५	३२	२१	२३	३६	४४	४	४१	३८	४३	३०	३९	११	३६	२८	३९	२०	५९	५७	२८	४६	४५	२	२७	१९	१९	२३

। शुक्र सौरभम् ॥

	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
को.																														
पल्ली	४६	४७	४८	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४८	४८	४७	४७	४७	४७	४७	४६	४६
फलम्	३१	४८	४६	३१	५७	१२	२०	२३	२२	१९	१३	६	५८	५०	४०	३०	२०	९	५८	४६	३५	२३	११	५८	४६	३४	२१	९	५६	४४
	२८	१५	२९	१६	२१	४८	३९	२७	३५	५	४४	५९	५८	१८	३८	४४	१०	१८	८	४३	४	९	८	५६	३६	१५	४६	१८	४२	५
उप	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
कन्द	०	२	३	५	७	९	१०	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१५	१४	१३	११	१०	९	७	५	३	१
फलम्	०	०	५८	५०	३७	१६	८	१२	३७	२८	२७	१३	४८	१२	२६	३०	२३	४	३९	६	१३	१५	११	५४	३२	२	२४	४०	५९	५६
सु	३	५	८	१०	१२	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	१०	१०	१०	९	९
बल्ली	२७	२६	०	३३	३६	५९	५१	२२	३८	४३	४२	३५	२४	११	५५	३७	१८	५८	३७	१५	५३	३०	७	४३	१९	५४	३०	५	४०	१५
फलम्	५७	२७	०	३३	३	३७	५३	४१	२३	५८	१५	२४	३२	३	१	३९	२१	३२	२४	४९	२१	३०	१३	२२	१९	५६	१६	३४	३७	३९

॥ शनि सौरभम ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	को.
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	३०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	बल्ली
३३	३०	२७	२५	२२	१९	१६	१४	११	९	७	६	४	३	२	२	१	१	२	३	४	६	८	१०	१३	१६	१९	२३	२६	३०	फलम्
४५	५५	५४	५	११	२८	४८	४८	५२	४६	४९	७	३९	३९	२८	५	५४	५४	३६	३२	४७	४७	२७	५०	३०	२६	३०	००	३१	७	
२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	उप
०	५२	४४	३७	३०	२३	१७	१०	५	०	५५	५१	४८	४३	४४	४३	४३	४४	४५	४८	५१	५५	०	५	१२	१८	२६	३४	४२	५१	कन्द
०	२१	३९	२७	३५	२८	०	५६	२१	१७	४७	५३	४०	८	२५	२९	२०	४	४४	२०	२८	२८	१८	५२	६	१९	२६	२१	११	५४	फलम्
८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	सु
४१	५	०	५४	४८	४२	३६	३१	२६	२१	१६	१२	८	४	१	५९	५७	५६	५६	५६	५७	५९	२	५	९	१४	१९	२५	३१	३८	बल्ली
४२	४१	०	१४	१८	३१	५२	२२	६	६	२३	६	९	४३	३८	२७	४५	४०	१८	३८	४२	३३	५	२५	२५	९	२९	२२	४५	२९	फलम्

॥ इति शने सौरभम् ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	वल्ली
३३	३७	२१	४४	४७	५१	५४	५६	५९	१	२	३	४	५	५	५	४	४	२	१	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४५	४२	३९	३६	फलम्
४५	२७	०	३०	०	४	०	४०	३	३	४३	५८	५८	२६	३३	२५	५२	१	५१	२३	३९	४४	३३	५२	४२	४	१९	२५	३६	३५	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	उप
०	८	१७	२५	३३	४१	४७	५४	५९	४	८	११	१४	१५	१६	१६	१५	१३	११	८	४	५९	५४	४९	४३	३६	२९	२२	१५	७	कन्द
०	४६	१९	३९	३४	१	५४	४८	४२	३२	३०	५९	२०	५६	३९	३२	२५	५२	२०	७	१३	४३	३९	४	०	३२	४५	३३	११	४१	फलम्
७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	सु
४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३४	४०	४५	५०	५४	५७	०	२	३	३	३	२	०	५८	५४	५१	४७	४३	३८	३३	२८	२३	१७	वल्ली
३२	४२	०	१५	२८	३१	१५	३८	३१	५१	३५	३५	५७	२७	१८	२२	४२	२०	१५	३२	१२	१७	१२	५७	३७	५४	५०	३८	८	२९	फलम्

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ जीर्णपञ्चाङ्गात् नूतनपञ्चाङ्गोत्पत्तिः ॥

गणाधीशं नमस्कृत्य जीर्णपत्राद्धिनूतने । पञ्चांगे सुगमोपायो नीलकण्ठेन कथ्यते ॥ १ ॥
धृत्याख्या १८ नवभूमयो युगमिता १९१९१९१९ नागेन्दवो १८ त्यष्टयः १७
षट्वारं धृतयो १८१८१८१८१८१८ घटी-ष्वथपलेष्वर्थाग्नयः ३८ खेन्दवः १० ॥

द्विर्भूरामभिता ३१३१ स्त्रयः ३ कृतसमुद्रा ४२ स्त्रीषवो ५३ र्थाश्विना २५
द्वीरूद्रा ११११ धृतयो १८ नवत्रि ३९ मनवः १४ साब्धि ४ स्तिथिद्युसभूः ॥ २ ॥

अथनक्षत्रानयनम्—

आदौद्वावर्क १२१२ संख्यावथनवसुयुतास्त्रींदवो १३१३१३१३१३१३१३१३१३ त्यत्रिकेर्का १२१२१२
नाडीषष्ट्याब्धयः ४८ सायकविशिख ५५ मिताद्यौ २ चतुर्ग्रहाश्च ९९९९
त्रिवारं षोडशैवं १६१६१६ नव ९ शरमरुतो ५५ ष्टाब्धयश्चद्विवारं ४८४८
योध्यो भानांपलेष्वित्यवधिमनुमिता भेत्रयो ३ वासरे भूः १।३ ।

अथयोगानयनम्—

आद्यंतषट्केमनवोरिणंस्युर्मध्यत्रिकेवैतिथिविश्ववविश्वे
१४।१४।१४।१४।१४।१४।१५।१३।१३।१४।१४।१४।१४।१४।१४
द्वौ २ द्वौ २ षड् ६ छौ ८ दश १० नाग ८ षट्का ६ वेद ४ द्वि २ वेद ४ त्वं ६ हि ८ दि १० गजाः ८ ॥४॥
योगेद्यौ २ वासरे भू १ धनमथ सहिता पूर्वनाडीभिरग्रया
ह्रासेवृद्धौतु पूर्वं दिनमपि सकलंत्याज्यमन्यत्पुरावत् ॥
भेराशौसंक्रमेर्के भव ११ कुतिथि १५ कुरामा ३१ तिथौ वासराद्ये
योज्या यत्रास्तिवर्षे मलिन इति तदा कार्यमेत्तत्तुराधात् ॥
इतिजीर्णपञ्चाङ्गान्नूतनपञ्चाङ्गकरणम् ॥
नक्षत्र संक्रान्ति क्षेपकः तिथि ११ वारादि ११५।३१
पूर्वसंक्रान्ति नक्षत्रात्परसंक्रान्तिभं यदि । द्वित्रि संख्यं समर्घं स्यात्तुर्यं पञ्चमहर्घता ॥
षष्टेलोकाग्रमंत्याशुगृहीत्वा खर्परं करे । एवं संक्रमणार्कस्यफलंप्रोक्तं मनीषिभिः ॥ १ ॥

अथद्वितीयप्रकारः—तिथ्यादिसाधनप्रकारः—तपस्यासितद्वादशीतःक्रमेण क्षिपेद्वेदसंख्यातिथौतत् घटीषु ।
सपादशौतांशुनाडिवारेतथैकंत्रयंभेधनंनाडिकासु ॥
सपादत्रिभूनाडिकाश्चाथयोगे विधुंतत्घटीष्वष्टवेदान् ॥

अस्यतिथिध्रुवः ४।१।१८।१५ नक्षत्र ध्रु ३।१।१३।१४ यो० ध्रु० १११।४७।१५ वारादिक्षेप तिथित्रटीषुधनम् नक्षत्रावधय नक्षत्र घटीषु धनं वारादि० ॥ योग धटीषुधनम् । योगावध० वारादि० ॥ इति मकरन्दस्यसारणीयं समाप्ता ॥

संवत् १९४१

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
१८	१९	१९	१९	१९	१८	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	०	०
४८	१०	३१	३१	४	४२	५३	२५	११	११	१८	३९	१४	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	०
४८	५५	२	९	९	९	६	६	१६	१६	९	५५	४८	४८	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	२४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
२	२	६	८	१०	८	६	४	४	४	६	८	१०	८	६
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

॥ इति श्रीमन्मकरन्दाचार्य विरचिता मकरन्दस्यसारणीयं समाप्ता ॥



॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ मकरन्दविवरणं

॥ सोदाहरणं प्रारभ्यते ॥

प्रज्ञां यतः प्राप्य कृतप्रतिज्ञं स्पर्द्धान्विधत्ते प्रसभं प्रतिज्ञम् ।
अज्ञोऽपि तं श्रीशिवनामधेयङ्गुरूपमं स्वीयगुरुंभजेऽहम् ॥ १ ॥

जिस गुरु से ज्ञान को प्राप्त कर अज्ञ भी हठात् विद्वज्जनों से कृतप्रतिज्ञ होकर स्पर्द्धा करता है बृहस्पति के समान उस शिवनामक अपने गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ या स्मरण करता हूँ ॥ १ ॥

अथाऽनवद्यामल पद्यपादैः श्रीमन्नृसिंहोत्थ दिवाकरेण ।
प्रकाश्यते सन्मकरन्दसूक्तिसरोजमानम्य गुरुं शिवाख्यम् ॥ २ ॥

अपने शिव नामक गुरु को प्रणाम कर अपने सुन्दर एवं निर्मल पद्यपादों से श्रीमान् नृसिंह दैवज्ञ सुत दिवाकर के द्वारा मकरन्द के सुन्दर उक्ति रूपी कमलों को प्रकाशित किया जाता है ॥ २ ॥

श्रीमच्छिवात्समधिगम्यवरप्रसादं वृत्तांशुभिर्विवरणाभिनवारविन्दम् ।
एतद्दिवाकरविकाशितमार्यवर्यभृङ्गाः पिबन्तु मकरन्दपिपासवो—ये ॥ ३ ॥

श्री शिव से वर का प्रसाद प्राप्त करके अपने वृत्तरूपी किरणों के द्वारा दिवाकर से विकाशित विवरण नामक अभिनव अरविन्द के मकरन्द का पान श्रेष्ठ पुरुष रूपी भ्रमर जन करें ॥ ३ ॥

पृष्ठस्थितासन्नशकोनितेष्ट शकावशेषप्रमकोष्ठकस्थम् ।
तिथ्यादिवारादिसवल्लिकन्तद्योज्यं समीपस्थशकस्य कन्दे ॥ ४ ॥
खरामा ३० हिचक्रन्तिथेस्सम्प्रदिष्टं भमृक्षस्य योगस्य भं २७ सप्त ७ वारे ।
खतर्का ६० हि चक्रन्तथा वल्लिकायास्तथा कन्दचक्रम्बियत्तर्क ६० भक्तम् ॥ ५ ॥

पीछे के आसन्न शकाब्द में इष्ट शब्द को घटा देने पर शेष सम्बन्धी तिथ्यादि वारादिवल्ली के साथ समीपस्थ कोष्टक के कन्द में जोड़ना चाहिए। तिथि का चक्र ३०, नक्षत्र और योग का २७, वार का ७ तथा वल्ली और कन्द का चक्र संख्या ६० विभाजित है ॥ ४, ५ ॥

नत्वा गजाननं देवं विश्वनाथः करोत्यसौ ।
उदाहरणमुद्दानम्मकरन्दस्य यत्नतः ॥ १ ॥

प्रज्ञां यतः प्राप्येति, अथानवद्यामिति, श्रीमच्छिवादिति, स्पष्टार्थानि पद्यानि उपरि लिखितानि ॥ अथ पञ्चाङ्गसाधनन्तत्रादौ तिथिसाधनम् । तत्रापि—अभीष्टवर्षादिजतिथिवारादिसाधनमाह । पृष्ठस्थितासन्नेति । इष्टशकमध्ये पुस्तकीयशकः शोध्यः । स यथा—पुस्तकीयशकपंक्ताविष्टशकासन्नो यो न्यूनः शको भवति स तावच्छोध्यो यावदग्रिमपुस्तकीयशकतुल्यो भवति तदनन्तरं द्वयोस्तुल्यशकयोर्मध्ये पुस्तकीयशकापेक्षया एकाधिको भूत्वा यदैकोऽग्रे गच्छति तदा स न शोध्यः । यस्तुल्यो जातः संशोध्यः ।

उदाहरणम्—

इष्टशकः १५५१ एतन्मध्ये १५४४ पुस्तकीयशकस्तावच्छोध्यः यावदग्रिमपुस्तकीयशकः १५६० तुल्यो भवति । तदनन्तरम्—इष्टशकः १५६१ मध्ये-अयं १५६० पुस्तकीयशकः शोध्यः यावदग्रिमपुस्तकीयशकः १५७६ तुल्यो भवति । एवमग्रेपि । ननु पुस्तकीये १५६० इष्टशकयोस्तुल्यतायमिष्टशकमध्ये १५६० पुस्तकीयशकः १५६० शुध्यत्येव । इत्थंसति पूर्वशकः १५४४ शोध्य इति किमर्थमुक्तमिति चेदुच्यते तत्र कारणम् । पुस्तकीयशकपंक्तौ एकमारभ्य षोडशशेषाणि सन्ति । इतिकारणात् शकद्वयतुल्यतायामयमेवशोध्य इत्युक्तम् । एवं कृतषोडशषेशाणि सन्ति । अतएव पुस्तकीयशकपंक्तौ परस्परषोडशान्तरं तिष्ठति यदि तुल्ययोः पुस्तकीयेष्टशकयोरन्तरंक्रियते तदा कापि क्षतिर्नास्ति । परन्तु एतावान् विशेषः । यदा पुस्तकीयशकादधःस्थतिथिवारादिकं स्थाप्यं तदधस्था वल्ली स्थाप्या द्वयोस्तुल्यशकयोरन्तरे शेषं शून्यमवशिष्यते तर्हि शेषपंक्तौ शून्यकोष्ठको नास्तिइतिकारणात् शकादधःस्थमेव वर्षादौ तिथ्यादिकं भवति । इदंपूर्वप्रकारेण सहतुल्यम् । तद्यथा :—

इष्टशकः १५६० एतन्मध्ये पुस्तकीयशके १५४४ शोधिते शेषं १६ पुस्तकीयशकादधःस्थंतिथ्यादिकं२७।५।२६।४५ वल्ली ५४।३६।३४ । शेषादधःस्थतिथ्यादिकं २७।६।६।१२ वल्ली ४।३०।१७ अनयोर्योगेजातंवर्षादौतिथ्यादिकं २४।४।३२।५७ वल्ली ० ६।५१ अथवा इष्टशकः १५६० एतन्मध्ये अयं पुस्तकीयशकः १५६० शुद्धः शेष० पुस्तकीयशकादधस्थतिथ्यादिकं २४।४।३२।५७ वल्ली ०।६।५१ शेषपंक्तौ शून्यकोष्ठकस्याभावाज्जातं वर्षादौ तिथ्यादिकंपूर्वतुल्यमेव । एवमिष्टशकमध्ये पुस्तकीयशकेशुद्धेयच्छेषं भवति तत्प्रमितकोष्ठकादधःस्थं तिथ्यादिकंस्थाप्यं वल्ली चस्थाप्या । एतन्मध्ये पुस्तकीयशकादधःस्थतिथ्यादिकंयोज्यं-वल्ल्यांवल्लीर्योज्या तद्यथा—तिथिस्थाने तिथिर्योज्या । वारस्थानेवारो योज्यः । घटीषु घटीयोज्या पलेषु पलानि । ततः पलस्थाने षष्टिभक्तेसति फलं घटीषु योज्यं घटीषु षष्टिभक्तासु फलं वारे योज्यं । वारेषु सप्ततष्टेषु शेषमभितोरव्यादि वारोज्ञेयः अत्र लब्धत्यागः । एवंवर्षादौ वारो भवति । अस्मिन्मकरन्दे सर्वत्र वर्तमानोवारोज्ञेयः । तिथिस्त्रिंशत्तष्टाशेषावर्षादौतिथिर्भवति । अस्यैवनामान्तरं शुद्धिः । वल्याऊर्ध्वाङ्कः षष्ट्याधिकं षष्टितष्टः शेषावर्षादौ वल्ली भवति । तदनन्तरं अग्रिमन्वारादौ देशान्तरसंस्कृतिः कार्या तद्यथा :—

रेखास्वदेशान्तरयोजनघ्नीगतिर्ग्रहस्याश्रगजैर्विभक्ता ।
लब्धाविलिप्ताः खचरेविधेयाः स्वर्णंपरेप्राक्षमयेविलोममिति ।

यानि देशान्तरयोजनानि रविमध्यंगत्या गुणितानि कार्या० । पञ्चादशीत्याभक्त्वालब्धपलानि

वारादिपलस्थाने रहित सहितानि कार्याणि यदाग्रहे ऋणानि तदा धनानि यदा धनानि तदा ऋणानि तिथिनक्षत्रयोगसंक्रान्तिमहानक्षत्रेषु ग्रहापेक्षया विपरीतमित्युक्तत्वात्।

उदाहरणम्—काश्यां देशान्तरयोजन ६४ ऋणानि सूर्यगत्या ५९।८ गुणितानि ३७८४ अशी–८० त्या भक्तानि लब्धपलानि ४७ ऋणानि देशान्तरस्य ऋणसंज्ञकत्वात्, तिथौ विपरीतमित्युक्तत्वात् जातानि धनानि। रेखापुरात् स्वपुरस्थप्राग्परदिगवस्थित्या ऋणधनत्वमवगन्तव्यम्। यस्मिन्वर्षे शुध्यंक एकविंशतिमारभ्य त्रिंशत्पर्यन्तं समायाति तस्मिन्वर्षेऽधिमासो ज्ञेयः।

तद्यथा—इष्टशके १५५२ एतन्मध्येपुस्तकीयशके १५४४ शोधितशेषं ८ शेषादधस्थातिथिः २८ शकादधस्थातिथिः २७ योगः ५५ त्रिंशत्तष्टेशेषं २५ अस्मिन्वर्षेऽधिमासोज्ञेयः। संक्रमणवशात्मासोज्ञेयः। यस्मिन्मासेसंक्रान्तिर्न भवति स अधिमासः।

उदाहरणक्रमोलिख्यते—इष्टशकः १५५१ एतन्मध्येपुस्तकीयशकः १५४४ शोधितः शेषं ७ पुस्तकीयशकादधःस्थांकः २७।५।२६।४५ शेषादधस्थांकः १७।१।२१।५२ अनयोर्योगे जातं १४।६।४८।३७ इदं देशान्तरपलैः ४७ सहितं जातं वर्षादौ तिथ्यादिकं १४।६।४९।२४ एवंचैत्रशुक्लचतुर्दशी शुक्रवारमारभ्य वर्षप्रवृत्तिः। शकादधःस्थवल्ली ५४।३६।३४ शेषादधःस्थवल्ली ४६।२८।१० अनयोर्योगे जाता वर्षादौ वल्ली ४१।४।४४ एवंकृता इति, इदंवारादिकंवल्लीसहितं पंचविंशतिधा स्थाप्यम्। अथानुक्रमेणतत्तत्पक्षस्थतिथिगुच्छोयोज्यःतद्यथा :—

प्रथमस्थाने शून्यकोष्ठकाधःस्थंवारादिकंयोज्यं ०।०।० तदधस्थावल्ली ०।०।० वल्लीषु योज्या। एवं द्वितीयस्थाने प्रथमकोष्ठकाधःस्थंवारादिकं ०।४५।३६ योज्यःतदधस्थावल्ली ३२।८।२३ वल्लीयोज्या, एवमग्रेपि। एवंकृतेसति तत्तत्पक्षादौ तत्तद्वारादि र्भवति तथाकृतेजातं प्रथमंपक्षस्थंवारादिकं ६।४९।२४ वल्ली ४१।४।४९द्वितीयपक्षस्थंवारादिकं ०।३५।१० वल्ली १३।१३।१३ तृतीयपक्षस्थवारादिकं १।१९।५६ वल्ली ४५।२०।१० एवमग्रेपि चतुर्विंशतिपक्षाः भवन्ति। अधिमासश्चेत्षट्विंशतिपक्षाः भवन्ति। इतिनियामकत्वादत्र एकस्थानमधिकम्। किमर्थमुक्तमितिचेदुच्यते। इष्टवर्षादिमारभ्य द्वादशमासान्ते अधिमासश्चेत्त्रयोदशमासान्ते वर्षसमाप्तिर्भवति। अस्माद्वितीयदिवसे, अग्रिमसौरवर्षप्रवृत्तिर्न भवति किन्तु एकादशदिनान्तरे भवति। इतिकारणादेकपक्षस्य चालनमन्तरास्तद्दिवसज्ञानार्थमधिकमुक्तम्। अनया रीत्या प्रतिवर्षमेकादशतिथिवृद्धिः। अनया रीत्या एकादशदिनवृद्ध्या तृतीये वर्षे अधिमासो न भवति। अथतत्तत्पक्षस्थवारादौ तत्तत्पक्षचालनानि रहितानि तानि कार्याणि कुतः चालनस्य ऋणत्वात्। तत्तत्पक्षादिस्थवल्लीषु वल्लीस्थचालनानि धनानि कार्याणि चालनस्य धनत्वात्। तद्यथा :—

प्रतिपत्ते पंचदशकोष्ठकाः कार्याः। तत्र प्रथमकोष्ठकस्थतिथिवारेषुएकोयोज्यः। तद्यथा। प्रथमकोष्ठकस्थतिथिवारौ तावेव तयोर्मध्ये-एकोयुक्तः कार्यः द्वितीयकोष्ठस्थतिथिवारौ भवतः। एवं द्वितीयकोष्ठस्थतिथिवारमध्ये-एकोयुक्तः तृतीयकोष्ठस्थतिथिवारौ भवत एवमग्रेपि। प्रथमकोष्ठस्थवारादिमध्ये अयं घट्यादिचालनाङ्को ०।५७।३६ घटीस्थाने रहितः कार्यः तद्द्वितीयकोष्ठस्थघट्यादिकं भवति। प्रथमकोष्ठे यथास्थितमेव। एवमग्रेपि। तथा प्रथमकोष्ठकस्थवल्लीयथास्थितैव। तन्मध्ये चालनाङ्को २।८।३३।३२ योजितः। द्वितीयकोष्ठस्थावल्ली भवति। एवमग्रेपि। एवंकृतेसति अन्तिमकोष्ठस्थवारादिकं तेनैव चालकेन रहितसत् द्वितीयपक्षस्थवारादिकतुल्यं भवति। तदाशुद्ध्यर्थंक्रमः, अन्यथा अशुद्धः। एवंवल्ली। उदाहरणं—प्रथमपक्षस्थवारादिकं

१४।६।४९।२४ तिथौवारे च-एकोयुक्तः १५।० घटी ४९।५०।२४ एतन्मध्येचालनांको ०।५७।३० रहितः जातं द्वितीयकोष्ठस्थंवारादिकं १५।०।४८।२६।५४ एवंप्रथमपक्षस्थवल्ली ४१।४।४९ मध्ये चालनाङ्को २।८।३३।३२ युक्तः जाताद्वितीयावल्ली ४३ १३।१२।३२ एवमग्रेपि। तथाकृते जातम्। एवंकृते द्वितीयपक्षस्थे तिथ्यादितुल्यं षोडशकोष्ठकस्थतिथ्यादिकं जातम्। अथबल्यां य ऊर्ध्वांकोभवति तत्तुल्यंतिथिसौरमासस्य कोष्ठकोग्राह्यः वल्लीस्थोर्ध्वांकादधःस्थायाघटिका भवति। तन्यूनंतदासन्नतिर्यक्पंक्तिस्थ घटिकायोतत्कोष्टकादधःस्थ घटिकाभिः सहान्तरंकार्यम्। तद्ऋनर्णसंज्ञकं भवति। तदा अधःस्थघटीमध्येशुद्धंतदाधनसंज्ञकसान्तरं भवति। अन्यथा ऋणसंज्ञकं भवति। यदाचतुःपञ्चाशत्तिर्यक्पंक्तौघटीकादिकं फलंगृहीतं तदा तदधोघटिकाया अभावात् केनसह अन्तरकार्यमित्याह। तिर्यक्पंक्तौ शून्यघटिकायांवल्लीस्थोर्ध्वांक तुल्यकोष्ठकादधःस्थ घटिकाभिःसह् अन्तरं कायमिति। अत्रोदाहरणं—वल्ली ५३।५६।१० सह् अन्तरं कार्यमिति। अत्रोदाहरणं—वल्ली ५३।५६।१० त्रिपञ्चदशदधस्थतिर्यक्पंक्तौचतुःपञ्चाशद्घटिकायाः घट्यादिकं ८।५२

१४	१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०
४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३५
२४	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४०	१२	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
४१	४३	४५	३७	४९	५१	५३	५६	२८	९	२	४	६	८	११	१३
.४	१३	२१	३०	३१	४७	५६	४	१३	२१	३०	३८	४७	५६	४	१३
४९	१२	५६	२९	३	३६	१०	४३	१७	५८	२४	५७	३१	४०	३८	१२
०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१२	४८	२०	५२	२४	५६	३८	०

चतुः चतुःपंचाशतकोष्ठकादधस्थतिर्यक्पंक्तौ शून्यघटिकाया घट्यादिकं ९।५ अनयोरन्तरं १३ एवंबुद्धिमताज्ञेयम्। तदन्तरं तिर्यक्पंक्तौ या घटिकागृहीता सा वल्लीस्थघटिकामध्येशोध्याः शेषा या घटिकाः पलानि भवन्ति तेनान्तरेण गुण्यानि पञ्चात् षट्भिर्भक्तो लब्धानि एतानिपूर्वस्थापितघटीमध्ये रहितानि सहितानि कार्याणि तद्यथा—यदाधनमंतरं तदा सहितानि, ऋणं तदा रहितानि कार्याणि। एवंकृते या घटिकाः पलानि च भवन्ति ताः कोष्टकस्थघटीमध्ये योज्याः स्पष्टा घटिका भवन्ति। तिथिरेव वारमुल्लंघ्य अग्रिमं वारं गच्छति तदा पूर्वस्मिन्वारे षष्टिघटिकात्मिका तिथिः स्थाप्या। यदैकवारे तिथिद्वयं भवेत्तदावमदिनं।

	१४	१५	१	२	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	१२	१३
वा०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०
घ०	५२	४८	४७	४६	४७	४९	५२	५६	६०	१	६	११	१६	२०	२३	२४
प०	२४	२५	३३	५२	३०	३१	३५	४४	०	३३	४६	५४	३१	३२	१	३४

तदा पूर्वोनापराकार्या सा स्पष्टा भवेत्। अनया रीत्या नक्षत्रयोगसाधनं। अथ उदाहरणम्—प्रथमपक्षस्य प्रथमकोष्ठस्थावल्ली ४१।४।४९ अत्र वल्यामूर्ध्वाङ्के एकचत्वारिंशद्घर्तन्ते इतिकारणात् तिथिसौर भस्यैकचत्वारिंशकोष्ठकादधस्थवल्यां घटिकाचतुष्टयं वर्तते इतिकारणात् तिर्यक्पंक्तौ शून्यघटिकाया घट्यांकः ३।५ अयं अधस्थघटिकामध्ये २।५८ न शुध्यति अतः पूर्वघटिकामध्ये शोधितः ७ पलाद्य ऋणसंज्ञम्। अवान्तरे क्रियमाणे घटिस्थाने शून्यमेवावशिष्यते वल्लीस्थघटिकाशून्येन गुणिताः शून्यमिव जातं षट्भक्ते शून्यमितिकरणात्। घटिस्थाने शून्यत्यागः क्रियते पलं पलात्मकमन्तरं गृह्यते वल्लीस्थघटिकादिकं ४।४९ इदं तिर्यक्पंक्तिस्थशून्यघटीभीरहितंजातं ४।४९ इदंतरेणगुणितं ३३।४३ षट्भक्तंलब्धानिपलानि ५ एतानिपूर्वघटीमध्ये३।५ रहितानिजातिानघटीपलानि। ३।० एतानिपूर्वस्थापितप्रथमपक्षस्यप्रथमकोष्ठघटीपलमध्ये ४९।२४। युतानि जातानि चैत्रशुद्ध १४ भृगौ घटीपलानि। ५२।२४ एवमग्रेपि बोध्यं तथाकृते जातः प्रथमः पक्षः एतदुदाहरणो परिगणकेनगणितेक्रियमाणेयत्रापि अंकमध्ये अतरंपततितर्हिममनदोषः अस्माभिः शुद्धपुस्तकोपरकृतमस्ति। इष्ट शकमध्ये १५५१ पुस्तकीयशके १५४४ शोधिते शेषं ७ शकादधस्थांकः २४।५।९।३२ शेषादधस्थांकः १६।२।६।२३ अनयोर्योगेजातं ४०।७।१६।१ देशांतरपलैः ४७ सहितं ४०।७।१६।४८ ऊर्ध्वाङ्के सप्तविंशतिभिस्तष्टेजातं १३ तदधः सप्तष्टेजातं ०। एवंजातं १३।०।१६।४८ वर्षादौ तिथ्यादिकं। यस्मिन्दिने तिथ्यारम्भो भवति तस्मिन्नेवदिने नक्षत्रयोगारम्भइतिव्याप्तिर्नास्ति। तद्दिनात् पूर्वापरदिनेवा भवति। चैत्रशुक्ल १५ शनौहस्तनक्षत्रप्रवृत्तिः। शकादधस्थावल्ली ५३।५५।२१ शेषादधस्थावल्ली ४८।५।९ योगः४२।०।३० जातानक्षत्रवल्ली इदं नक्षत्रादिकंवल्लीसहितं चतुर्दशस्थाने स्थाप्यम्। अधिमासश्चेत्पंचदशस्थानेस्थाप्यम्। अनुक्रमेण तत्तत्पक्षस्यनक्षत्रगुच्छायोज्याः। तद्यथा—प्रथमस्थानेशून्यकोष्ठकादधस्थंयोज्यम्। द्वितीयेप्रथमम्। एवमग्रेपि। तदधस्थवल्लीषुयोज्या। एवंकृते जातंप्रथमपक्षस्थंवारादिकं ०।१६।४८ द्वितीयपक्षस्थं ६।३६।५८ प्रथमवल्ली ४२।०।३० द्वितीयवल्ली ४१।३१।५७ एवमग्रेपि। अथतत्तत्पक्षादिषुः वारादौ तत्तत्पक्षचालनानिसहितानिकार्याणि। वल्लीषुचालनानि धनानिकार्याणिप्रतिपक्षसमं विशतिकोष्ठकाः। तत्रप्रथमकोष्ठेप्रथमकोष्ठस्थनक्षत्रादिकंस्थाप्यं। तदधस्थातत्तत्पक्षवल्ली स्थाप्या। नदनन्तरंप्रथमकोष्ठस्थ नक्षत्रादिकं कोष्ठस्थ नक्षत्रवारौभवतः। एवमग्रेपि। तथा प्रथमकोष्ठस्थ घटिका यथास्थिता एव। तन्मध्ये अयं घट्यादिश्चालनांको ०।४४।४८ युक्तः सत् द्वितीयकोष्ठं घट्यादिकं भवति। तथा प्रथमकोष्ठस्थावल्ली- यथास्थितैव। तन्मध्येऽयंघट्यादिचालनांको २।१३।१६ योजितः सन् द्वितीयकोष्ठस्थावल्ली भवति। एवमग्रेपि।

उदाहरणं—प्रथमकोष्ठस्थनक्षत्रादिकं १३।०।१६।४८। वारेण एकोयुक्तः। नक्षत्रे एकोयुक्तः। १४ घटीपलं १६।४८ एतन्मध्ये चालनांको ०।४४।४८ युक्तः जातंद्वितीयकोष्ठस्थं नक्षत्रादिकं १४।१।१७।३२।४८ एवं प्रथमपक्षस्थवल्ली ४२।०।३० मध्येचालनं २।१२।१५।३३ युक्तं जाताद्वितीयावल्ली ४४।१२।४५।३३ एवमग्रेपि प्रथमकोष्ठस्थावल्ली ४२।०।३० नक्षत्रसौरभस्यद्वितीयचत्वारिंशत्कोष्ठकादधस्थ शून्यघटिकायाघट्याद्यङ्काः १।४७ अधस्थाङ्कः १।४२ अन्तरं ५ ऋणमनेनवल्लीस्थ घटी ०।३० पलानिगुणितानि १५० षष्ट्याभक्तेपलानि २।३० षड्भिर्भक्तेपलानि ०।२५ पूर्वघटिकामध्ये १।४७ रहितानि १।४६।३५ एतानिपूर्वस्थापितप्रथमपक्षस्य प्रथमकोष्ठस्थ घटीपलमध्ये १६।४८ युतानिजाताघटिका १८।३५ एवं चैत्रशुक्ल १५ शनौहस्तनक्षत्रस्य घटिकादि। एवमग्रेपि॥ इतिनक्षत्रसाधनं।

अथ योगसाधनं—इष्टशक १५५१ मध्ये पुस्तकीयशके १५४४ शोधिते शेषं ७ शकादधस्थांकः २४।५।११।५१ शेषादधस्थांकः १६।२।५।९ शकादधस्थावल्ली ५३।५६।३८ शेषादधस्थावल्ली ४८।२।२८

वारादिकयोगेजातं ४०।७।१७।० देशान्तरपलैः सहितैः ४०।७।१७।४७ ऊर्ध्वांकेसप्त- विंशतितष्टेजातं १३।७।१७।४७ वारेषुसप्ततष्टेजातेपूर्णम् । वल्लीयोगः ४१।५९।६ योगादिकंवल्लीसहितंचतुर्दशस्थानेस्थाप्यम् । अधिमासश्चेत्पंचदशस्थानेस्थाप्यम् । अथानुक्रमेण तत्तत्पक्षस्थयोगगुच्छायोज्याः । तद्यथा–प्रथमस्थानेशून्य-कोष्ठकादधस्थवारादिकं ०।०।० योजितेजातं ०।१७।४७ वल्लीषुयोजितावल्ली ४१ ५९।३६ एवं द्वितीयकोष्ठ-प्रथमकोष्ठस्थंवारादिकं ४ २७।२४ योजितं ४।४५।११ वल्ली ५५।२६।२५ वल्लीषुयोजिताजातावल्ली ३७।२६।१ एवमग्रेऽपि । प्रथमस्थयोगादिकं १३।०।१७।४७ योगस्थानेएकोयुक्तः वार एको युक्तः घटीपलमध्ये १७।४७ घट्यादिश्चालनांको ३।२५।४६ रहितः जातंद्वितीयकोष्ठकस्थंयोगादिकं १४।११ ।२१।१५ एवं प्रथमपक्षस्थ-वल्लीमध्येचालनांको २ ३।१३।१८ योजितः जाता द्वितीयकोष्ठस्थावल्ली ४४।२।११ ८ एवमग्रेपि। प्रथम-जोष्ठस्थावल्ली•४१ ५६।६ योगसौरभस्यैकचत्वारिंशत्कोष्ठकादधस्थचतुः पञ्चाशतघटिकाया घट्यांकः १।४२ अधस्थांकः १।३७ अंतरंऋणेनानेन वल्लीस्थ घटीपलानि ५५।६ गुणितानि षट्भक्तेलब्धपलानि ४।१५ एतानिपूर्वघटिकामध्ये १।४२ रहितानि १।३८ जातानि घटीपलानि एतानि पूर्वस्थापित घटींपलमध्येयु-तानि जातानि चैत्रशुक्ल १५ शनौव्याघातयोगघटी १९ पलानि २५ एवमग्रेपितथाकृतेजातः प्रथमपक्षः ।

अथेष्ट तिथ्यादिसाधनं—वर्षमध्येयस्मिन्मासेयातिथिरपेक्ष्यतेतत्तिथिपर्यन्तं चैत्रादिप्रतिपदमारभ्य-तिथयः स्थाप्याः । ताः वर्षादितिथ्याहीनाः कार्याः शेषाः सौरवर्षादेरिष्टदिनपर्यन्ततिथयोभवन्ति । अभीष्ट-नक्षत्रयोगसाधनेतास्तिथयोद्विष्ठाः एकत्रषट्त्रिंशदंशेनहीनाः । अपरत्रद्वाविंशांशेन युताः कार्याः । निरवय-वेनोभयत्रापिवर्षादितोनक्षत्रयोगाभवन्ति । तिथयः पञ्चदश भक्ताः कार्याः । नक्षत्रयोगौसप्तविंशतिभक्ताः फलं निरवयवंयाह्यंतेतिथिनक्षत्रयोगकोष्ठाः स्युः एतत्कोष्ठकादधस्थस्वस्वगुच्छस्थवारादिकंस्थाप्यं । वल्लीच-स्थाप्या । वारादिकमत्रवर्षादिस्थदेशांतरसंस्कृतंवारादिकं योज्यंवल्लीषुवल्लीयोज्या । तदनन्तरं वारस्थानेपञ्च-दशभागाशेषास्तिथयोयुक्ताः कार्याः वारस्थानेसप्तविंशत्तष्टंकार्यं एवं नक्षत्रयोगौ वर्षादिस्थनक्षत्रयोगाभ्यां-सहितौकार्यौ । सप्तविंशत्यधिकेसप्तविंशतितष्टंकार्यमभीष्टनक्षत्रयोगौभवतः । अभीष्टतिथिस्तुज्ञायते एवेतिन-तदानयनेयत्नोविधेयः । वारादिकमध्येस्वस्ववर्षादिस्थादेशान्तर संस्कृतं वारादिकंयोज्यंवल्लीषुवल्लीयोज्या । वारस्थानेशेषानक्षत्रयोगा युताः कार्याः वारस्थाने सप्तभिस्तष्टंकार्यं । तदनन्तरं स्वस्वचालकाःशेषतिथ्यादि-नागुण्याः । चालकश्चेद्धनस्तदाघटिस्थाने युक्ताः कार्याः । ऋणेरहिताः यदातुशुद्ध्यति तदा वारादिकाग्राह्याः । एवमेव वल्ली । एवंतिथिनक्षत्रयोगानां वारादिकं भवति । वल्लीसहितम् । अस्मात्प्राग्वत् स्वस्वसौरभो-परिघटिकाः साध्याः अभीष्टतिथ्यादिः स्पष्टाघटिका भवंति । उदाहरणम्—शके १५५१ वैशाखकृष्ण १० घट्याद्यानयनंतत्रचैत्रशुद्ध १ प्रतिपदमारभ्यदशमीपर्यन्तमिष्ट तिथयः २५ वर्षादितिथ्या १४ हीना ११ पञ्चदश-भिर्भक्ताः फलं शेषं ११ तिथिगुच्छस्थंशून्यकोष्ठकादधःस्थंवारादिकं ०।०।० वल्ली च ०।०।० इदं वर्षादिकंवारा-दिभिः ६।४९।२४ युतंवारस्थानेशेषतिथि ११ भिर्युक्तंसप्ततष्टंजातंवारादिकं। ३।४९।२४ वल्ली योजिता ४१।४।४९ चालकः ०।२७।३६ शेषतिथिभिर्गुणितः १०।३३ इदंघटीस्थानेरहितंजातं ३।३८।५१ वल्लीस्थाने चालकः २८।३३।३२ शेषतिथिभिर्गुणित. २३ ३४ अनेनवल्लीयुक्ताजातावल्ली ४।३८।५२ आभ्यांप्राग्वज्ज्ञातावैशाखकृष्ण १० बुधे घटिका १६ पलानि ३१ एताः पूर्वानीततुल्याजाता अस्यांतिथौ नक्षत्रयोगानयनं । शेष तिथयः ११ स्वषट्त्रिंशदंशेनरहिता जाताः ११ पुनस्ताएवतिथयः स्वद्वाविंशत्यंशेनयुक्ता ११ जातौ नक्षत्रयोगौ । अनयो-रूर्ध्वसप्तविंशतितष्टं फलं शून्यकोष्ठकःनक्षत्रगुच्छस्थंशून्यकोष्ठकादधस्थंवारादि ०।० ० योगगुच्छशून्यकोष्ठस्थं-वारादि । ०।०।० वल्ली ०।०।० नक्षत्रादिकवारादिकंवारस्थानेशेषनक्षत्रैर्युतं । ११।०।० इदंवर्षादिस्थकोष्ठस्थ-

नक्षत्रवारादिभि ०।१६।४८ र्युतं सप्तनष्टंवारादिकं ४।१६।४८ वल्लीषुवल्लीयुक्ता ४२।०।३० जातावल्ली ४२।०।३० एवमेवजातयोगवारादिकं १७।४७ वल्ली ४१ ५६।६ नक्षत्रचालकः ४४।४८ शेषनक्षत्रैर्गुणितः ८।१३ इदं घटीस्थानेयुतं जातं नक्षत्रं वारादिकं ४।२५।१ वल्लीचालकः २।१२।१६।३३ शेष नक्षत्रैर्गुणितः २१।१५।२।३ अनेनवल्लीयुताजातावल्ली ६।१५।३२ पूर्वानीतनक्षत्रमध्येवर्षादिस्थनक्षत्रं १३ युतंजातं २४ शततारका नक्षत्रं। एवंप्राग्वज्जातं। वैशाषकृष्णैकादश्यांगुरौशततारकानक्षत्रस्यघटिका ३ पलानि ११ अथ योगवारादिस्थचालकः। ३।२५।४६ शेषैर्गुणितः ३७।४३।३६ इदंघटीस्थानेरहितं जातं ३ ४०।४ वल्लीस्थचालकः २।३।१३।८ शेषंयोगै र्गुणितः ३२।३५।२४।२८ अनेनवल्लीयुताजाता ४।३४ ३० पूर्वानीतयोगमध्ये ११ वर्षादिस्थ योगेयुक्तेजातः भुक्तयोगः २४ एवंजातंवैशाखकृष्णदशम्यां बुधेयोगघटिकाः १२ पलानि १० कदाचिन्नक्षत्रयोगौ—अग्रिमतिथौ गच्छतः तदाशेषनक्षत्रयोगयोरेकोरहितः कार्यः।

अथ संक्रान्तिमहानक्षत्रसाधनम्—इष्टशक १५५१ मध्येपुस्तकीयशके १५४४ शोधितेशेषं ७ शकादधस्थंवारादिकं। ५।४१।१७ शेषादधस्थं वारादिकं १।४८।४० अनयोर्योगेजातं ०।२९।५७ देशांतरपलैः। ४७ सहितं जातोब्दपः ०।३०।४४ अयंद्वादशस्थाप्यः क्रमेणमेषादिद्वादशसंक्रान्तिक्षेपैर्युतः कार्यः द्वादशसंक्रान्तयः स्युः अब्दपमध्येमेषसंक्रान्तिक्षेपको ०।०।० युक्तः जातामेषसंक्रान्तिः ०।३०।४४ एवं चैत्रशुक्लपूर्णमास्यांशनौ आसुघटीषुमेषसंक्रान्तिप्रवेशः। वृषसंक्रान्तिक्षेपकः २।५७।१ अब्दपमध्येयुतोजातः ३।२७।४५ भौमवारे आसुघटीषु २७।४५ वृषसंक्रान्तिप्रवेशः एवं मिथुनादिष्वपि। एवमब्दपः सप्तविंशतिस्थानेस्थाप्यः। अश्विन्यादिसप्तविंशतिक्षेपकैर्युक्तः कार्यः तत्तन्नक्षत्रप्रवेशो भवति। अश्विनी ध्रुवांक २६।०।०।० मध्ये ०।३०।४४ युक्तः अश्विनीप्रवेशः एवमग्रेपि। चैत्रशुद्ध १५ शनौ आसुघटीषु ३०।४४ अश्विनीप्रवेशः। संक्रमात्संक्रमस्त्रिंशदिनांते प्रायोभवति। नक्षत्रान्तरंनक्षत्रप्रवेशश्चतुर्दशदिनान्तरे भवति। अथस्त्रिंशदिनान्तेचतुर्दशदिनान्तरेस्वस्ववारक्रमेणराशिनक्षत्रप्रवेशौलेख्यौ।

अथसायनसंक्रमणसाधनम्—यस्मिन्नराशौ सायनसंक्रान्तिरपेक्ष्यतेतद्राशावयनांशाः शोध्याः सरा-ण्यादिः सूर्योभवति। तदासन्नपञ्चांगावार्धस्थसूर्येणसहान्तरंकार्यं। तस्यकलाः कार्याः सूर्यगत्याभाज्याः फलंदिनाद्यंग्राह्यतदवधिस्थवारादौसहितंरहितंकार्यं। तद्यथा—यथावधिस्थ सूर्यादूनोभवति तदासहितमधिकेरहितंकार्य मिति। तस्मिन्वारे सायनसंक्रान्ति घटिका भवन्ति।

उदाहरणं—शकः १५५१ सायनवृषसंक्रान्ति साध्यते। अयनांशाः १६।५७ एकराशिमध्येशोधितः जातः सूर्यः ०।१३।३ अस्यासन्नो वैशाषकृष्ण ३ शनावध्यर्कः ०।१३।३८।३९ अनयोरन्तरंकलाभिः ५८।१२ भक्ताः फलं दिनाद्यं ०।३६।४५। अवधिस्थवारादिकमध्ये ०।२९।२७ रहितंजातावैशाषकृष्ण १२ भृगौसायनवृषसंक्रान्तिघटिकाः ५२।४२ अस्याः प्रशंसा। तास्वेवपूण्यातिशयंमुनींद्रावशिष्ठमुख्याजगदुर्महांतः। सद्यु-क्तिमुक्तं च विलोक्यतेदः परंनचैतद्व्यवहारयोग्यम्। इतिदिवाकरपद्यम्।

अथग्रहसाधनम्—

इष्टशकमध्येपुस्तकीयशके शोधितेयक्छेषंतत्प्रमितकोष्ठकादधस्थांकमध्येपुस्तकीयशकादधस्थांकोयोजितस्तदधस्थवारयोर्योगःकार्योंख्यादिवर्तमानोवारो ज्ञेयः। एवंकृते इष्टवर्षात प्रथमवर्षेफाल्गुनीपौर्णमास्युत्तरांयामावास्या तस्यामागतत्रासरे अर्धरात्रसमये ग्रहवल्ली भवति। कदाचितपूर्व परदिनेवा भवति यस्मिन्दिने—आगतत्रासरोभवति तस्मिन्दिनेग्रहवल्लीज्ञेया। अत्रवारस्यैवप्राधान्यं। तदनंतरं एतद्वल्लीस्वदिन-

मारभ्यमेषसंक्रान्तिदिन पर्यन्तं अन्तरालदिवसैर्वल्लीचतुर्थांकोयुतः कार्यः सा मेषसंक्रान्तावर्धरात्र समये ग्रह-वल्ली भवति। मेषसंक्रान्ति वल्लीचतुर्थांङ्के सप्तयोज्याः सप्तदि नान्तरे वल्ली भवति। एवमग्रेपि। अव-धिस्थवल्ल्युपरिमध्याः स्पष्टाग्रहाः साध्याः। अथमेषसंक्रान्तिदिवसेमध्यमाग्रहाः साध्याः। देशान्तरबीज-संस्कृताःकार्याः। तेषुसप्तगुणिताः स्वस्वमध्यगतिर्योज्या। तेअग्रिमावधिस्थाभवन्ति। एवमग्रेपि। अथात्र-यस्मिन्मासेयस्मिन्पक्षेग्रहचालनमपेक्ष्यते। तत्तत्पक्षमासचालनानिप्रथमग्रहदिनवल्यांयोज्यानि। एवंकृते-तत्पक्षेमासेग्रहवल्ली भवति। यास्मन्दिने ग्रहसाधनमपेक्षते तावद्भिर्दिनैर्वल्लीचतुर्थांङ्कोयुक्तः तावद्भिर्दिनै-वारोयुक्तः सप्ततष्टः कार्यः। एवं कृते इष्टवारः सएववल्लीस्थोवार आयाति तदाभीष्टदिने ग्रहवल्ली भवति तदाभीष्टवारो नायातितदादिनद्वयेनएकेनदिनेनवावल्ली चतुर्थांकोयुक्तः कार्यः यथाभीष्टोवारः आयातितथेव-कार्यः। पक्षवल्लीसंस्कारश्चैत्रशुद्धप्रतिपदमारभ्यवर्तते। एवंग्रहवल्लीपूर्वमेवचतुर्दश्यां अमावास्यायां वा आयाति। इतिकारणात्। अयं संस्कार उक्तः।

अथ वारानयनं—ग्रहवल्लीषष्ट्यासवर्णिताकार्याअहर्गणोभवति। पश्चात्सप्ततष्टेयच्छेषं तत्प्रमित-शुक्रवारमारभ्यवर्तमानोवारोज्ञेयः। अत्रोदाहरणं—शके १५३४ वैशाखशुक्ल १५ ग्रहसाधनं क्रियते। इष्ट-शक १५३४ मध्येपुस्तकीयशके १५१४ शोधितेशेषं २० शेषादधस्थांकः ०।२।२।४ वारः २ शकादधस्थांकः ७।५६।८।५२ वारः ५ अनयोर्योगः ७।५८।१०।५६ वारयोर्योगः ७ सप्ततष्ट शनिवारे: जातावल्ली ७।५८। १०।५६ एतन्मध्येवैशाख शुद्ध पौर्णमासीस्थ पक्षवल्ली ०,०।०।४४ युताजातावैशाखशुद्ध १५ अर्धरात्रसमये-ग्रहवल्ली ७।५८।११।४१ वारेषु वारो २ युक्तः २ जातः सोमवारः। इयंग्रहवल्लीरव्यादिग्रहसाधने—-उपयुक्ता अत्रेदमवधेयं। प्रथमतश्चैत्रादिनिकटग्रहदिनवल्लीतोवक्ष्यमाणरीत्या सूर्यः साध्यः स यदि अपेक्षितार्क समस्तदाशुद्धा अन्यथा अशुद्धा। यदिचार्क एकराशिन्यूनाधिकः तदावल्लीतश्चांकेरवरामायोज्याः शोध्याः परेपिक्रमा द्वयंहेयंवा। उदाहरणं—इष्टशकः १५५८ उक्तवज्ज्ञातावल्ली ८।०।३६।३७ वारश्च ५ वल्लीस्थ सूर्यः १०।२६।४५।२ अपेक्षितमीनार्कोदून इतिवल्लो चतुर्थांकेरवरामायोजिताजातावल्ली ८।०।३७।७ द्वययोजना-द्वारश्च० एतद्वल्लीस्थसूर्यः ११।१५।२६।२७ अपेक्षितार्कसमइति १५५८ अस्मिन् चैत्रादितः प्रागमायांबल्लीशनौ जाताशुद्धाएवमधिकत्वेद्रष्टव्यम्। अतएवोक्तंदिवाकरेण। अपेक्षितार्कादिति।

अथग्रहसाधनं—स्वस्ववाटिकायांवल्यांयश्चतुर्थांकः तत्प्रमितकोष्ठकस्थाश्चत्वारोंकाः स्थाप्याः। तदनन्तरंवल्लीतृतीयांकतुल्यकोष्ठकस्थप्रथमाङ्कं विहाय चत्वारोंकास्थाप्याः। ततोवल्लीद्वितीयांकतुल्यकोष्ठस्थो-र्द्धांकद्वयं विहायचत्वारोंकाः स्थाप्याः। ततोवल्लीप्रथमांकतुल्यकोष्ठस्थोर्ध्वांकत्रयंविहायचत्वारोंकास्थाप्याः। ऊर्ध्वांकास्त्याज्याः। ततस्तेषांयोगः कार्यः। ऊर्ध्वांक.षष्ट्यधिकः षष्टि तष्टः कार्यः साग्रहवल्लीघट्यादिर्भवति। रविचन्द्रादिवल्लीभिन्नालेख्याः। अग्रेउपयुक्तत्वात्। तदनन्तरंग्रहवल्लीषट्गुण्या अंशादिकं स्यात्। अंशास्त्रिं-शद्भक्ताराशयो भवन्ति। एवमर्धरात्रिसमये राश्यादिग्रहाभवन्ति। चन्द्रोच्चबुधभृगुबल्लीनांविशेषः। उक्त-वच्चन्द्रोच्चवल्लीकार्या। तस्याऊर्ध्वांकेपंचत्वारिंशद्युक्ताकार्या तदनन्तरंचन्द्रवल्लीमध्येशोध्यातदनन्तरंषड्गुणिता कार्याचंद्रोच्चंभवति। यदाबल्लीमध्येवल्लीनशुध्यतितदोर्ध्वांषष्टियुताकार्या। बुधशुक्रोच्चबल्लीमध्ये शोध्या तदनन्तरं षड्गुणिताकार्याबुधशुक्रयोः शीघ्रोच्चं भवति। एवं ग्रहसाधनांतेरेखा स्वदेशान्तरयोजनघ्नीत्यादिना देशान्तर संस्कारः कार्यः। अर्धरात्रेचराभावाच्चरसंस्कारो न भवति। उदाहरणं—शके १५३४ वैशाखशुक्ल १५ वल्ली ७।५८।१८।४० रविवाटिकायांचत्वारिंशत्कोष्ठकादधस्थांकः ६।३४।१४।२७ एकादशकोष्ठकस्थाङ्कांश्चङ्कं विहायचत्वारोंकाः ४८।२४।५८।३६ अष्टपंचा शत्कोष्ठकादधस्थांकः ३८।५८।२०।३४ सप्तमकोष्ठकादधस्थांकः

३१।५२।८।१४ चतुर्णांयोगे जातारविवल्ली १२५।४९।४१।५४ ऊर्ध्वांकेषष्टि-तष्टे शेषं ५।४९।४१।५४ इदं षट्गुणंजाताअंशा ३५।५८।११।२४ अंशास्त्रिशद्धृक्ताः लब्धंराशयः एवं राश्याद्योरविः १।४।५८।११ चंद्रवल्ली ३५।२।१२।७ चंद्रः ७।०।१३।१२ चंद्रोच्चवल्ली ५७।४१।६।३७ ऊर्ध्वांकेशरवेद ४५ युक्ताजाता ४२।४१।६।३७ इदं चन्द्रवल्लीमध्ये ३५।२।१२।७ रहितंजातं ५२।२१।५।३० उच्चः १०।१४।६।३३ भौम वल्ली ४९।५३।३६।१८ भौम. ९।२९।२१।३८ बुधोच्चवल्ली ५१।३४।३३।५४ रविवल्ली ५।४९।४१।५४ मध्येशुद्धाजाता १४।१५।८।० इदंषड्गुणंत्रिंशद्धृक्तंजातंबुधशीघ्रोच्चं २।२५।३०।४८ गुरुवल्ली २१।४३।३१।५८ गुरुः ४।१०।२१।१२ शुक्रोच्च वल्ली ४३।१९।३०।१९ रविवल्लीमध्येशोधिता २२।३०।११।३५ पूर्ववज्जातंशुक्रशिघ्रोच्चं ४।१५।११।९ शनिवल्ली ५४।१७।४१।२ शनिः १०।२५।४६।६ केतुवल्ली ३७।३०।४४।४१ केतुः ७।१५।४।२८ अयंराशिषट्कयुक्तोजाता-राहु १।१५।४।२८ अथवाकेतुवल्यामूर्ध्वांके त्रिंश ३० युक्ताराहुवल्ली भवति काश्यांदेशान्तरयोजनानि ६४ ऋणानि

"रेखास्वदेशान्तरयोजनघ्नीगतिर्ग्रहस्याभ्रगजैर्विभक्ता।
लब्धाविलिप्ताखचरेर्विधेयाप्राच्यामृणंपश्चिमतो धनंच ॥"

इत्यादिना देशान्तरकलाः ४७ ऋणदेशान्तरसंस्कृतोरविः १।४।५७।२४ चंद्रः ७।०।२।४० उच्चं १०।१४।६।२८ भौमः ९।२९।२१।१३ बुधोच्चं २।२५।२७।३१ गुरुः ४।१०।२१।८ शुक्रोच्चं ४।१४।५९।५२ शनिः १०।२५।४६।५ राहुः १।१५।४।३० इष्टशकमध्ये १५३४ नवसप्तेन्दुरामाः ३१७९ योजिताजातंकलिगतं ४७१३ कलिगतस्यसहस्रांशों १००० शादि ४।४२।४६ शनिबीजधनं। एतत्र्यंशे १।३४।१५ सहितंजातंबुधोच्चधनं-तस्यधनं ६।१७।१ शनिबीजत्र्यंशेनरहितंजातं ३।८।३१ ऋणंगुरोः शनिबीजं शुक्रोच्चऋणं ४।४२।४६ बीजसंस्कृतंबुधोच्चं ३।१।४४।३२ गुरुः ४।७।१२।३७ शुक्रोच्चं ४।१०।१७।७ शनिः ११।०।२८।५१। अथकश्चिद्-विशेषउच्यते। यदाग्रहदिनवल्ली अङ्कचतुष्टय मध्येशून्यमायातितदाग्रहसाधनं कर्थंकार्यं। यतो ग्रहवाटिकायां-शून्यकोष्ठकोनास्ति। आदौशून्यकोष्ठमस्तीतिचेत्तत्रशून्यस्थानेषष्टिर्वर्तते। इतिकारणात् शून्यकोष्ठकस्या-भावाच्छून्यस्थानेफलाभावः। तत्र अंकत्रययोगेग्रहवल्ली भवति। वाटिकायामंकवाटिकायामङ्कग्रहणेशून्यस्थाने-एकैकमङ्कं विहाय योऽयमित्यनुवर्तते। यदाशून्यस्थाने षष्टिः स्थाप्यते तदाशून्यकोष्ठकादधस्थांकोग्राह्यः। एवमंक चतुष्टययोगोग्रहवल्ली भवति। एवं प्रकारद्वयेतुल्ये भवतिवल्ल्यौ। कल्पितावल्ली ७।५८।०।४० रविवाटिकायांचत्वारिंशत्कोष्ठकादधः-स्थांकः ६।३४।१४।२७ अष्टपञ्चाशत् कोष्ठकादधःस्थाङ्कः ६।३८।५८।२०। ३४ सप्तकोष्ठकादधस्थांकः ३१।५२।८।१४ एषांयोगे जातावल्ली १७।२४।४३।१५ अथवा ग्रहदिनवल्ली ७।५७। ५०।४० चत्वारिंशत्कोष्ठकादधस्थांकः ६।३४।१४।२७ शून्यकोष्ठकादधस्थांकः ५१।२१।४१।४४ सप्त पञ्चाशत-कोष्ठकादधस्थाङ्कः ४७।३६।३८।४९ सप्तकोष्ठकादधस्थांकः ३१।५२।८।१४ एषांयोगेजातासैव रविवल्ली १७।२४।४३।१५ एवंसर्वग्रहेषुशून्यस्थानेशून्यकोष्ठकस्थफलंचेद्गृह्यते तदा इयंवल्लीसंपद्यते ८।४६।२४।५९ तस्मा-दियमशुद्धा एतदुत्पन्नरवेर्विसंवादात्। यदावल्यामंकत्रयेशून्यं। तदाऊर्ध्वांक प्रमितकोष्ठकस्थ अधस्थांकमध्ये अंकत्रयंत्यक्त्वाचत्वारोंकाग्राह्याः सैवग्रहवल्ली अथरवीन्दोः स्पष्टीकरणम् मन्दोच्चंरविमध्यशोध्यंमंदकेन्द्रः भवति तस्य भुजांशांशाः कार्याः। भुजांशतुल्यकोष्ठकादधःस्थभागाद्यं फलं ग्राह्यं। तदग्रिमकोष्ठकस्थफलेन सहातरंकार्यं। तेनांतरेणभुजाशादधस्थकलाद्यंगुण्यंषष्ठ्याभक्तं फलं कलाद्यंग्राह्यं एताःकलाः पूर्वस्थापित-फलमध्येयुक्ता कार्याः। अग्रिमकोष्ठकस्याधिकत्वात्। अंशाद्यमंदफलं भवति। मेषादि षट्के ऋणं। तुलादि षट्के धनगते संस्कृतो रविः स्पष्टो भवति।

अथ गतिसाधनम्—फलादधःस्थं कलाद्यं गतिफलं ग्राह्यं तदग्रिमान्तरेण भुजांशादधस्थं कलाद्यं गुण्यं षष्ट्या भाज्यं फलं कलाद्यं ग्राह्यं एताःकलाः पूर्वस्थापितगतिकलामध्येसहितारहिताः कार्या अग्रिमकोष्टकवशात्। इदं स्वकीयमध्यगतौकर्कादिकेन्द्रंधनं, मकरादौऋणं, स स्पष्टागतिः। अनयारीत्याचन्द्रस्यस्पष्टीकरणं। रवेर्मन्दोच्चं २।१७।१७।० रविमध्ये पात्यरविमन्दकेन्द्रं १०।१७।४०।२४ अस्य भुजांशाः ४२।१९।३६ द्विचत्वारिंशत्कोष्टकादधस्थंफलं १।२८।३ अग्रिमकोष्टस्थंफलं १।२९।४६ अन्तरं १।४३ अनेनकलाद्यं १९।३६ गुणितं ३३।३८ षष्टिभक्तं फलं कलाद्यं ०।३३।३८ इदं पूर्वस्थापितफलमध्ये १।२८।३ सहितंजातं रवेर्मन्दफलं १।२८।३६ तुलादिकेन्द्रत्वाधनमनेनसंस्कृतोजातः स्पष्टः सूर्यः १।६।२६।० कलादधःस्थंगतिफलं १।३८ अग्रिमान्तरेणविकलात्मकेनकलाद्यं १९।३६ गुणितं ३९।१२ षष्टिभक्तं अग्रिमाङ्कस्यन्यूनत्वात्गतिफलमध्ये १।३८ रहितं जातं गतिफलं १।३७ मकरादिकेन्द्रत्वात्ऋणंअनेनमध्यमागतिः ५९।८ संस्कृताजाता स्पष्टागतिः ५७।३१ **अथचन्द्रस्यस्पष्टीकरणं**—चन्द्रोच्चंचंद्रमध्येशोधितं उच्चं १०।१०।३।२८ चन्द्रः ७।०।२।४० जातंचन्द्रस्यमन्दकेन्द्रं ८।१५।५६।१२ उक्तवन्मन्दफलं धनं ४।५३।५३ अनेनसंस्कृतोजातः स्पष्टचन्द्रः ७।४।५६।३३ गतिफलं १६।५७ धनं अनेन संस्कृतामध्यागतिः ७।१०।३५ जातास्पष्टाचन्द्रस्यगतिः ८०७।३२।

अथ भौमादीनांस्पष्टीकरणम्–तत्र गुरुभौमशनीनांशीघ्रोच्चंमध्यमोरविः। बुधशुक्रयोः पूर्वंसाधितमस्ति। योमध्यमोरविः स एव बुधशुक्रौ। ग्रहमध्येहीनंशीघ्रोच्चं कार्यंशीघ्रकेन्द्रं भवति। षट्भादिकंद्वादशराशिभ्यः शोध्यंषट्भान्न्यूनं यथास्थितमेव तस्यांशाः कार्या अंशप्रमितकोष्टकादधस्थशीघ्रफलं भागाद्यंस्थाप्यं। अग्रिमान्तरेणकलाद्यंगुण्यं षष्टिभक्तंफलं कलाद्यं ग्राह्यं। तत्फलं पूर्वस्थापितफलमध्येरहितंसहितंकार्यं। अग्रिमकोष्ठवशात्, तदंशाद्यं शीघ्रफलंभवति।

मेषादौ ऋणं। तुलादौ धनं—अस्यार्धेनमध्यमः संस्कृतः कार्यः। शीघ्रफलार्द्धं संस्कृतोभवति। तदनन्तरमेतन्मध्येमन्दोच्चंशोध्यंमन्दकेन्द्रं भवति। षड्भाधिकंद्वादशराशिभ्यः शोध्यंतस्यांशः कार्यः तत्प्रमितकोष्टकादधस्थमंशाद्यमयफलंग्राह्यं। अग्रिमान्तरेणकलाद्यंगुण्यं। षष्टिभक्तंकलाद्यं तत्पूर्वस्थापित फलमध्ये रहितंसहितंकार्यमग्रिमकोष्टवशात्। तन्मंदफलं भवति इदं यथागतं धनर्णं सम्पूर्णमध्यग्रहेदेंयंसमंदः स्पष्टोभवति। इदं मंदफलंपूर्वशीघ्रकेन्द्रमध्येधनंचेद्धनं, ऋणंचेदृणं देयं। द्वितीयशीघ्रफल साधने शिघ्रकेन्द्रं भवति। अथवा शीघ्रोच्चं मन्दस्पष्टमध्येशोध्यं शीघ्रकेन्द्रं भवति। अस्मात्पूर्ववत्शीघ्रफलंकार्यं। तन्मन्दस्पष्टग्रहेदेंयंस्पष्टग्रहो भवति।

अथ गतिसाधनं—मन्दफलसाधनेयन्मन्दाकान्तरं तेन स्वीयागतिर्गुणयेत्। फलंकलाद्यंतत्स्वगतौ मकरादिमन्दकेन्द्रे ऋणं कर्कादौ धनंकार्यं। सा मन्दस्पष्टागतिर्भवेत्। अनेनोनाशीघ्रोच्चगतिः शीघ्रगतिर्भवति। अन्तिमशीघ्रफलसाधनमच्छीघ्रांकान्तरंतेनान्तरेणशीघ्रगतिर्गुण्या षष्ट्याभाज्याफलं अग्रिमकोष्टकवशान्मन्दस्पष्टगतौ धनर्णंकार्यं सा स्पष्टागतिर्भवेत्। विपरीतशोधनेन वक्रागतिः। उदाहरणं:—भौममध्ये ९।२९।२१।१३ एतस्यशीघ्रोच्चं रविः १।४।५७।२४ शोधितः जातंशीघ्रकेन्द्रं ८।२४।२३।४९ षड्भाधिकं अतश्चक्रात् १२ शोधितं ३।५।३६।११ अस्यांशाः ९५।३६।११ शीघ्रफलंधनं ३४।२२।३८ अस्यार्धेन १७।११।१९ संस्कृतोभौमः १०।१६।३२।३२ एतन्मध्ये मन्दोच्चं ४।१० शोधितं जातंमन्दकेन्द्रं ६।६।३२।३३ मन्दफलंधनं १।२९।३६ मध्यंभौमेदत्तंजातोमन्दस्पष्टोभौमः १०।०।५०।४९ तन्मन्दफलं प्रथमं शीघ्रकेन्द्रस्य धनंदत्तं जातं द्वितीयशीघ्रकेन्द्रं ८।२५।५३।२५ अस्मातप्राग्वत् शीघ्रफलं धनं ३३।५८।४५ शीघ्रफलसंस्कृतोमन्दफलस्पष्टोजातः स्पष्टोभौमः ११।४।४९ ३४ मन्दांकान्तरेण १४ गतिर्गुणिता ४४।०।४ षष्टिभक्ता फलंकर्कादिकेन्द्रत्वात्धनं ७।२०

अनेनसंस्कृतामध्यगतिः ३१।२६ जातामन्दस्पष्टागतिः ३८।४६ अनेनोनाशीघ्रोच्चगतिः ५९।८ जाताशीघ्रकेन्द्रगतिः २०।२२ इयंशीघ्रांकांतरेण १६ गुणिता ३२५।५२ षष्टिभक्ताफलं ५।२५ अनेनसंस्कृतामन्दस्पष्टागतिर्जातास्पष्टागतिः ४४।११ इति भौमस्पष्टीकरणम्।

अथ बुधस्पष्टीकरणं—शीघ्रकेन्द्रे १०।३।१२।५२ शीघ्रफलार्धं ७।१०।६ संस्कृतोबुधः १।१२।७।३० मन्दोच्चं ७।१० रहितं मन्दकेन्द्रं ६।२।७।३० मन्दफलं धनं ०।१०।३६ मध्यग्रहेदत्तं मन्दःस्पष्टं १।५।८।० तन्मन्दफलं प्रथमशीघ्रकेन्द्रे दतं जातं द्वितीयशीघ्रकेन्द्रं १०।३।२३।२८ अस्मात्पुनः शीघ्रफलं धनं १४।१७।५५ मन्दस्पष्टोदत्तंजातस्पष्टोबुधः १।१९।२५।५५।

मन्दांकान्तरेणगतिर्गुणिताः २१।५।४० षष्टिभक्ताफलं ४।५५ मकरादिकेन्द्रत्वाद्दणंमन्दस्पष्टागतिः ५४।१३ अनेनोनाशीघ्रोच्चगतिर्जीवाशीघ्रकेन्द्रगतिः १९१।१९ इयंशीघ्रांकान्तरेण १३ गुणिता २४८७।७ इष्टिभक्ताः फलं ४१।२७ अनेन संस्कृताजातास्पष्टागतिः ९५।४० इतिबुधस्पष्टीकरणम्॥

अथ गुरुस्पष्टीकरणं—गुरुमध्ये ४।७।१२।३७ सूर्यः १।४।५७।२४ शोधितः शीघ्रकेन्द्रः ३।२।१५।१३ फलार्धंऋणं ५।४१।२२ संस्कृतोगुरुः ४।१।३१।१५ मंदोच्चेन ५।२० हीनंमन्दकेन्द्रं १०।११।३१।१५ फन्दफलं धनं ३।४३।२६ मन्दस्पष्टोगुरुः ४।१०।५६।३ मन्दफलं प्रथमशीघ्रकेन्द्रेदत्तंजातंद्वितीयंशीघ्रकेन्द्रं ३।५।५८।३९ तत् शीघ्रफलंऋणं ११।२८।५८ स्पष्टोगुरुः ३।२८।२७।३५। मन्दांकान्तरेण ३ गति ५ निघ्ना १५ षष्टिभक्ताफलं ०।१५ फलं मकरादित्वाद्दणं ४।४५ जातामन्दस्पष्टागतिः। अनेनोनाशीघ्रोच्चगतिः ५९।८ जाताशीघ्रकेन्द्रगतिः ५४।२३ इयं शीघ्रांकान्तरेणगुणिता ५४।२३ षष्टिभक्ताफलं मन्दस्पष्टगतौ धनं जातास्पष्टागतिः ५।३९ इति गुरुस्पष्टीकरणम्।

अथ शुक्रस्पष्टीकरणं—शुक्रशीघ्रकेन्द्रं ८।२४।४०।१७ फलार्धंऋणं १८।५०।७ संस्कृतः शुक्रः १।२३।४७ ३१ मन्दोच्चं २।२० मन्दकेन्द्रं ११।३।४७।३१ मन्दफलं धनं ०।४९।२५ मन्दःस्पष्टः शुक्रः १।५।४६।४९ शीघ्रकेन्द्रं ८।२५।२९।४३ शीघ्रफलं धनं ४७।२४।६ स्पष्टः शुक्रः २।१३।१०।५५ मन्दांकान्तरेण २ मन्दस्पष्टागतिः ५७।१० अनेनोनाशीघ्रागतिः ९६।८ जाता शीघ्रकेन्द्रगतिः ३८।५८ शीघ्रांकान्तरं २० शीघ्रगतिफलं धनं १२।५९ स्पष्टागतिः ७०।९ इतिशुक्रः।

अथ शनिस्पष्टीकरणं—शीघकेन्द्रं ९।२५।३१।२७ शीघ्रफलार्धधनं २।४३।३।२७ संस्कृतः शनिः ११।३। २ १८ मन्दोच्चं ७।२६ मन्दकेन्द्रं ३।७।१२।१८ मन्दफलंऋणं ७।३८।४६ मन्दः स्पष्टः १०।२२।५०।५ शीघ्रकेन्द्रं ९।१७।५।४१ शीघ्रफलं धनं ५।४८।२२ स्पष्टः शनिः १०।२८।३८।२७ मन्दांकान्तरं १ मन्दस्पष्टगतिः २।२ शीघ्रकेन्द्रगतिः ५७।६ शीघ्रांकान्तरंधनं २।५१ स्पष्टागतिः ४।५३ अथसौरभोपरिकिञ्चित्स्थूलं रव्यादिग्रहाणांस्पष्टीकरणं तत्रादौ अभीष्टदिवसे उक्तवत्ग्रहवल्लीसाध्या तदुपरिस्वस्ववाटिकायां घटिकादिग्रहः कार्यः॥ तस्य कन्द इतिसंज्ञाकार्या तदनन्तरंदेशान्तरसंस्कारः कार्यः। सा तथा। यस्य ग्रहस्यकलात्मकं देशान्तरं तत्तद्भक्तं कलात्मकेन पलेन घटिकादिग्रहस्य पलस्थाने धनं चेत् सहितं ऋणंचेत्तदा रहितं कार्यं। अस्य विकलात्मकं देशान्तरस्तद्भक्तंकलात्मकेन पलेन घटिकादिग्रहस्य पलस्थाने धनं चेत्सहितं ऋणंचेत्तदा रहितं कार्यम्। यस्य विकलात्मकदेशान्तरंतत्तषट्भक्तं विपलात्मकेन विपलस्थाने सहितरहितंकार्या। तदनन्तरमब्दबीजसंस्कारः कार्यः। तद्यथा—अंशादिबीजषट्भिर्भाज्यम्। तेन घटिकादिग्रहः संस्कार्य इति आदौ कृत्वा तत्स्पष्टीकरणं। तत्रादौ सूर्यस्य सूर्यकन्दस्य घटीतुल्यं रविसौरभस्थं कोष्टकादधस्थं घटिकादिफलं ग्राह्यं, अग्रिमान्तरेण शेषं गुणनीयं। षष्टिभाज्यं कलात्मकेन पूर्वस्थापितघटिकादिपलस्थाने युतंकार्यं। अग्रिमस्या-

धिकत्वात्। एवंकृतेघट्यादिस्पष्टोरविर्भवति। तदनन्तरंषड्गुणः कार्यः, अंशादिर्भवति। अंशाश्त्रिंशभक्ता-राशयो भवन्ति। उदाहरणं—पूर्वानीतेरविकन्दः ५।४९।४१।५४ देशान्तरंऋणं ७।५० संस्कृतः ५।४९।३४।४ पंचकोष्ठकादधस्थघटिकादिफलं ५।१६।१२ अग्रिमान्तरेण ५८।१७ शेषं ४९।३४।४ गुणितं २८८८ षष्टिभक्तं फलं ४८।८ अनेन घटिकाद्यं ६।४।२० युतंषड्गुणितंजातोराश्यादिस्पष्टोर्कः १।६।२६।० ।

अथ गतिसाधनं—गतगम्यकोष्ठान्तर एकेनान्तरितंकार्यं। तस्य कलाः कार्याः गतगम्यान्तरोपक्षयारूपा-धिकत्वेमध्यगतौ रहिता। ये न्यूनेयुताः कार्या रवेः स्पष्टागतिर्भवति। उदाहरणं—गतगम्यान्तरं ०।५८।१७ एकेनान्तरितं ०।१।४३ कलीकृतंगतगम्यान्तरापेक्षयारूपाधिकत्वात्। अनेन हीना रविमध्य गतिः ५७।२५ ।

अथ चन्द्रस्पष्टीकरणं—ऊर्ध्वांके पंचचत्वारिंशद्युताजाताचन्द्रोच्चवल्ली तस्य लता इतिसंज्ञाकार्यातल्लतो-परिचन्द्रसौरभोपरिचन्द्रसौरभस्य सानुपातघटिकादिफलं ग्राह्यं। तच्चन्द्रकन्देषु योज्यं तदनन्तरं षड्गुणितं कार्यं स स्पष्टचन्द्रोभवति। सर्वत्रानुपाते षष्टिर्भाजकः। उदाहरणं—लता ४२।४१।६।३७ देशान्तरं ०।५० संस्कृतांलता ४२।४१।५।४७ चन्द्रसौरभस्थंद्विचत्वारिंशत्कोष्टकादधस्थं सानुपातं घटिकादिफलं ०।४८।५।२८ चन्द्रकेन्द्रः ३५।२।१२।७ देशान्तरं १।४१।२० संस्कृतं ३१।१०।२६।४७ फलेन युक्तः ३५।२३।१५ षड्गुणितः स्पष्टचन्द्रः ७।४।५६।१९ अथगतिः—द्विचत्वारिंशत्कोष्टकादधःस्थंसानुपातघटिकादिचन्द्रगतेः फलं २।१४।३५ षड्गुणं जाता अंशाः १३।२७।३० षष्ट्यागुणिता स्पष्टाचन्द्रगतिः कलाद्या ८०७।३० ।

अथ भौमस्पष्टीकरणं—भौमकन्दमध्ये रविकन्दःशोध्यः। यच्छेषं तस्य लतासंज्ञा कार्या। लताया-घटीप्रमितकोष्ठकादधःस्थं भौमसौरभस्थं सानुपातं घटिका फलं ग्राह्यं। तत्फलं भौमकन्देषुयोज्यं। तदुप-कन्दसंज्ञकं भवति। उपकन्दोपरि उपकन्दस्थं सानुपातं घटिकादिफलंग्राह्यम्। तत्फलंभौमकन्दमध्ये योज्यं-सुकन्दो भवति। लतामध्ये योज्यं सुलता भवति। सुलतोपरि सुलताफलं सानुपातं घट्यादिफलं ग्राह्यम्। तत्फलं सुकन्देषु योज्यं तदनन्तरं घटिस्थाने दशभि रहितंकार्यं। तन्मकरन्दसंज्ञकं भवति। तदनन्तरं षड्-गुणितं भौमः स्पष्टो भवति। अनयारीत्या गुरुशन्योः स्पष्टीकरणं। बुधशुक्रयोः साधितांकचतुष्टययोगे-घटिकादिकेन्द्रवल्ली सैव लता ज्ञेया। रविकन्द एव बुधशुक्रयोः कन्दौ-अनयोः स्पष्टीकरणं। रविकन्दः ५।४९।३४।४ भौमकन्दः ४९।५३।३६।१८ देशान्तरं ४।१० संस्कृतः ४९।५३।३२।८ एतन्मध्ये रविकन्दशोधिता जाता लता ४४।३।५८।४ लतोपरि प्राप्तं सौरभस्थंघटिकादिफलं ४१।१२।७ अग्रिमान्तरे ८।२८ अनुपातफलं ०।३३।३५ अनेन पूर्वंफलं संस्कृतं ४१।११।३३।२५ इदं भौमकन्दमध्ये युतं जातोपकन्दः ३१।५।५।३३ एतदुपरि प्राप्तं उपकन्दफलं सानुपातं २।१४।५०।९ अनेनयुक्तो भौमकन्दः जातः सुकन्दः ५२।८।२६।२७ पुनः फलेन युता जाता सुलता ४६।१८।४८।१३ सुलतोपरिप्राप्तं सुवल्लीफलं १३।३९।४१।५५ अनेन सुकन्दोमुक्तः ६५।४८।४।१२ दशभिर्हीनोजातोमकरन्दः ५५।४८।४।१२ षड्गुणितः जातो राश्यादिः स्पष्टो भौमः ११।४।४०।२५ ।

अथ गतिसाधनं—भौमस्योपकंदफलयोर्गतगम्ययोरन्तरेण गतिर्गुणनीया। तन्मन्दफलं भवति। इदं मध्यगतौ गम्यस्याधिकत्वे युतं न्यूनत्वे ऋणं। सा मन्दस्पष्टागतिर्भवति। अनेनोनाशीघ्रकेन्द्रगतिः शीघ्रोच्च-गतिर्भवति। इयं सुवल्लीफलान्तरेण गुण्या गतेः शीघ्रफलं भवति। तेन फलेन गतैस्यांकस्याधिकत्वे मन्दस्पष्टा-गतिर्भवति। अनयारीत्या बुधशुक्रशनीनां गतिसाधनं कार्यं। उदाहरणं—उपकंदफलयोरन्तरं ०।१३।२३ गतिः ३।२६ गुणिताजातंमन्दफलंरब्यांकस्याधिकत्वाद्धनं ७।०।४१ अनेन युता मध्यगतिः जाता मन्दस्पष्टा ३८।२७ अनेन रहिता शीघ्रोच्चगतिः ५९।८ जाताशीघ्रकेन्द्रगतिः २०।४१ इयं सुवल्लीफलान्तरेण ०।१६।५५ गुणिताजातं शीघ्रगतेः फलं एष्यांकस्य हीनत्वाद्धनं ५।४९।५३ अनेन युतामन्दस्पष्टा गतिः जाता स्पष्टा ४४।१७

अथ बुधस्पष्टीकरणं—लता ५१।३४।३३।५४ शीघ्रकेन्द्रगति प्रमाणेन देशान्तर २।२५।२४ संस्कृता ५१।३२।८।३० अनेन बुधकन्दः ५।४९।३४।४ युतोजात उपकन्दः ५७।२०।४२।३४ अस्मादुपकन्दफलं २।१।४६। ३९ अनेन कन्दोयुक्तः जातः सुकन्दः ७।५१।२०।४३ लतायुता जाता सुलता ५१।३३।५५।९ सुवल्लीफलं १०।२३।६ २८ अनेन सुकन्दोयुक्तः १८।१४।२७।११ दशभिर्हीनोजातोमकरन्दः ८।१४।२७।११ षड्गुणितो-जातोराश्यादिः स्पष्टोबुधः १।१९।२६।४३ उपकन्दकलयोरन्तरं ०।५।९ धनंमन्दस्पष्टागतिः ६४।१२ शीघ्रकेन्द्र-गतिः १८।१।२१ सुवल्लीफलयोरन्तरं ऋणं ०।१२।४७ स्पष्टागतिः १०२ ५० ।

अथ गुरुस्पष्टीकरणं—रविकन्दः ५।४९।३४।४ गुरुकन्दः २१।४३।३१।५८ देशान्तरं ०।४० संस्कृत २१।४३।३१।१८ बीजऋणं ०।३१।२५।१० संस्कृत २१।१२।६।८ एतन्मध्ये रविकन्दः शोधितः जाता लता १५।२२।३२।४ सौरभोपरिफलं ३०।२९।४४।५१ अनेन गुरुकन्दोयुक्तः जात उपकन्दः ५१।४१।५०।५९ उप-कन्दफलं २।३८।१।४९ अनेन कन्दोयुक्तो जातः सुकन्दः २३।५०।७।५६ सुलता १८।०।३३।५३ सुवल्लीफलं ६।५।१६।४४ अनेन सुकन्दोयुक्तः २९।५५।२४।४१ दशहीनोजातोमकरन्दः १९।५५।२४।४१ षड्गुणितो-राश्यादिस्पष्टोगुरुः ३।२९।३२।२८ उपकन्दफलयोरन्तरं ऋणं ०।३।२२ मन्दस्पष्टागतिः ४।४४ शीघ्रकेन्द्रगतिः ५४।२४ सुवल्लीफलयोरन्तरं ऋणं ०।२०।२९ स्पष्टागतिः ५।१० ।

अथ भृगुस्पष्टीकरणं—शुक्रलता ४३।१९।३०।१९ देशान्तरं ४।५० संस्कृता ४३।१९।२५।२९ बीजंधनं ०।४७।७।४० संस्कृतालता ४४।६।३३।९ सौरभस्थंफलं ४९।३९।३३।८ अनेन शुक्रकन्दो ५।४९।३४।४ युक्तोजात उपकन्दः ५५।२९।७।१२ उपकन्दफलं २।८।१४।२७ सुकन्दः ७।५७।४८ ३१ सुलता ४६।१४।४७।३६ सुवल्ली-फलं १४।१३।२७।५१ अनेन सुकन्दोयुक्तः ६४।४६।२८।० मकरन्दः ५४।४६।२८।० षड्गुणः स्पष्टः शनिः १०।२८।३८।४८ उपकन्दफलयोरन्तरंधनं ०।० ४४ मन्दस्पष्टागतिः ५७ ७ सुवल्लफलयोरन्तरंऋणं ०।०।२० स्पष्टागतिः ४।१४ ।

अथायनांशसाधनं—इष्टशकः कुर्यामाब्धिहीनाः कार्याः तदनन्तरं स्वदशमांशेन हीनः कार्यः । स्पष्ट्या भाज्यः । अयनांशाभवन्ति । उदाहरणं—इष्टशकः १५३४ अनेन ४२१ हीनः १११३ अयं द्विष्टः अस्य दशमांशेन १११।१८ रहितः १००१।४२ षष्टिभक्ता जाता अयनांशाः १६।४१।४२ ।

अथ दिनमानसाधनं—स्पष्टः सूर्य अयनांशयुक्तः कार्यः तस्यांशाः षड्भिर्भाज्या लब्धिकोष्टकादधः स्थं घट्यादिफलंस्थाप्यं तद्दिनमानरूपं । अग्रिमकोष्टकान्तरेण शेषं गुण्यं । षड्भक्तानिलब्धानि पलानि । एतानि पूर्वस्थापितदिनमानफलस्थाने अग्रिमकोष्टकवशात् सहितानि रहितानि वा कार्याणि । तद्दिनमानं भवेत् । उदाहरणं—सूर्यः १।६।२६।० अयनांशैर्युक्तः १।२३।७।४२ अंशाः ५३।७।४२ षड्भिर्भक्ताफलं ८ एतत्तुल्यकोष्टकस्थंदिनमानं ३२।५४ अग्रिमान्तरेण १८ शेषं ५।७।४२ गुणितं ९२।१८।३६ षड्भिर्भक्तंलब्ध-पलानि १५ एतानि अग्रिमस्याधिकत्वात् पूर्वस्थापितदिनमान पलमध्ये युतं जातं दिनमानं ३३।९ ।

अथ प्रकारान्तरेण रवेः प्रतिराशिप्रत्यंशोपरिदिनमानसाधनं—स्पष्टांकस्थाप्यः । अत्रायनांशसंस्कारो-नास्ति रवेर्यावतोराशयस्तदधोयावन्तोभागाः सन्ति ततुल्यराश्यंशसूर्योदधःस्थं दिनमानं ग्राह्यं । अग्रिमान्तरेण गुण्यं षष्ट्याभाज्यं । पलात्मकं लब्धं पलस्थाने अग्रिमकोष्टकवशात् रहितसहितं कार्यं तद्दिनमानं स्यात् । उदाहरणं-सूर्यः १।६।२६।० एतत्तुल्यसूर्योदधस्थंदिनमानं ३३।५ अग्रिमान्तरेण ३ शेषं २६ गुणितं ७८ षष्ट्या भक्तं फलं १ अनेन संस्कृतं जातं स्पष्टं दिनमानं ३३।६

अथ चन्द्रदर्शनम्—यस्मिन्मासे शुक्लप्रतिपदिचन्द्रदर्शनमवलोक्यते तस्मिन्मासि तद्दिने सूर्योयद्राशावस्तितद्राशिस्थः सूर्यस्तिर्यक्पंक्तौ यस्मिन् कोष्टके भवति स कोष्टकोग्राह्यः। तदनन्तरं यस्मिन् राशौ राहुरस्ति तद्राशिस्थौ राहु ऊर्ध्वपंक्तौ यस्मिन् कोष्टके भवति तत्कोष्टकादधस्तात् सूर्यकोष्टकाभिमुखीघटीग्राह्या। तदनन्तर अमावास्यायाः विद्यमानघटिकास्ताः षष्टि घटिकामध्ये शोध्याः तदनन्तरं यच्छेषं भवति तद्दिनजं दिनमानं तन्मध्ये योज्यं। एवंकृते या घटिका भवन्ति ताः पूर्वस्थापितघटिभ्यश्चेदधिकास्तदा प्रतिपदिचन्द्रो दृश्यः न्यूने अदृश्यः। किन्तुद्वितीयायांदृश्यः। उदाहरणं—सूर्यः ४।२० राहुः १०।२ अत्र रविः ५ सिंहे कुंभेराहुः। अनयोः प्राप्तघटी ८२ अमावास्याः घटिकाः १।४० षष्टिमध्ये शोधिताः ५८।२० शेषं दिनमानेन युक्तं। ३१।२४ जाताः ८९।४४ एता आभ्य ८२ अधिका अतोत्र प्रतिपद्येव चन्द्रदर्शनम्।

अथभौमादीनां वक्रमार्गोदयास्तसाधनं—अन्तिम शीघ्रफलसाधने यच्छीघ्रकेन्द्रं तस्य चक्रशुद्धस्यांकाः कार्याः प्रोक्तांशानां इष्टशानां च साम्ये तस्मिन्नेवदिने वक्रादिकंस्यात्। न्यूनाधिके तद्दिवसानयनम्—प्रोक्तेष्टांशानामन्तरकलाः कार्याः शीघ्रकेन्द्रगत्या भाज्याः। लब्धं दिनघटी पलाद्यं ग्राह्यं प्रोक्तांशेभ्य इष्टकेन्द्रांशा अधिकास्तदालब्धेन अवधिस्थं वारादिकं रहितं कार्यं। तद्वारघटीपलेषु वक्राद्यं स्यात्। अस्तोदयावितिदिवाकरपद्यं। अथभौमादीनां चरणगतिसाधनं। भपादेतिदिवाकरपद्यं। वैशाखशुक्ल ५ शनावधिःस्थो भौमः ३।२६।१।३९ आश्लेषा चतुर्थ चरणे भौमः ३।२६।४० अनयोरन्तरं कलाः ३८।२१ अवधिस्थ भौमगत्या १९।२३ भक्ताः फलं दिनादिकं १ ५८।११ इदमवधिस्थवारादौ ०।४६।३४ युतं २।४४।४५ भपादजं भौमात् अवधिस्तस्य न्यूनत्वात्। एवं वैशाख शुक्लसप्तम्यांसोमे सूर्योदयाद्गतघटीषु ४४ पलेषु ४५ तदा श्लेषाचतुर्थपादे भौमः।

अथचन्द्रग्रहणं—पूर्णिमान्ते यद्विद्यमानं नक्षत्रं तस्य गतैष्यघटिकायोगः कार्यः तत्तुल्यघटिकाधःस्थं चंद्रबिम्ब पातबिम्बंनाम भूभाबिम्बं ग्राह्यं। अग्रिमान्तरेण शेषफलादिगुण्यानि। षष्ट्याभक्तेन लब्धाङ्गुलैरग्रिमकोष्टकवशात् सहित रहितानि कार्याणि। अंगुलात्मकं चन्द्रबिम्बं। भूभाबिम्बं च भवति। अथ भूभायाः संस्कारः। पौर्णमास्यां यद्राशौ सूर्यसंक्रान्तिरस्ति तद्राश्यधःस्थमङ्गुलादिकं पातफलं स्थाप्यम्। अग्रिमान्तरेण सूर्यस्य भागाद्यं गुण्यं। त्रिंशताभाज्यंज्यंगुलात्मकफलेन अग्रिम कोष्टकवशाद्धीनान्वितं कार्यं मनेन भूभायुता कार्या। सा स्पष्टा भवति पातफलं सदाधनं तदनन्तरं रविचन्द्रयोर्बिम्बयोर्योगार्धं कार्यं। तन्मानैक्य खण्डं भवति। तत्शरोनं कार्यं ग्रासो भवति। उदाहरणं–शकः १५३४ वैशाखशुद्ध १५ सोमे घटी ५४।४० अनुराधानक्षत्रस्य। गतैष्ययोगः ५८।३६ सूर्यः १।६।३०।३७ चंन्द्रः ७।६।३४।३५ राहुः १।१४।१८।११ अष्टपञ्चाशतघटिकाधःस्थं चन्द्रबिम्बं ११ १० अग्रिमान्तरेण ११ शेषंगुणितं ३९६ षष्ट्या भक्तं फलेन संस्कृतं जातं चन्द्रबिम्बं ११।४ भूभाबिम्बं २८।१६ अनुपातपलेन २२ संस्कृतः २७।५४ वृषसंक्रान्ताधस्थं फलं ०।३१ अग्रिमान्तरेण ६ शेषंगुणितं ३४।३७ जातं ३९ त्रिंशद्भक्तं फलेन १ संस्कृतं ०।३२ अनेन भूभा युता जातास्पष्टा भूभा २८।२६ अनयोर्योगार्धंजातं मानैक्यखण्डं १९।४५।

अथ शरसाधनं—पर्वान्तकालीनः सपातश्चन्द्रः कार्यः। अथवा विराहुश्चन्द्रकार्यः। षडधिकश्चेद्भगणाद्विशोध्यः। न्यूनोयथास्थितएव। तस्यांशाः कार्याः लब्धप्रमितकोष्टकस्थः अंगुलाद्यः शरोग्राह्यः। अग्रिमान्तरेण शेषं गुण्यं षट्भक्तं लब्धांगुलैः संस्कार्यः अंगुलात्मकः शरो भवति। उदाहरणं—विराहुश्चन्द्रः तस्यांशाः १७।२।१६।२४ षड्भक्ताः फलं २८।१२।४३ शरः अनुपातफलेन ६।२७ संस्कृताजाताः शरोंगुलादिः १२।६ अनेन रहितं मानैक्यखण्डंजातोग्रासः ७।३९ अथ स्थित्यानयनं—ग्रासस्यांगुल प्रमितकोष्टकादधः स्थास्थितिः

स्थाप्या अग्रिमान्तरेण व्यंगुलानि गुण्यानि षष्टिभक्तं लब्धपलैः सहिताः कार्याः घटिकादिस्थितिः स्यात्। उदाहरणं—ग्रासः ७।३९ स्थितिः ३।३५ अनुपातफलेन ७ सहिता जाता घटिकादिस्थितिः ३।४२ अन्यदवशिष्ट करणोक्तरीत्या साध्यम्। इतिचन्द्रग्रहणम्।

अथसूर्यग्रहणं—शकः १५३२ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० बुधे घटी ११।५९ सूर्यः ८।५।२६।२० लग्नं ११।२। ५।३४ त्रिभोनं अमावाश्यायत्संक्रान्तौ भवति तत्संक्रान्ति राश्यधस्थ सूर्यबिम्बं स्थाप्यं। अग्रिमान्तरेण सूर्यस्य भागाद्यं गुण्यं त्रिंशद्भक्तं अंगुलात्मकं फले अग्रिमकोष्टकवशाद्धीनान्वितं कार्यं। अंगुलाद्यं सूर्यबिम्बं भवति। उदाहरणं—धनुराशौ सूर्यबिम्बं ११।४४ आयातव्यंगुलैः संस्कृतंजातं रविबिम्बं ११।२४ अथ लम्बनं—त्रिभोनलग्नार्कान्तरांशाः ते यथा राशित्रयाल्पा भवन्ति तथा कार्याः। तदनन्तरं षड्भिर्भाज्याः लब्धप्रमित पञ्चदशाधःस्थघटिकादि लम्बनं ग्राह्यम्। अग्रिमान्तरेण शेषं गुण्यं षड्भिर्भाज्यं लब्ध पलैः सहितं घटिकादि लम्बनं स्यात्। सूर्यात् त्रिभोनलग्नेधिकेसति धनं। न्यूने ऋणं ज्ञेयम्। उदाहरणं—त्रिभोनलग्नार्कान्तराशाः ३ २०।४६ षड्भिर्लब्धंशून्यं। शून्यादधःस्थंघटिकादिलम्बनं ०।०।० अग्रिमान्तरेण २४ २५ शेषं ३।२०।४६ गुणितं ८१।८२।३ षड्भिर्भक्तलब्धं पलादिकैः १३।५८ सहितञ्जातङ्घटिकादिलम्बनं ०।१४ अन्यदवशिष्टं पूर्ववत्। एतत् पञ्चदशकोष्टकस्थलम्बनस्यांको परिग्रहणं स्थूलं। क्रान्तिसाधनमाह—सायन ग्रहस्य भुजांशाः कार्याः। षड्भिर्भाज्याः लब्धप्रमितकोष्ठकस्था घटिकाद्या क्रान्तिः स्थाप्या। लम्बनवदनुपातः कार्य तदनन्तरंषड्गुणिताः कार्याः भागादिक्रान्तिः स्यात्। उदाहरणं—सूर्यः ८।५।२६।२० अयनांशाः १६।३९।५४ सायनसूर्यः ८।२२।६।१४ अस्य भुजांशाः ८२।६।१४ षडभक्ताः लब्धं १३ घटिकादिक्रान्तिः ३।५४।२६ पलात्मकेनानुपातेन २।५४ सहिता ३।५७।२० षड्गुणिताजाता भागाद्याक्रान्तिः २३।४४ ग्रन्थकर्त्राएते पञ्चदशकोष्टकस्था लम्बनस्थांकाः अन्ये पञ्चदशकोष्ठेषु विपरीता स्थापिताः। एवं त्रिंशत्कोष्ठेषुक्रान्त्यंकाजाताः। अस्योपरिक्रान्तिसाधनं। सायनग्रहः षड्भाधिकश्चेच्चक्राद्विशोध्यः तस्यांशाःकार्याः षड्भिर्भाज्याः लब्धकोष्टकस्थाघटिकादिक्रान्तिः। पूर्ववत्सानुपातात्ग्राह्याः अत्रानुपातफलं अग्रिमकोष्टवशाद्धीनान्वितङ्कार्यं। इयं क्रान्ति पूर्वेण सह तुल्या। उदाहरणं—सायनसूर्यः ८।२२ ६।१४ भगण १२ च्युता ३।७।५२।४६ अंशाः ९७।५३।४६ षडभक्ताः फलं १६ क्रान्तिः ३।५८।३६ अनुपातफलेन १।१६ रहिता षड्गुणिता सैव क्रान्तिः २३।४४ अथ सूक्ष्म क्रान्ति साधनम्—सायनग्रहस्य भुजांशप्रमित कोष्टकस्थाभागाद्या क्रान्तिः स्थाप्या। अग्रिमान्तरेण कलाद्यं गुण्यं षष्ट्याभागेन कलात्मकेन फलेन सहितं कार्यं भागाद्याक्रान्तिः स्यात् २३।४४।५८ अथ शरसाधनं—सपात चन्द्रस्य। अथवा विराहुचन्द्रस्यभुजांशप्रमितकोष्ट कस्थः कलादिः शरो ग्राह्यः अग्रिमान्तरेण शेषंगुण्यं षष्ट्या भाज्यं विकल्पात्मकेन फलेन सहितं कार्यं कलादिबाणः स्यात्। त्रिभिर्भाज्योङ्गुलादिः स्यात्। उदाहरणं—विराहुचन्द्रस्य भुजांशाः ७।४३।४६ शरः ३२।५२ अनुपातफलेन ३।२४ सहितोजातः कलादिः शरः ३६ १६ त्रिभिर्भक्तोजातोङ्गुलाद्यः शरः १२।५ अथोन्नतांशोपरि द्वादशाङ्गुलशंकोः छायासाधनं—उन्नतांशप्रमित कोष्ठाधस्थांका स्थाप्यं अग्रिमान्तरेण शेषं गुण्यं षष्ट्याभाज्यं फलेनाग्रिमकोष्टकवशात्सहितंरहितंकार्यम्। छाया भवति। अथाश्विन्यादीनां नक्षत्राणा मुदयमध्यास्तलग्नज्ञानं—अश्विन्युदयेमेषलग्नराश्यादि ०।१।२६।५२ रवेर्मध्यस्थित कर्कलग्नं राश्यादि। ३।१४।२६ अस्तमयेतुलालग्नं राश्यादि ६।१२।५८ एवं भरण्यादिषु ज्ञेयं। इति विश्वनाथविरचितं मकरन्दस्योदाहरणंम्।

अथ संवत्सराद्यानयनमाह—तत्रादौसम्बत्सरानयनमाह। "शकाच्चेन्दु १५१४ वियुकशकोनग ७

गुणः शून्यांबरांशोद्धृतो ६०० । भाद्यं लब्धमिताब्दवेददहनाढ्यं ३४ शाब्दभूपेदुतः । दिग्भागाःसकला-युतं प्रभवतोब्दाः षष्ठि शेषाः स्मृताः शेषांशा रविभिर्हता दिनमुखं भेषार्कतः प्राग्भवेत् । १ ।" उदाहरणं— शकः १५५६ अनेन १५१४ रहितः जाता गताब्दाः ४२ सप्तभिर्गुणिताः २९४ शून्यांबरांगो ६०० द्धृतः फलं-राश्यादि ०।१४।४२।० राशिस्थाने गताब्दः ४२ वेददहनाभ्यांयुतः ७६।१४।४२।० गताब्दयुतभूपेन्दुतः १५८ दिग्भागा १०सकला १५।१८ युतं ७६।१४।५७।४८ ऊर्ध्वांकः षष्ट्यातष्टः शेषांकः १६ गतवत्सरोज्ञयः वर्तमानः सुभानुसंवत्सरः शेषं १४।५७।४८ द्वादशभिर्गुणितञ्जातं दिनादिकं १७९।३३।३६ दिनस्थाने त्रिंशद्भक्तं जातं मासादिकं ५।२९।३३।३६ एभिर्मासादिकैर्वर्तमानवर्षस्थमेषसंक्रान्ति सकाशात् पूर्वप्रवृत्तः सुभानुवत्सरः इदं द्वादशमध्ये शोधितेशेषं ६।०।२६।२४ एवं वर्तमान तुलांशकः ०।२६।२४ यावत्सुभांनुवत्सरः । तदनन्तरं-तारणाख्यः । एवं वर्षमध्ये द्वयोःफलं लेख्यं । दाक्षिणात्याः नर्मदायाः दक्षिणेभागे मनुजमानेन संवत्सर-प्रवृत्तिमाहुः । उक्तंच । "नर्मदोत्तर भागेस्यगुरुमानेन वत्सरः नर्मदायाम्य भागेतु मनु मानाद्बुधैः स्मृत." तदानयनं ।

शालिवाहनशाकोर्कसंयुतः षष्टिहतप्रभव पूर्ववत्सरानुमानेन ।
अथ गुरुदयात् गुरुवर्षज्ञानमाहस्यादूर्जादिषु मासेषु वह्निभादिद्वयंद्वयं ॥

उपांत्यपञ्चमान्तेषु नक्षत्राणांत्रयंत्रयं ।
यस्मिन्नभ्युदितोजीवस्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः ॥

तद्यथा । यस्मिन्समये गुरोरुदय तस्मिन्समये यस्मिन्नक्षत्रे गुरुस्तिष्ठति तन्नक्षत्रस्य यो मासः सगुरुवर्षसंज्ञ कोज्ञेयः कृत्तिकारोहिणीस्थितोगुरुः सूर्यसानिध्यादुदयं प्राप्तस्तदा कार्तिकसंज्ञकं गुरुवर्षं ज्ञेयं । मृगार्द्रयो मार्गशीर्षं ० । पुनर्वसुपुष्ययोः पौष । श्लेषामघयोर्माघः । पूर्वोत्तरा हस्तेषुफाल्गुनः । चित्रास्वात्योश्चैत्रः । विशाखानुराधयोर्वैशाखं० । ज्येष्ठामूलज्योर्ज्येष्ठसंज्ञं० । पूर्वोत्तराषाढ़ योराषाढ़ ० । हरिवासवयोः श्रावणं० । शततारका पूर्वाभाद्रपदोत्तराभाद्रपदासुभाद्रं । अंत्यदास्त्रयमानामाश्विनसं० । तत्र पंचमः फाल्गुनः अंत्यः आश्विनः उपांत्यो भाद्रपदस्तेषु प्रत्येकं नक्षत्रत्रययोगोज्ञातव्य । सूर्यसिद्धान्तवचनादस्तमय नक्षत्रादपि गुरुवर्ष ज्ञेयमिति । अत्रास्तमयोदयनक्षत्रमेकमेव बाहुल्यो न भवति । तथापि कदाचिद्विसंवादे उदयास्त भादिति उभयनक्षत्रोपादानादुभययुतानि मिश्रीभावेन वक्तव्यानि । गुरूदय दिनमारभ्योपक्रमइत्यहर्गणः । "प्रशंसति-सहर्क्षेणसहितोयुगपद्गुरुः । तस्मात्कालाददृश्यः स्यात्पूर्वस्याब्दः प्रवर्तते ।" ऋक्ष पूर्व इति वचनात् । कार्तिकादयोगुरूदयादब्दा उदितदिवसात् । प्रभवादयस्तु मध्यमगुरुराशि भोगादिति विवेकः । बहुसंमतत्वात् । गुरूदयाद्गुरोरब्दविचारणात् कर्तव्येत्यर्थः । गुर्वब्दफलं गुरूदयादग्रिमगुरूदयपर्यन्तं ज्ञेयम् । यस्मिन्वर्षे गुरूदय पुनर्वसु नक्षत्रे गुरुस्तिष्ठति इति कारणात् इदं पौष्य संज्ञकं गुरुवर्षं तस्य फलं लेख्यं । अथ राजादिनिर्णयः ।

चैत्रादिमेषादि कुलीरतौलिमृगाख्यमार्द्राधनुरादिवाराः ।
राजा चमूपस्य रसाधिपाश्च स्युर्नीरसेशांबुधिधान्य नाथाः ॥१॥

प्रतिपदियदिचैत्रेशुक्लपक्षे भवेतां कथमपि यदिवारौद्वौतदाभूपतिः कः ।
प्रथमदिवसवारः कीर्तितो गर्गमुख्यैर्गुणवति सतिडिंभे राज्यभाग् ज्येष्ठएव ॥२॥

डिंभोबालः । पोतःपाकोर्भकोडिंभ इत्यभिधानात् । काम्बोजादिदेशेषुविशेष उक्तः ।

कांबोजखार्जूरकिरातसिंधुदेशेषुबिल्वेष्वपिदर्दुरेषु ।
किंस्तुघ्नमध्याह्नगतोऽब्दपः स्यादन्येषुसूर्योदयगो दि(गीशः)नेशः ॥

अन्यच्च ।

प्रतिपद्दर्शसंधिश्च मध्याह्नात्पूर्वतोयदि ।
तदातद्दिनपोराजा परतश्चेत्परो भवेत् ॥

अत्र केचिच्चांद्रवर्षस्यप्रतिपदादितोदक्षिणे वर्षे प्रवेशात् तत्रत्यएववारोवर्षेश इत्याहुः पठंति च । फाल्गुनांतेकुहूराजेति । तदेतद्गुर्जरदेशेप्राचुर्येणवर्त्तते । दाक्षिणात्या औदयिकप्रतिपद्वारमेव राजानमाहुः । कश्यपः ।

चैत्रशुक्लाद्यदिवसेकिंस्तुघ्नेववकेथवा ।
अर्कोदये तु यो वारः सोऽब्दपः परिकीर्तितः ॥

चैत्रशुक्ल प्रतिपद्दिवसे यो वारः स राजा । मेषसंक्रान्तिदिवसे यो वारः स मन्त्री । कर्कसंक्रान्ति दिवसे यो वारः स सस्याधिपः । तुलासंक्रान्ति दिवसे यो वारः स रसाधिपः । मृगसंक्रान्ति दिवसे यो वारो स नीरसाधिपः । आर्द्रप्रवेशदिवसे यो वारः स मेघाधिपः । धनुःसंक्रान्तिदिवसे यो वारः स पश्चिमधान्याधिपः । अथवा ? तुलासंक्रान्तिदिवसे यो वारः स पश्चिमंधान्याधिपः । एतेषां फलानिक्रमतोलेख्यानि । तदनन्तरं यस्यांतिथौयस्मिन्वारे यस्मिन्नक्षत्रे यस्मिन्योगे आर्द्रप्रवेशस्तत्फलानि लेख्यानि । दिवारात्रौ वा प्रवेशस्तत्फलंलेख्यं । अथ नवमेघानयनं ।

गताब्दानवभिस्तष्टाः शेषं हाराद्विशोधयेत् ।
ततश्चावर्त्तसंवर्तद्रोणपुष्करकीलकः ।
नीलश्चवरुणोवायुस्तमोमेघाः स्मृतानव ॥

अत्र गताब्दानयनं । युग्मचन्द्रशरच्चन्द्र विहीनाः शालिवाहनशकात् गताः समाः । उदाहरणं—शकः १५५६ अनेन १५१२ रहिता जाता गताब्दाः ४४ नवभिस्तष्टाः शेषं ८ हरात् शोधितं १ आवर्तसंज्ञकोमेघस्तत्फलं लेख्यं केचित्तु मेघ चतुष्टयमाहुस्तदानयनं च ।

त्रिभिर्गताब्दाः सहिताश्चतुर्भिः शेषं भवेदंबुपतिः क्रमेण ।
आवर्त संवर्तक पुष्कराश्च द्रोणाश्चतुर्थो मुनिभिः प्रदिष्टः ॥

अत्रापिपूर्ववद्गताब्दानयनं ।

आवर्तेछिन्नवृष्टिः स्यात्संवर्तेजलपूरिताः ।
पुष्करे मन्दवृष्टिः स्यात् द्रोणो वर्षति सर्वदा ॥

अथद्वादशनागानयनम्

गताद्वाद्विपुता सूर्यभक्तास्तत्रावशेषिताः । सबुद्धोनन्दसारीच ककोर्टक पृथुश्रवाः ॥
बासुकिस्तक्षकश्चैवकंबलाश्वतरावुभौ । हेममाली नरेन्द्रश्च वज्रदंष्ट्रोवृषस्तथा ॥

अत्रापि पूर्ववद्गताब्दाज्ञेयाः । उदाहरणं—गताब्दाः ४४ द्वियुता ४६ द्वादशभिस्तष्टाः शेषं १० नरेन्द्रसंज्ञको नागस्तत्फलम् ।

केचित्तुनागाष्टकमाहुस्तदानयनं

शाकोरमाद्रिसंयुक्तो बसुभिर्भागशेषतः । अनन्तादिक्रमेणैव अष्टौनागाः प्रकीर्तिताः ॥
अनन्तोवासुकिः पद्मो महापद्मः सुतक्षकः । कुलीरः कर्कटः शंखश्चाष्टौनागा प्रकीर्तिताः ॥

अथ सप्तवातानयनं ।

शाकः शशांकसंयुक्ता मुनिभिर्भागहारितः । आवहादिक्रमेणैव सप्तवाताः प्रकीर्तिताः ॥
आवहः प्रवहश्चैव संवहोविवहस्तथा । उद्वहोतिग्रहश्चैव सप्तवाताः प्रकीर्तिताः ॥

अथः वर्षादि मानानयनं । महादेवः ।

शाकस्त्रिगुण्यो नगभाजितश्च शेषं द्विनिघ्नं शरसंयुतश्च ।
लब्धंच शाकञ्चपुनः प्रकल्प्य पूर्वोक्तवत्स्युः खलुविश्वकाख्या ॥
वर्षा च धान्यं तृणशीततेजो वायुश्चवृद्धिश्चय विग्रहौ च ।

एवंनवाभिहितानि । उदाहरणं—शाकः १५५६ त्रिगुणः ४६६८ सप्तभक्तः लब्धं ६६६ शेषं ६ द्विगुणं १२ शर ५ संयुतः १७ एते जातावश्वकाख्यावर्षा १७ लब्धं ६६६ त्रिभिगुणितं । १९९८ सप्तभक्तं २८५ शेषं ३ द्विनिघ्नं ६ शर ५ युतंजातंधान्यं ११ एवं लब्धोपरिसर्वज्ञेयं । तृणं ७ शीतं ९ तेजः ९ वायुः ११ वृद्धिः १७ क्षयः ९ विग्रहः ११ ।

शाकञ्चवेदगुणितं सप्तभिर्भागमाहरेत् ॥
शेषंद्विघ्नंत्रिभिर्युक्त प्रोक्तं विश्वाख्य संज्ञकं ।
क्षुधातृषातथानिद्रा चालस्यं चोद्यमस्तथा ॥
शान्तिः क्रोधस्तथादंभोलोभोमैथुनमेवच ।
ततस्तु रसनिष्पत्ति फलनिष्पत्तिरेवच ॥
उत्साहः सर्वलोकानां ज्ञातव्यं निश्चितं बुधैः ।

त्रयोदशोदाहरणम् । शाकः १५५६ चतुर्गुणिताः ६२२४ सप्तभक्ताः लब्धं ८८९ शेषं १ द्विघ्नं २ त्रियुतं ५ जाताक्षुधा । पुनर्लब्धं ८८९ चतुर्गुणं ३५५६ सप्त ७ भक्तं लब्धं ५०८ शेषं त्रियुतं तृषा ३ एवं लब्धोपरि

सर्वत्रज्ञेयं निद्रा ७ आलस्यं १३ उद्यमः ७ शांतिः १३ क्रोधः ७ दम्भः ५ लोभः १३ मैथुनं १५ रसोत्पत्तिः १५ फलानि ५ उत्साहः ११ ।

शकाब्दं वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत् ॥
शेषं तु द्विगुणीकृत्य रूपमत्रापि योजयेत् ।
उग्रंपापंच पुण्यं च व्याधिं व्याधिविनाशनम् ॥
आचारश्चाप्यनाचारोमरणं जनिरेवच ।
देशस्योपद्रवः स्वास्थ्यं चौराकुल भयंतथा ॥

अथैषांपञ्चदशानामुदाहरणं—शकः १५५६ अष्टगुणः १२४४८ नवभिर्भक्तः लब्धं १३८३ शेषं १ द्विनिघ्नं २ रूपं १ योज्यं ३ जातं उग्रं ३ एवं लब्धोपरि सर्वत्रज्ञेयम् । उग्रपाप इत्यादिना अग्निनाशपर्यन्तं पंचदशज्ञेयाः । "शकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशैश्चतुर्हाहतः सप्तभक्तावशिष्टः । द्विनिघ्नंत्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जराखंडजस्वेदजानांहि विंशोपकास्युः" । उदाहरणं—शकः १५५६ चतुर्धास्थाप्यः १५५६ क्रमेणगुणकैर्गुणितः ७७८०।१०८९२।१४००४।१७११६ सर्वत्र सप्तभक्ते शेषाणि ३।०।४।१ द्विगुणितानि ६।०।८।२ त्रिभिर्युक्तानि-जातविंशोपकाः ९।३।११।५ उद्भिज्जाः ९ जरायुजाः ३ अंडजाः ११ स्वेदजाः ५ एतत्स्वरूपं अमरसिंहेनोक्तं ।

"उद्भिज्जास्तरुगुल्माद्याः पक्षिसर्पाद्वियोंडजाः । स्वेदजाः कृमिदंशाद्यानृगवाद्याजरायुजाः ॥"

अथ रोहिणीचक्रं—

"मेषार्कदिनमाद्यक्षद्वयंमन्धौ द्वयंतटे । एकंगिरौद्वयंसंधौ चतुर्दिक्षुतथान्यसेत् ॥"
साभिजिच्चक्रमेणैवफलं यत्रतुरोहिणी । अतिवृष्टिः समुद्रेस्यात्तटेवृष्टेरवर्षणं ॥
गिरौसंधौखंडवृष्टिरित्याहुः पूर्वसूरयः ॥"

अथाब्दपानयनं । भूनंदतिथ्यूनशकाहताभू १ स्त्रिघ्न्यः १५ कुरामा ३१ कुगुणा ३१ असिद्धाः २४ । भुक्ता १ ब्धाणै ५० स्त्रिशरै ५३ रयुक्तास्तष्टानगैरर्कगुरोऽब्दपः स्यात् ॥ १ ॥ अथग्रहाणामायव्ययाः ।

"षट्सूर्योतिथयश्चंद्रेद्यष्टौभूमिजके तथा । सप्तदशेंदु बुधे च दशाभास्करनन्दने ॥
एकोनविंशतिर्जीवराहौद्वादशकं भवेत् । एकविंशतिराख्यास्याच्छुक्रस्यापि तथैव च ॥"

यथाऽपव्ययानयनं—

"स्वस्वामिवर्षाधिपवत्सरैकन्त्रिघ्नं शराब्धंतिथि भक्तशेषं ।
आयोथलब्धस्त्रिगुणाशरादया तिथ्युद्धृताशेषमितोव्ययः स्यात् ॥"

स्वस्वामिशब्देनद्वादश राशि स्वामिनः वर्षाधिप शब्देन राजा अनयोर्वर्षमिति । उदाहरणं—मेषस्वामी-भौमः तस्यवर्षाणि ८ राजा बुधस्तस्यवर्षाणि १७ अनयोर्योगः २५ त्रिभिर्गुणितः ७५ पञ्चभिर्युक्तः ८० तिथि १५ भक्तः शेषं ५ एतन्मितो मेषराशौ भवतः लब्धं ५ त्रिगुणं १५ पंचयुक्तं २० तिथिभक्तं शेषं ५ मेषराशोव्ययः ५ एवंवृषादीनामायव्ययाः । प्रतिवर्षयोराजा भवति तस्यैवायव्ययौलेख्यौ सिद्धिवत् ।

इति श्रीदिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिता मकरन्दोदाहृतिः समाप्तिमगमत् ।

मकरन्दसारिणी का आरम्भ कलयुग के आरम्भ से (वैशाख शु० १ शुक्रवार से) होता है। क्योंकि वैशाख कृ० त्रयोदशी भौमवार को सूर्य की संक्रान्ति हुई है और उस वर्ष ज्येष्ठ मास अधिक हुआ था जो कि गणित से जान कर लिखा है, इसीलिए मकरन्द के अहर्गण (ग्रह दिन वल्ली के दिनों) कि गणना शुक्रवार से होती है।

अब मकरन्दसारिणी का क्रम समयोचित लिखा जाता है। प्रथम तिथि नक्षत्र योग करण मध्यम तथा स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं। यह समझना चाहिए तिथि नक्षत्र योग क्या है ? (उत्तर) सूर्य चन्द्रमा का जो अन्तर है वही तिथि है, अमावस्या के अन्त में सूर्य चन्द्रमा की राश्यादि में समानता होती है, फिर शुक्ल प्रतिपदा से चन्द्रमा सूर्य से १२° प्रति तिथि आगे होता जाता है और पूर्णिमा के अन्त में ६ राशि अधिक चन्द्रमा हो जाया करता है यह तिथि का सिद्धान्त है। अब चन्द्रमा जो है वही नक्षत्र है और सूर्य चन्द्रमा की राश्यादि का योग ही योग है। एक तिथि में दो करण भोग करते हैं कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध से शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध तक चार करण शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न क्रमानुसार भोग करते हैं, फिर शुक्ल प्रतिपदा के उत्तरार्ध से क्रमानुसार तिथ्यर्धक्रमशः भोग करता है। जिसका नाम १ बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ विष्टी (भद्रा) है। मकरन्द-सारणी में जो तिथि नक्षत्र योग बनाए गए हैं वह मध्यम हैं सूर्य चन्द्र से बनाकर फिर केन्द्रांशों द्वारा फल (सौरभ) बनाकर तिथ्यादि स्पष्ट किया गया है। तिथि सौरभ इत्यादि में फल सदैव धन करते हैं, लेकिन सूर्य चन्द्र स्पष्ट करने पर केन्द्र भुजांशों द्वारा मेषादि तुलादि वशा धन ऋण दोनों संस्कार किए जाते हैं यह शंका उत्पन्न होती है, जिसका समाधान यह है कि, मध्यम सूर्य और मध्यम चन्द्र से मध्यम तिथि बनाकर उसमें कुछ घटी १४ या १५ के निकट घटाकर सारिणी में मध्यम तिथि की घटिकादि रखी है, जो बनाकर देखने से मालूम हो जायेगा। इसी कारण ऋण धन दोनों संस्कार में धन करने से वही स्पष्ट हो जाता है, यह तिथि नक्षत्र योग की उत्पत्ति समझनी चाहिए।

अब तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं। जिस शालिवाहनीय शाके कि तिथि स्पष्ट करना हो उस अभीष्ट शाके को तिथि सारणी चक्र नं० १ के शाके में घटावें (यदि दोनों तुल्य होवें तो घटाने की आवश्यकता नहीं और न शेषाब्द ही होगा) जो शेष रहे उसके तुल्य शाके की सारणी चक्र नं० २ की तिथि कन्द वारादि और वल्ली कन्द (केंन्द्र) के एवं पुस्तकीय शाके के कोष्ठक के तिथि वार घटी पल और वल्ली (केन्द्र) को परस्पर जोड़ लेवें तिथि यदि ३० से अधिक होवें तो ३० से भाग देकर और वार जो सात से अधिक होवे तो ७ के भाग से और वल्ली (केन्द्र) के ऊपर के अंक यदि ६० से अधिक होवें तो ६० के भाग से शेषित कर लेवें। वही ग्रहण करें जो तिथि प्राप्त होवे उसी की गणना चैत्र शुक्लादि से जाने और उक्त तिथि २० से लेकर ३० अर्थात् शून्य तक होवे तो उसी वर्ष अधिकमास जाने अन्यथा अधिकमास नहीं होता है, इसका ध्यान रखना चाहिये; क्योंकि अधिकमास वाले वर्ष में बजाय २४ पक्ष के २६ पक्ष (१३ मास) होते हैं। पूर्वोक्त तिथि १९ होने पर भी जब आगे के वर्ष में क्षयमास होने का योग होता है तब १९ तिथि वाले वर्ष में भी अधिक मास होना सम्भव होता है अन्यथा नहीं। अधिकमास तब होता है जब शुक्ल प्रतिपदा से कृष्ण अमावश्या तक सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती। शुक्ल पक्ष जिस मास का हो उसी नाम से दो मास होते हैं, और क्षयमास तब होता है जब शुक्ल प्रतिपदा से कृष्ण अमावश्या तक दो संक्रान्ति होवें और वही मास क्षय मास होता है। उसमें अधिक मास एक विशेष होता है, यह अधिक मास कार्तिक से फाल्गुन तक भी हो जाता है। पूर्वोक्त योग फल तिथि वारादि वही वर्षादि का वारादि होता है यह सूर्य के मेष संक्रान्ति के निकटवर्त्ती होता है। इसी प्रकार नक्षत्र और योग का भी वर्षादि वार बना लेवें यह भी तिथि के निकटवर्त्ती होता है। नक्षत्र का योग २७

से अधिक होने पर २७ से शेषित को ग्रहण करना चाहिए (गणित करने पर सारणी की शुद्धि अवश्य कर लेना चाहिये। क्योंकि छापे में बहुत सी अशुद्धि का रहना सम्भव है जैसे १४ के २४ छप गये इत्यादि) इसकी जाँच करने का यह क्रम है—कोष्ट प्रतिकोष्ट धन अथवा ऋण जो होता चला गया हो उसी प्रकार कोष्ट प्रति कोष्ट धन वा ऋण जैसा हो जाँच कर शुद्ध कर ले। सारणी के शाके से पहले या आगे ध्रुवाङ्क बनाना चाहे तो उसका भी पूर्वोक्त क्रम है जोड़ कर या घटा कर जहाँ जैसा उचित हो चाहे सारणी के शाके से आगे पीछे की सारणी बना सकता है, इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

अब देशान्तर संस्कार क्रम लिखते हैं—लंका से कुरुक्षेत्र होकर जो दक्षिण रेखा है उसको मध्य रेखा कहते हैं और उसमें जो जो नगर हैं वह सब मध्य रेखा के नगर होते हैं, वह मध्य रेखा अपने नगर से पूर्व वा पश्चिम जितने योजन पर हो उसको प्रत्येक ग्रह की कलादि मध्यम गति से अलग-अलग गुणा कर गुणनफल में ८०° का भाग देने से जो विकलादि फल प्राप्त हो वह प्रत्येक मध्यम ग्रह में यदि अभीष्ट नगर मध्य रेखा से पूर्व हो तो ऋण और पश्चिम हो तो धन संस्कृत करने से देशान्तर संस्कृत ग्रह होता है और तिथ्यादि के देशान्तर संस्कार के लिये सूर्य की मध्यम-गति कलादि ५९।८ को देशान्तर से गुणा कर ८० का भाग देने से जो विकलादि लब्धि हो उसको पलादि मानकर उसका विपरीत संस्कार तिथ्यादि के घटिकादि में करने से देशान्तर संस्कृत घटिकादि होवेंगे, अर्थात् अभीष्ट नगर मध्य रेखा से पूर्व हो तो, धन पश्चिम हो तो ऋण करें, यह विपरीत संस्कार हुआ। ऐसा करने से देशान्तर संस्कृत मध्यम तिथ्यादि होती है। देशान्तर की उपपत्ति इस प्रकार जाननी चाहिये कि मध्यरेखा से जो पूर्वापर रेखा जितने योजन दूर पूर्व या पश्चिम है उस स्थान में जब कि सूर्यादि ग्रह मध्य रेखा ठीक मस्तक पर होगा उससे पूर्व या पश्चिम पूर्वोक्त स्थान पर उस समय मस्तक पर नहीं होगा वहाँ पर पूर्वापर नतकाल होगा क्योंकि भचक्र (नक्षत्रों का चक्र ग्रह को अपनी कक्षा में चलते हुये साथ लेकर) पूर्व से पश्चिम को भ्रमण करता है जिसके कारण दिन रात्रि होती है।

पृथ्वी के बीच की पूर्वापर रेखा वृत्त (परिधि) बड़ा होता है उसके दक्षिणोत्तर जितनी अधिक दूरी होगी वहाँ की परिधि उसी भाँति छोटी होगी, परन्तु इसका सिद्धान्त यह है कि स्वदेशीय भू-परिधि के पूर्ण घेरे में सूर्य सर्वत्र होकर ६० घटी में पुनः उसी स्थान में दिखाई देता है और सूर्य की मध्यम गति कलादि ५९।८ (६० घटी की चाल) है, इसलिये सामान्य गणित अर्थात् सरलता बनाने में भू-परिधि (स्वदेशीय भू-परिधि के स्थान में ऐसा मान कर) को ४८०० योजन मान कर त्रैराशिक द्वारा अर्थात्—४८०० योजन में कलादि ५९।८ तो अमुक योजन में कितनी ? इसलिए अमुक योजन को ५९।८ से गुणा करके ४८०० का भाग देने से जो कलादि लब्धि होवे वह ही देशान्तर हुआ। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह का लाना चाहिए और इस गणित में और सरलता करने के कारण ४८०० योजन को ६० से भाग देने से लब्धि ८० हुई अर्थात् देशान्तर योजन को ग्रह की मध्यम गति से गुणा करके ८० का भाग देने से जो लब्धि होवे उसे विकलादि जाने। दोनों प्रकार से फल एक ही होता है परन्तु यह स्थूल क्रम है। यदि स्वदेशीय भूपरिधि का भाग अर्थात् पूर्वोक्त क्रिया की जावे तो वह शुद्ध देशान्तर होता है।

अब वर्ष के मध्य में तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करने की रीति लिखते हैं—वर्षादि तिथि का वारादि वल्ली सहित पूर्वोक्त जो आया है यह शून्य गुच्छा (पक्ष) का हुआ (गुच्छा पक्ष जाने) फिर इसी तिथि का वारादि वल्ली में तिथि गुच्छा सारणी चक्र नं० ३ के कोष्टक १ के क्षेपक जोड़ने से १ पक्ष का और पूर्वोक्त ही में २, ३ इत्यादि कोष्ठक का क्षेपक जोड़ने से २, ३ आदि पक्ष का वारादि हो जावेगा, इसी प्रकार पक्ष ० शून्यादि २४ पक्ष बना लेवें और इसी प्रकार नक्षत्र व योग के गुच्छा अर्थात् आवृति १४ या १५ बना लेवे। इतना ध्यान रखिये कि वार ७ से

अधिक होने पर ७ के भाग से शोधित का ग्रहण करें और नक्षत्र योग अधिक होने से नक्षत्र तथा योग में २७ का भाग देने से जो शेष रहे उसे ग्रहण करें और वल्ली का उपर का अंक ६० से अधिक होने पर ६० का भाग दे शेषित को ग्रहण करें। फिर तिथि के शून्य पक्ष का वारादि सहित वल्ली को लिख कर उस तिथि के आगे एक तिथि बढ़ाकर बराबर एक पक्ष तक १६ कोष्ठों में फिर पुनः वही तिथि दूसरे पक्ष की आ जाएगी और एक तिथि प्रति एक बार भी बढ़ाना चाहिए शून्य पक्ष से एक पक्ष तक का कोष्ठक रूप लिखकर जो उदाहरण में किया है।) फिर तिथिगुच्छा सारणी में लिखे हुए चालन घट्यादि (एक पक्ष से दूसरे पक्ष १५ दिन तक में जितना घटा बढ़ा हो उसका १५ वाँ भाग ऋण को ऋण संस्कार प्रति दिन करके १५ दिन की तिथि के मध्यम वारादि बना लेवें। जब शून्य ० पक्ष से एक पक्ष तक संस्कार करके ठीक-ठीक मिल जावें तो शुद्ध जाने, यही जाँच हैं। इसी प्रकार बल्ली (केन्द्र) का चालन धन करके पक्ष भर की बल्ली बना लेवें। इसकी जाँच भी उसी प्रकार जाने फिर तिथि सौरभ (केन्द्र फल सारणी) चक्र नं० ४ सारणी से बल्ली द्वारा सानुपात घटिकादि फल लाकर तिथि के वारादि में धन संस्कार करने से तिथि का वारादि स्पष्ट हो जाता है। बल्ली ६'८ सानुपात फल लाने का यह क्रम है कि बल्ली के उपर के अंक तुल्य कोष्ठक में बल्ली के दूसरे अंक तुल्य तिर्यक कोष्ठक में जो फल हो यदि तिर्यक् कोष्ठक के अंक से वह द्वितीय अंक न्यूनाधिक हो तो कोष्ठक के अंक को घटाने से जो अंक शेष रहे उसे बल्ली के तीसरे अंक सहित को उस कोष्ठक के फल और उसे आगे के कोष्ठ के फल और उससे आगे के कोष्ठ फल का अन्तर जो फल हो उनसे गुण करके ६ का भाग (क्योंकि ६ अंक बाद प्रति कोष्ठ है) देवें जो फल लब्धि होय उसको अग्रिम कोष्ठ वशात् अर्थात् आगे का कोष्ठ अधिक होवें तो कोष्ठ की घटिकादि में जोड़ देवें जो आगे का कोष्ठ न्यून होवें तो घटा देवें जो घटिकादि प्राप्त होवें वही केन्द्रोपरि सानुपात फल होता है। इसी प्रकार नक्षत्र योग की बल्ली द्वारा नक्षत्र योग का सानुपात फल लाना चाहिए।

सानुपात फल लाने का एक उदाहरण भी यहाँ दिखाते हैं—जैसे केन्द्र बल्ली ८।१६।३० है। इसके द्वारा तिथि फल लाना है तो तिथि सौरभ सारणी चक्र नं० ४ में ऊपर के अंक ८ के कोठे के नीचे। द्वितीय अंक १६ होने से तिर्यक् कोष्ठ १८ में फल घटिकादि ४५।८ हैं तो द्वितीय अंक १९ में १८ को घटाया तो शेष १ और तीसरा अंक ३० मिलकर १।३० हुए इसको प्रथम कोष्ठ फल ४५।८ और अग्रिम कोष्ठ फल घटिकादि ४५।१७ के अन्तर ६ पल से गुणा करके १३।३० इसमें ६ का भाग देने से २ वल् लब्ध हुए इसको अग्रिम कोष्ठ अधिक होने से प्रथम कोष्ठ की घटिकादि ४५।८ में जोड़ा तो ४५।१० यह सानुपात तिथि फल हुआ इसी प्रकार सानुपात क्रम नक्षत्र योगों में भी जाने जिस प्रकार तिथि स्पष्ट की जानी है उसी प्रकार नक्षत्र योग को स्पष्ट करने में २८ कोष्ठ बनाना चाहिए क्योंकि आवृत्ति से दूसरी आवृत्ति तक वही नक्षत्र पुनः आ जायेगा और तिथिवत् नक्षत्र प्रति कोष्ठ बढ़ा लेवें उसी के साथ तिथिवत् एक बार भी प्रतिदिन बढ़ा लेना चाहिए और नक्षत्र का घट्यादि चालन प्रतिदिन का धन है और योग का घट्यादि चालन प्रतिदिन ऋण है तथा वल्ली चालन दोनों का प्रतिदिन का धन है जो सारणी से स्पष्ट ज्ञात हो जावेगा। पूर्वोक्त केन्द्र बल्ली का सानुपात फल नक्षत्र तथा योगों के मध्यम वारादि में जोड़ने से नक्षत्र तथा योग स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार सम्पूर्ण वर्ष भर के २४ पक्ष या २६ पक्ष और नक्षत्र तथा योग की १४ या १५ आवृत्तियाँ स्पष्ट कर लेवें। सानुपात फल बनाने में बिना गणित किए देखकर अनुमान से भी बना सकते हैं ऐसा करने से शीघ्रता होती है।

अब करण स्पष्ट करने का चक्र लिखते हैं क्रम ऊपर लिख चुके हैं। चक्र को उदाहरण में जानें—

तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध	तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
कृ.० १	वालव	कौलव	शु० १	किस्तुघ्न	बव
२	तैतिल	गर	२	बालव	कौलव
३	वणिज	विष्टि	३	तैतिल	गर
४	बव	वालव	४	वणिज	विष्टि
५	कौलव	तैतिल	५	बव	बालव
६	गर	वणिज	६	कौलव	तैतिल
७	विष्टि	बव	७	गर	वणिज
८	वालव	कौलव	८	विष्टि	बव
९	तैतिल	गर	९	बालव	कौलव
१०	वणिज	विष्टि	१०	तैतिल	गर
११	बव	बालव	११	वणिज	विष्टि
१२	कौलव	तैतिल	१२	बव	बालव
१३	गर	वणिज	१३	कौलव	तैतिल
१४	विष्टि	शकुनि	१४	गर	वणिज
३०	चतुष्पद	नाग	१५	विष्टि	बव

अब तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करने का उदाहरण लिखते हैं। प्रथम तिथि स्पष्ट करते हैं। प्राचीन राजधानी देहली (इन्द्रप्रस्थ) है। इसलिए देहली नगर को अभीष्ट देश मान कर देहली के तिथ्यादि बनावेंगे। देहली नगर मध्यरेखा से अनुमानतः १७ योजन पूर्व है और वहाँ का पलभा अंगुलादि ०।६।३३ हैं। अभीष्ट संवत् १९८४ शकः १८४९ का उदाहरण दिखलाते हैं। अभीष्ट शाके १८४९ को चक्र नं० १ सारिणी में अभ्यास करने के लिए दिखाया, देखिये—

(चक्र नं० १) तिथि	वार	घ० प०	केन्द्र बल्ली
श.के १८४८ में ००	२	२४।३३	३९।११।५७
चक्र नं.२ शेष १ में ११	१	११।४२	१५।१२।३६
चैत्र शुक्ल ११	३	३६।१५	५४।२४।३३
		१२ देशान्तरं धनम्	
११	३	३६।२७	५४।२४ ३३

देशान्तर संस्कार करने के लिए सूर्य की मध्यम गति कलादि ५९।८ को देशान्तर पूर्व योजन १७ से गुणा किया तो १००५।१६ गुणनफल हुआ। इसमें ८० का भाग दिया तो लब्धि विकलादि १२।३४ हुई अर्थात् १२ विकला को पल मान कर मध्य रेखा से अभीष्ट नगर पूर्व होने पर ग्रहों के विपरीत तिथि में धन संस्कार किया तो मध्यम तिथि चै० शु० ११ वारादि ३।३६।२७ केन्द्र वल्ली ५४।२४।३३ हुई यही वर्षादौ हुआ। शून्य पक्ष का जानें।

अब वर्ष भर के २४ पक्ष बनाने के निमित्त चक्र नं० ३ तिथि गुच्छा सारिणी द्वारा प्रत्येक पक्ष का ध्रुवा जोड़ कर यथा—प्रथम पक्ष का ध्रुवा वारादि ०।४५।४३ वल्ली ३२।८।२३ क्रमशः जोड़ने से वैशाख कृष्ण ११ का

वारादि ४।२८।१० वल्ली २६।३२।५६ हुई। इसी प्रकार प्रत्येक गुच्छा पक्ष का ध्रुवा जोड़ कर २४ पक्ष बनावें, जो नीचे चक्र में लिखते हैं :—

पक्ष सं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
पक्ष	चै० शु० ११	वै० कृ० ११	वै० शु० ११	ज्ये० कृ० ११	ज्ये० शु० ११	आ० कृ० ११	आ० शु० ११	श्रा० कृ० ११	श्रा० शु० ११	भा० कृ० ११	भा० शु० ११	आ० कृ० ११	आ० शु० ११	का० कृ० ११	का० कृ० ११	मा० कृ० ११	मा० शु० ११	पौ० कृ० ११	पौ० शु० ११	माघ कृ० ११	माघ शु० ११	फा० कृ० ११	फा० शु० ११	चै० कृ० ११
पार	३	४	५	५	६	०	१	१	२	३	३	४	५	६	६	०	१	२	३	३	४	५	६	०
घटी	३६	२२	६	५१	३५	१८	१	४५	२८	१२	५६	४०	२६	१२	५८	४६	३३	३२	१०	५९	४७	२८	२४	११
पल	२७	१०	५९	२३	१०	४१	५१	३	२५	७	१४	५६	१५	१४	५२	४	५१	१७	३७	२१	५५	१६	१०	३२
	५४	२६	५८	३०	२	३४	६	३९	११	४३	१५	४७	१९	५१	२३	५५	२८	०	३२	४	३७	६	४१	१३
केन्द्र वल्ली	२४	३२	३६	४५	५९	५३	५७	०	३	७	१३	१९	२७	३६	४७	५९	१२	३६	४१	५६	११	२५	३८	५१
	३३	५६	५४	४१	५	५६	१	१३	४४	५९	९	३४	२१	३४	४	६	१६	४८	७	२२	१३	३४	५७	११

अब केवल दो पक्षों का चालन देकर स्पष्ट करके दिखलाते हैं अर्थात् प्रत्येक तिथि को प्रथम मध्यम बनाकर फिर स्पष्ट करके दिखलाते हैं— चक्र नं० ३ का चालन देकर चक्र नं० ४ तिथि सौरभ से तिथि फल जानकर उसका संस्कार करके तिथि स्पष्ट कर चक्रों द्वारा दिखलाते हैं। प्रति तिथि में १ वार बढ़ा लिया गया है। फिर प्रथम पक्ष का चालन संस्कार किया। इसी का दूसरा पक्ष भी चालन के आधार पर बनाया गया।

तिथि	चै.शु. ११	१२	१३	१४	१५	वै.कृ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
वार	३	४	५	६	०	३१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४
घटी पल	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२२
	२७	३०	३३	३६	३९	४२	३५	४७	५०	५३	५६	५९	२	५	८	१०
केन्द्र वल्ली	५४	५६	५८	०	२	५	७	९	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२६
	२४	३३	४१	५०	५८	७	१५	२४	३३	४१	५०	५८	७	१५	२४	३२
	३३	७	४०	१४	४७	२१	५४	२८	१	३५	८	४२	१५	४९	२२	५६
फल धन	९	१५	२१	२७	३३	३८	४४	४६	४९	४९	४९	४७	४५	४१	३७	३३
	५९	१५	१०	२२	२३	४९	२३	४६	०	५२	३३	५६	२१	५५	४६	६
तिथि स्पष्ट वारादि	मं०	बु०	बृ०	शु.श.	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०
	४६	५०	५५	६०।०	६	१०	१५	१६	१७	१७	१६	१३	१०	६	०	५५
	२६	४५	४३	०।५८	२	३१	८	३३	५०	४५	२९	५०	२३	०	५४	१५

दूसरा पक्ष

तिथि	वै.कृ. ११	१२	१३	१४	३०	वै.शु. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
वार	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५
घटी पल	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६
	१०	९	८	७	७	६	५	५	४	३	३	२	१	०	०	५९
केन्द्र वल्ली	२६	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८
	३२	४१	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	३९
	५६	१४	४२	१०	३८	६	३४	१	२९	५७	२५	५३	२१	४९	१७	४४
फल धन	३३	२८	२२	१७	१३	८	५	२	०	०	०	२	२	९	१५	२१
	४	५	५६	५६	११	५५	१६	२८	४०	१	३४	२७	३८	५५	११	५
तिथि स्पष्ट वारादि	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०
	५५	४९	४३	३७	३१	२६	२१	१७	१४	१३	१२	१३	१५	१८	२३	२८
	१५	१४	४	७	८	१	२१	३३	४४	४	३७	२९	३९	५५	११	४

इस प्रकार सम्पूर्ण वर्ष की तिथि स्पष्ट करें।

अब नक्षत्र स्पष्ट करते हैं—अभीष्ट शाके १८४९ है सो चक्र नं० ५ नक्षत्र सारिणी में शाके १८३२ शेषांक शाके १७ चक्र नं० ६ से नक्षत्र वारादि तथा वल्ली जोड़कर दिखलाते हैं और पूर्वोक्त देशान्तर १२ पल धन करके बनाया तो मघा नक्षत्र का वारादि ३।४७।२। वल्ली (केन्द्र) ५४।४४।०० यह हुआ यह भी सूर्य की मेष की संक्रान्ति तथा तिथि के ध्रुवा के निकटवर्ती होता है। वार को मुख्य जानें।

	नक्षत्र	वार	घ० प०	वल्ली
(च० नं० ५) शाके १८३२ में	३	३	४०।३८	३४।२६।३३
(च० नं० ६) शेषांक १७ में	७	०	६।१२	२०।१७।२७
शाके १८४९ में	१०	३	४६।५०	५४ ४४।००
			१२	देशान्तर
मघा	१०	३	४७।२	५४।४४।००

अब वर्ष भर की १४ आवृतियाँ बनाकर चक्र नं० ७ सारिणी द्वारा चक्र में बनाकर दिखलाते हैं।

आवृत्ति	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
नक्षत्र	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०	मवा १०	मघा १०	मघा १०	मघा १०
वार	३	३	२	१	१	०	६	६	५	४	३	३	२	१
घटी	४७	७	२७	४६	६	२४	४३	१	२०	३८	५७	१७	३७	५७
पल	२	१२	२०	५१	२	४६	५	३९	२	३०	४९	२६	२६	३५
केन्द्र	५४	५४	५३	५३	५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८
वल्ली	४०	१५	४६	१६	४६	१४	४३	१०	३७	५	३४	५	३६	७
	०	२७	५१	५४	१२	३३	००	०	३०	२५	५२	७	१४	२७

१४ आवृतियाँ इस प्रकार हुई।

अब चक्र नं० ७ सारिणी द्वारा केवल १ आवृत्ति को तिथिवत् चालन देकर स्पष्ट करके चक्र द्वारा दिखलाते हैं। तथा चक्र नं० ८ नक्षत्र सौरभ द्वारा फल लेकर प्रत्येक नक्षत्र स्पष्ट करके दिखलाते हैं। प्रतिदिन चालन पलादि ४४ ४८ धन और प्रतिदिन वल्ली चालन २।१५।१६।३३ धन है।

नक्षत्र	मं.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.
वार	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२
घटी	४७	४७	४८	४९	५०	५०	५१	५२	५३	५३	५४	५५	५६	५६	५७	५८	५८	५९	०	१	१	२	३	४	४	५	६	७
पल	२	४७	३२	१७	२	४७	३१	१६	१	४६	३१	१५	०	४५	३०	१५	५९	४४	५९	१४	५९	४६	२८	१३	५८	४३	२७	१२
केन्द्र	५४	५६	५९	१	३	५	७	१०	१२	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	१४	४३	४५	४७	४९	५२	५४
वल्ली	४४	५६	८	२०	३३	४५	५७	९	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४८	०	१२	२४	३७	४९	१	१४	२६	३८	५०	३	१५
	०	१७	३३	५०	६	२३	४०	५६	१३	२९	४६	२	३९	३६	५२	९	२५	४२	५९	१५	३२	४८	५	२१	३८	५४	११	२७
फल	९	१५	२०	२६	३२	३७	४१	४४	४५	४६	४५	४३	४०	३६	३२	२७	२३	१८	१३	९	५	२	०	०	०	२	४	९
	५८	६	४७	३९	१४	९	१०	५	४५	५	१६	१८	३३	५२	३५	५५	१	११	२९	१५	३५	४९	५१	२	२३	४	५९	०
नक्षत्र	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभि.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वस	पुष्य	श्ले.	मघा
नक्षत्र	मं.	बु./बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.
स्पष्ट	५७	६०।२	९	१५	२२	२७	३२	३६	३८	३९	३९	३८	३६	३३	३०	२६	२२	१७	१३	१०	७	५	४	४	५	७	११	१६
वारादि	०	०।३	१९	५६	१६	५६	४१	२१	४६	५१	४७	३३	३३	३७	५	१०	०	५५	५८	२९	३४	३५	१९	१५	२१	४७	२६	१२

इसी प्रकार पूर्ण वर्ष भर की आवृत्तियाँ बनाकर नक्षत्र स्पष्ट करें ।

अब अभीष्ट शका १८४६ के योग स्पष्ट करते हैं। चक्र नं० ६ और १० योग सारिणी से अभीष्ट शका १८४६ तुल्य तथा १२ पल देशान्तर धन करके बनाया तो गंड योग १० का वारादि ३।५०।२६ वल्ली केन्द्र ५४।४७।५८ हुआ।

(च० नं ६) से शका १८३२ में	३	३	४२।५१	३४।२७।५०
शेषाब्द १७ में (च० नं० १०)	७	०	७।२६	२०।२०।८
शका १८४९ में	१०	३	५०।१७	५४।४७।५८
गंड योग			१२	पल देशान्तर
गंड	१०	३	५०।२६	५४।४७।५८

यह भी तिथि के ध्रुवा के निकटवर्ती होता है। वार को मुख्य जानें। अब पूर्ण वर्ष भर की १५ आवृत्तियां च० नं० ११ सारिणी से बनाकर चक्र द्वारा दिखलाते हैं—

आवृत्ति	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
योग	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०	गण्ड १०
वार	३	१	५	३	०	५	२	०	४	१	६	३	०	५	२
घटी	५०	१७	४६	१६	४५	१३	४०	५	२८	४९	१०	३२	५४	१७	४३
पळ	२९	५३	५५	२६	३७	४५	२१	११	१४	५७	५७	५	११	४४	०
केन्द्र वल्ली	५४	५०	४५	४१	३६	३२	२७	२२	१७	१३	८	३	५९	५४	४९
	४७	१४	४३	१३	४३	११	३५	५५	१२	२५	३७	५०	४	२३	४३
	५८	५३	२२	५०	३५	१०	२५	४९	२	४२	४८	१२	४२	४५	६

अब चक्र नं० ११ सारिणी से प्रतिदिन का चालन देकर एक आवृत्ति का योग (नक्षत्रवत्) स्पष्ट करते हैं। प्रथम आवृत्ति का चालन घटिकादि ३।२५।४७ ऋण और प्रतिदिन वल्ली चालन २।३।१३।८ धन है :—

योग	गण्ड	वृ.	ध्रु.	व्या.	ह.	व.	सि.	व्य.	व.	प.	शि.	सि.	सा.	शु.	शु.	व्र.	ऐं.	वै.	वि.	प्री.	आ.	सौ.	शो.	अग.	सु.	ध्रु.	शू.	गण्ड
वार	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१
घटी	५०	४७	४३	४०	३६	३३	२९	२६	२३	१९	१६	१२	९	५	२	५९	५५	५२	४८	४५	४१	३८	३५	३१	२८	२४	२१	१७
पल	२९	४	३८	१२	४६	२०	५५	२९	३	३७	१२	४६	२०	५४	२८	३	३७	११	४५	२०	५४	२८	२	३६	११	४५	१९	५३
केन्द्र	५४	५६	५८	०	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४२	४४	४६	४८	५०
वल्ली	४७	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३३	३६	३९	४२	४५	४९	५२	५५	५८	२	५	८	११	१४
	५८	११	२४	३७	५०	३	१७	३०	४३	५६	९	२२	३५	४९	२	१५	२८	४१	५४	७	२१	३४	४७	०	१३	२६	३९	५३
फल	९	१३	१८	२३	२८	३३	३६	३९	४१	४२	४२	४१	३९	३७	३४	३०	२६	२२	१७	१३	९	६	३	१	०	०	०	२
	३०	५४	४६	४८	४१	८	५५	४८	४९	४८	४५	४५	५३	१९	५	२२	१८	४	४८	४०	५०	२७	४०	३९	२०	१	४२	३०

योग	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.
स्पष्ट का	५९	६०	०	२	४	५	६	६	६	४	२	५८	५४	४९	४३	३६	२९	२१	१४	६	५९	५१	४४	३८	३३	२८	२४	२२	३०
वारादि	५९	०	५८	२४	०	२७	२७	५०	१७	५२	२५	५७	३१	१३	१३	२३	२५	५५	१५	३३	०	४४	५५	४२	१५	३१	४६	१	२३

इस प्रकार पूर्ण वर्ष की आवृत्तियों को स्पष्ट करके योग स्पष्ट कर लेना चाहिए और करण स्पष्ट करने का उदाहरण करण चक्र में लिख चुके हैं जो आगे चक्र में स्पष्ट करके दिखलावेंगे और जब विष्टी करण आवे तब तब उसी के अनुसार पञ्चाङ्ग में भद्रा लिख देवें तथा नक्षत्र के चरण के अनुसार चन्द्रमा की राशिचार करके पञ्चाङ्ग में लिख देना चाहिए। पुनः दिनमान की घटिकादि तथा अंग्रेजी फारसी तारीखें मास लिख देना चाहिए। फारसी की तारीख विशेषतया अमावास्या को २८ तारीख आ जाया करती हैं। चन्द्रोदय के दूसरे दिन १ तारीख होती है।

अब पञ्चांग लिखने का क्रम समझाते हैं—

चैत्र शुक्ल पक्षः

	ति०	वा०	घ० प०	न०	घ० प०	यो०	घ० प०	क०	घ० प०	क०	घ० प०	तारीख अं०	तारीख फा०	चन्द्रमा	दिनमान	
	११	मं०	४६।२५	म०	५७।०	ग०	५६।५६	व०	१४।१३	वि०	४६।२५	१२	६	•		भ. १४।१४ उ. ४६।२५ या.
	१२	बु०	५०।५५	पू०	६०।०	वृ०	६०।००	व०	१८।३५	वा०	५०।४५	१३	१०			
	१३	बृ०	५५।४३	पू०	२।५३	वृ०	०।५८	कौ०	२३।१४	तै०	५५।४३	१४	११	क.१६।२६		
	१४	शु०	६०।००	उ०	६।१६	ध्रु०	२।१४	ग०	२८।२१	व०	६०।००	१५	१२			
	१४	श०	०।५८	ह०	१५।५६	व्या०	४।००	व०	०।५८	वि०	३३।३०	१६	१३	तु.४६।६		भ. ०।५८ उ. ३३।३० या.
	१६	सू०	६।२	चि०	२२।१६	ह०	५।२७	व०	६।२	वा०	३८।१६	१७	१४			

	ति०	वा०	घ० प०	न०	घ०प०	यो०	घ० प०	क०	घ० प०	क०	घ० प०	तारीख अ०	तारीख फा०	चन्द्रमा	दिनमान	
	१	चं०	१०।३१	स्वा०	२७।२६	व०	६।२८	कौ०	१०।३१	तै०	४२।४६	१८	१५			
	२	मं०	१५।८	वि०	३२।४१	सिं०	६।५०	ग०	१५।८	व०	४५।५०	१६	१६	वृ.१६।३०		भ. ४५।५० उ.
	३	बु०	१६।३३	अनु०	३६।२१	व्य०	६।१७	वि०	१६।३३	व०	४७।११	२०	१७			भ. १६।३३ या.
	४	बृ०	१७।५०	ज्ये०	३८।४६	व०	४।५२	वा०	१७।५०	कौ०	४७।४८	२१	१८	ध.३८।४६		
	५	शु०	१७।५५	मू०	३६।५१	प०	५८।३५	तै०	१७।४५	ग०	४७।७	२२	१६			
	६	श०	१६।२६	पू०	३६।४७	सिं०	५४।३१	व०	१६।२६	वि०	४५।२१	२३	२०	म.५४।२८		भ. १६।२६ उ. ४५।१२ या.
	७	सू०	१३।५५	उ०	३८।३३	सा०	४६।१३	व०	१३।५५	वा०	४२।६	२४	२१			
	८	चं०	१०।२३	श्र०	३६।३३	शु०	४३।१३	कौ०	१०।२३	तै०	३८।११	२५	२२			
	६	मं०	६।००	घ०	३३।३७	शु०	३६।२३	ग०	६।०	व०	३३।२७	२६	२३	कु. ५।५		भ. ३३।२७ उ.
	१०	बु०	५५।५५	श०	३०।५	व्र०	२६।२५	वि०	२८।५५	वा०	५५।१५	२७	२४			भ. ०।५४ या.
	११	बृ०	४६।१४	पू०	२६।१०	ऐं०	२१।५५	कौ०	२२।१४	तै०	४६।१४	२८	२५	मी.१२।८		
	१२	शु०	४३।४	उ०	२२।१०	वै०	१४।१५	ग०	१६।६	व०	४३।४	२९	२६			भ. ४३।४ उ.
	१४	श०	३७।३	रे०	१७।५५	वि०	५२।५५	वि०	१०।३	श०	३७।३	३०	२७	मे.१७।५५		भ. १०।३ या.
	३०	सू०	३६।१८	अ०	१३।५८	आ०	५१।४४	च०	४।१०	ना०	५८।१६	१	२८			

इस प्रकार पञ्चांग में लिखना चाहिए। पक्ष २ अलग-अलग लिखें। अब तिथ्यादि प्रकरण उदाहरण सहित पूर्ण हो गया। (दिनमान का क्रम सूर्यस्पष्टाधिकार में समझाया जायेगा)।

दिनमान का क्रम सूर्यस्पष्टाधिकार में समझाया जायेगा।

अब तारीख का क्रम तथा उदाहरण लिखते हैं। प्रथम मुसलमानी सन् हिजरी तथा महीना बनाने का क्रम लिखते हैं। हिजरी सन् बनाने की स्पष्ट रीति सम्वत् १९५९ विक्रमी के चैत्रशुक्ल से मोहर्रम मास का आरम्भ होता है। इससे आगे या पीछे जितने वर्ष का जानना हो उन वर्षों में (यदि ३३ से अधिक हो तो) ३३ का भाग देवें। जो वर्ष लब्ध हो वह और जो शेष रहे (यानी ३३ से कम हो) उसमें ११ का भाग देने से जो लब्ध हो उसे ४ से गुणा करने पर जो शेषमास हो वह और शेष को १२ से गुणा करके ३३ का भाग देने से जो मास लब्ध हो वह पूर्वोक्त वर्ष मास में जोड़ देवें (यदि १२ से अधिक हो तो १२ के भाग से वर्ष बनावें) जो वर्षादि योगफल हो उसमें १९५९ और अभीष्ट वर्ष के अन्तर को जोड़कर जो योगफल हो उसको क्षेपक वर्षादि १३२०।१ में यदि आगे का बनाना हो तो जोड़ देवें, यदि पीछे का बनाना हो तो घटा देवे। जो वर्षादि हो वही सन् और महीना चै० शु० चन्द्रोदय के दूसरे दिन से आरम्भ होगा।

बारहो महीनों के नाम १—मोहर्रम, २—सफर, ३—रविउलअव्वल, ४—रवि उल्लाखर, ५—जमादि उल अव्वल, ६—जमादि उलाखर, ७—रज्जव, ८—शाबान, ९—रमजान, १०—शव्वाल, ११—जिकअद्, १२—जिल्हिज। उदाहरण—अभीष्ट शक १८४९ सम्वत् १९८४ में चैत्रशुक्ल से यह जानना हैं कि हिजरी सन् क्या है और कौन सा महीना लिखना चाहिए। पूर्वोक्त क्रमानुसार सम्वत् १९८४ में १९५९ घटाया तो शेष २५ रहा यह ३३ से कम है अतः ३३ का भाग नहीं दिया गया। इसलिए ११ का भाग दिया गया लब्ध २ हुआ इसको ४ अंक से गुणा किया गया तो ८ मास, फिर शेष ३ को १२ से गुणा किया तो ३६ हुआ। इसमें ३३ का भाग दिया तो लब्ध १ मास हुआ। इसको पूर्वोक्त वर्षादि ०।८ में जोड़ा तो वर्षादि ०।९ हुआ। २५ में ३३ का भाग न लगने से शून्य ० वर्ष हुआ। इसमें अन्तर वर्ष २५ को जोड़ा तो योगफल २५।९ हुआ। इसको क्षेपक वर्षादि १३२०।१ में जोड़ा तो १३४५।१० हुआ। अर्थात् सन् हिजरी १३४५ और १० वाँ मास शव्वाल हुआ। इसी प्रकार स्पष्ट कर लेना चाहिए।

शाके में ७८ जोड़ने से अंग्रेजी ईस्वी सन् चैत्र शु० में होता है। जिसका महीना मार्च या एप्रिल होता है। मेष की संक्रान्ति सूर्य की ता० १३ अप्रैल के निकट होती है। जैसे शक १८४९ में ७८ जोड़ने से सन् १९२७ ई० चैत्र शुक्ल में हुआ।

अब ग्रहवल्ली (अहर्गण) बनाने का क्रम तथा मध्यमग्रह बनाने का क्रम लिखा जाता है। ग्रहदिनवल्ली सारिणी चक्र नं० २५ में जो शाकों के नीचे (५७ वर्ष बाद) चार अंक वल्ली रूप लिखे हैं और नीचे वार हैं तथा शेषांक चक्र नं० २६ में जो ५७ कोष्टक हैं उसके नीचे चार अंक लिखे हैं। तथा नीचे वारांक है, जिसका क्रम यह है कि अभीष्ट शाके के तुल्य अथवा कुछ अधिक पुस्तकीय शाका जिस कोष्ट में होवे उस कोष्ट के चारो अंक वल्ली के और वारांक लिखे फिर पुस्तकीय शाके में अभीष्ट शका घटाकर जो शेष रहे उसके तुल्य चक्र नं० २६ से बल्ली के चारो अंक और वारांक लेकर पूर्वोक्त में जोड़ लेवें और वारों के योग को यदि ७ से अधिक हो तो ७ के भाग से शेषित को ग्रहण करे और वल्ली के अंक जोड़ने में ६० से अधिक होने पर ऊपर का एक अङ्क बढ़ाता जावे वल्ली के सब अङ्कों का प्रमाण ६० ही जानें और सबसे ऊपर का अङ्क जो ६० से अधिक हो तो ६० का भाग दे लब्ध छोड़ दे शेष को ग्रहण करे और वारांक को इतवार से जाने परन्तु वल्ली को दिन बनाने से अर्थात् ऊपर के अङ्क को ६० गुणा करके नीचे का अङ्क जोड़कर फिर ६० गुणा करके नीचे का अङ्क जोड़कर इसी प्रकार क्रिया करने से जब अन्त का नीचे का अङ्क जोड़ा जावे तब गुणा नहीं करे। ऐसा करने से यह अहर्गण दिन होते हैं। इनको ७ से भाग करके जो शेष रहै उसको शुक्र से गिनने पर अभीष्ट वार स्पष्ट होता है (यह दिन कलिगताब्द के जाने जैसा पहले बतला

चुके हैं)। यह पूर्वोक्त ग्रहदिनवल्ली चैत्रशुक्ल प्रतिपदा या १ दिन पूर्व अमावास्या की होती है फिर वर्ष के भीतर जिस मास तिथि को बनाना हो तो वल्ली पाक्षिक चालन सारिणी चक्र नं० २७ के कोष्टक अभीष्ट मास की अमावास्या या पूर्णमासी जबकि दिन वल्ली बनाना हो उस कोठे के चारो अङ्क पूर्वोक्त वल्ली में जोड़ ले और वारांक जो नीचे दिये हैं वह वारों में जोड़ ले फिर जितनी तिथि आगे की बनाना हो उतना ही अङ्क वल्ली के नीचे वाले चौथे अङ्क में जोड़ ले और उतने वार (७ से अधिक होवे तो ७ के भाग से शेषित की) वारों में जोड़ ले। तो अभीष्ट तिथि की ग्रहदिनवल्ली होती है और वार जो हो वह रविवारादि से जाने। यदि वार में १ का न्यूनाधिक हो १ घटा बढ़ा ले और उसी प्रकार १ वल्ली के चतुर्थाङ्क में भी घटा बढ़ा ले। तब ग्रह दिन वल्ली स्पष्ट होती है क्योंकि वार ही मुख्य हैं वार ठीक-ठीक मिल जाने पर उक्त वल्ली को शुद्ध जाने और जब अधिक मास पड़ चुका हो और शेषांक सारिणी चक्र नं० २६ में नहीं जुड़ा हो तो वल्ली में ३० दिन (वारों में २ का अन्तर होने के कारण वल्ली के चतुर्थाङ्क में ३०) और वार में २ और जोड़ ले अथवा अधिक मास का वर्ष सारिणी में जुड़ चुका हो और अभीष्ट समय तक अधिकमास नहीं पड़ा हो तो वल्ली के चतुर्थाङ्क में ३० वार में २ घटा दे तब वार मिलाकर (वल्ली शुद्ध कर ले) वार को सदैव मुख्य जाने। अब यह बतलाते हैं कि किस प्रकार जाना जाय कि सारिणी में अधिक जुड़ा है या नहीं जुड़ा। जिस वर्ष अधिक मास होता है उस वर्ष ३८४ दिन होते हैं इसको ६० से गुणाकर वल्ली बनाने पर ०।०।६।२४ होती है और साधारण वर्ष में ३५४ दिन होते हैं जिसकी वल्ली ०।०।५।५४ होती है सो चक्र नं० २६ शेषांक सारिणी में कोष्ट का अन्तर देखने से ज्ञात हो जायगा। जिस कोष्ट में ०।०।६।२४ जुड़ा हो तो अधिक मास जुड़ा है ऐसा समझे। पूर्वोक्त ग्रह दिनवल्ली मध्यरेखा की अर्द्धरात्रि की होती है।

अब अहर्गण अर्थात् ग्रहदिनवल्ली की उपपत्ति लिखते हैं—मकरन्द का अहर्गण (ग्रह दिनवल्ली) कलियुग के आरम्भ वर्ष वैशाख शुक्ल १ भृगुवार से हुआ है। इसमें यह शंका होती है कि चैत्र शुक्ल १ से शाके का आरम्भ होता है। वैशाख शुक्ल १ से क्यों किया गया?

इसका उत्तर यह है कि उस वर्ष ज्येष्ठमास दो हुए हैं अधिक मास वर्ष और वैशाख कृष्ण १३ भौमार्क हुई है, इसलिए वैशाख शुक्ल १ मेष की संक्रान्ति के निकटवर्ती होने से रखा गया है। पूर्वोक्त वल्ली को ६० से गुणा करके नीचे का अङ्क जोड़कर जैसे अहर्गण दिन बनाए उसी प्रकार अहर्गण को ६० से भाग देने पर वल्ली रूप पुनः बन सकती है। जैसे पहले कहा है यह दिन वल्ली चक्र नं० २५ में प्रतिकोष्ट ५७ वर्ष रखा गया है तो ५७ वर्ष के दिन २०८१६ वार १ (२०८१६ इसको ७ से भाग करने पर शेष १ वार रहता है) होते हैं जिसको ६० से भाग करके पूर्वोक्त क्रम से वल्ली बनाई गई तो ०।५।४६।५६ वार १ यह वल्ली हुई सो यह क्षेपक प्रति कोष्ट में जोड़कर सारिणी बनायी गई है वल्ली रूप गणित की सरलता के कारण बनाई गई जो कि ग्रहवाटिका (मध्यम ग्रह साधन में) की उपपत्ति में बतलायी जायगी अब प्रथम ग्रहवाटिका की उपपत्ति बतलाकर फिर वाटिका द्वारा (ग्रह वल्ली) बनाने का क्रम लिखेंगे। कलियुग आरम्भ वर्ष में वैशाख कृष्ण अमावास्या गुरुवार को अर्धरात्रि समय में मध्यमसूर्य मध्यम चन्द्र मङ्गल बुधकेन्द्र बृहस्पति शुक्रकेन्द्र शनि केतु यह समस्त ग्रह राश्यादि शून्य के थे और चन्द्रोच्च राश्यादि ३।०।० में था तथा मध्यमगति प्रत्येक की कलादि यथा सूर्य की ५६।८ चन्द्र ७६०।३५ मङ्गल की ३१।२६ इत्यादि जो प्रत्येक ग्रह की वाटिका के ६ कोष्टक से जान ले क्योंकि ६ठां भाग प्रथम कोष्ठ से प्रत्येक कोष्ठ मे जोड़ा गया है यह मध्यम गति दैनिक होती है इसके दूसरे दिन वैशाख शुक्ल १ भृगुवार से अहर्गण आरम्भ हुआ है। अहर्गण को प्रत्येक ग्रह की मध्यमगति से गुणा करने पर जो कलादि हो उसकी राश्यादि बना ले (राशि १२ से अधिक होने पर १२

के भाग से शेषित को ग्रहण करें) तब मध्यम ग्रह होते हैं इस बड़े गणित की सरलता करने के निमित्त ग्रहवाटिकाएँ बनाई गई हैं जिसके लिए सारिणी कर्त्ता पं० विश्वनाथ जी को विशेष धन्यवाद है वह सरलता यह है कि ६० विकलां की १ कला और ६० कला का १ अंश और ६० अंश की दो राशि और २ राशि ६ गुणा १२ राशि का एक भगण दो भगण अर्थात् भगण पूर्ण होकर पुनः राशि शून्य रही और विकला के नीचे के दर से सब ६० ही के प्रमाण से कल्पित कर दिए गए हैं और इसी कारण षष्ठांश रखा गया। इसी कारण वाटिका में भी ६० कोष्टक किए गए हैं और दो राशि को १२ राशि मानकर अर्थात् १२ राशि का छठाभाग २ राशि (६० अंश) ही को भगण रूप में बना लिया, इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह की दैनिक मध्यमगति का छठाभाग प्रत्येक ग्रह की वाटिका में अंशादि से प्रथम कोठे में रखकर प्रत्येक कोष्ट में इतना ही धन करते हुए छठे कोष्ठ में वहीं एक दिन प्रमाण गणित आ जायगा। इस प्रकार ६० कोष्टक बना दिए जो सदैव के लिए मध्यम ग्रह सरलता से बना सके इस क्रम से चाहे जिस सिद्धांत की सारिणी बना सकता है। (इसके उदाहरण रूप में ग्रह अधिकार के अन्त में मकरन्दीय राहु और ग्रहलाघवीय राहु के अन्तर की सारिणी इसी प्रकार की बनायी है तो देखने से ज्ञात हो जायगा) और बुध केन्द्र गुरु और शुक्र केन्द्र शनि मे कुछ न्यूनता रह गई जिसके लिए बीज संस्कार किया गया।

जैसे ७५० बाद एक अंश बुध केन्द्र में धन करें और १५०० वर्ष प्रति एक अंश गुरु में ऋण करे १००० वर्ष प्रति १ अंश शुक्र केन्द्र में ऋण करे और १००० वर्ष प्रति अंश शनि में धन करे और चन्द्र केन्द्र को चन्द्र में घटाने से जो शेष रहे उसमें ३ राशि और जोड़ने (क्योंकि अहर्गण पूर्व से चन्द्रोच्च राशि ३।०।०।० था) यह चन्द्रोच्च होता है वाटिका में उपर का अंक अंश का छठाँ भाग अर्थात् अंशादि से है और वल्ली के सबसे नीचे का अर्थात् अन्त का अंक दिन है फिर उससे उपर का अंक उससे ६० गुणा है फिर उससे ऊपर का अङ्क उससे ६० गुणा इसी प्रकार प्रति ऊचा अंक ६० गुणा समझें इसी प्रकार वाटिका में विकला के नीचे का अंक विकला से ६० वाँ भाग उससे नीचे का अंक उससे ६० वाँ भाग इत्यादि समझें यह क्रम ऐसा है कि जब वाटिका का उपर का अंक ६० होने पर दो राशि होता है जो १२ राशि के तुल्य है इसीलिए यह क्रम सरल और स्पष्ट है यह इसका सिद्धान्त है और यह वाटिका की उपपत्ति हुई।

अब बल्ली द्वारा वाटिका से मध्यमग्रह बनाने का क्रम लिखते हैं—ग्रहवल्ली के चारों अंकों के तुल्य—जैसे वल्ली के सबसे नीचे के अंक तुल्य ग्रहवाटिका के कोष्ट के अंशादि चार अंक लिख ले फिर वल्ली के नीचे के अंक के उपर के अंक तुल्य कोष्ट के अंश छोड़कर चार अंक कलादि के लिख ले फिर बल्ली के उससे उपर के अंक (अर्थात् वर्तमान काल में वल्ली का प्रथमांक) तुल्य ग्रहवाटिका के कोष्ट से उपर के तीन अंक छोड़कर चार अंक लिख ले इन सबको यथा क्रम से जोड़कर यदि पहला अंक (अंश) ६० से अधिक होवे तो ६० के भाग से शेषित को ग्रहण करे। यह अंशादि योगफल हुआ यह प्रत्येक ग्रह की वल्ली होती है (अधिक दिनों में जब वल्ली का प्रथमांक ६० से अधिक होने पर वल्ली का १ अंक और बढ़कर पाँच अंक हो जायेगा इसी प्रकार और अंक बढ़कर छः सात आदि अंक हो जावेंगे परन्तु क्रम पूर्वोक्त ही रहेगा। सदैव के वास्ते फिर अंशादि योग फल वल्ली को ६ से गुणा करे गुणनफल अंशादि में अंशों की राशि बनाकर राश्यादि बना लेवें और मध्यम चन्द्र में केन्द्र घटाकर फिर ३ राशि जोड़ने से चन्द्रोच्च होता है अथवा चन्द्र केन्द्र वल्ली (अंशादि योग फल) में उपर के प्रथम अंक में ४५ अंश जोड़कर मध्यम चन्द्र बल्ली में घटाने से चन्द्रोच्च वल्ली होती है फिर इसको पूर्वोक्तानुसार ६ से गुणाकर के अंशादि का एक ही फल है। चाहे जिस क्रिया से चन्द्रोच्च बना लेवे इस प्रकार मध्यम ग्रह बनावे, फिर बुधकेन्द्र वृहस्पति शुक्रकेन्द्र शनि इनमें बीज संस्कार और करना चाहिए। जैसे कलियुग के गताब्द ५० का भाग देने से जो अंशादि लब्ध होवे वह बुधकेन्द्र

में धन कर देवे तब बुधकेन्द्र शुद्ध होता है। कलिगताब्द में १५०० का भाग देने से जो लब्ध हो मध्यम गुरु में ऋण कर देवे तब मध्यम गुरु शुद्ध होगा, और कलिगताब्द में १००० का भाग देने से जो अंशादि लब्ध हो वह शुक्र केन्द्र में ऋण और शनि में धन करने से शुद्ध शुक्रकेन्द्र और मध्यमशनि होता है। यह समस्त मध्यमग्रह मध्य रेखा के अर्ध रात्रि के समय के होते हैं १००० के भाग से जो अंशादि लब्ध हो उसका $\frac{1}{3}$ तिहाई भाग उसमें जोड़ने से ७५० के भाग का लब्ध हो जाता है और तिहाई भाग उसी में घटा देने से १५०० के भाग का होता है। शाके में ३१७९ जोड़ने से कलियुगगताब्द होता है, मध्यम ग्रह बनाने के बाद फिर उसमें देशान्तर संस्कार करना चाहिए तब स्वदेशीय ग्रह होता है। यथा अपना नगर मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम जितने योजन हो उससे प्रत्येक ग्रह की कलादि मध्यमगति से गुणा करके ८० का भाग देने से जो विकलादि लब्धि हो उससे यदि अपना नगर मध्य रेखा से पूर्व होवे तो ऋण पश्चिम होवे तो धन इसका संस्कार मध्यग्रह में करने से स्वदेशी देशान्तर संस्कृत मध्यमग्रह अर्द्धरात्रि के होते हैं। यदि अगले दिन प्रातः ६ बजे के बनाना हो तो प्रत्येक ग्रह की कलादि मध्यमगति का चतुर्थ भाग प्रत्येक ग्रह में जोड़ दे और वक्रगति होने से राहु में घटा देवे तो प्रत्येक ग्रह अगले दिन प्रातः ६ बजे के हो जावेंगे अथवा अगले दिन मध्याह्न के बनाना हो तो अर्द्ध भाग जोड़ देने से दूसरे दिन के मध्याह्नकालीन मध्यमग्रह हो जावेंगे। इसी प्रकार जिस समय के चाहे अर्द्ध रात्र के चालन के अनुसार अभीष्ट कालीन ग्रह बना सकता है, परन्तु उदय या अस्त कालीन ग्रह बनाने में चर संस्कार करना चाहिए। सूर्य कभी ६ बजे पहले कभी ६ बजे बाद उदय होता है सो ६ बजे का और सूर्योदय काल का जो अन्तर है वही चरकाल है और जितने दिन आगे के ग्रह बनाने हो चालन देकर बना लेवे। यदि वर्ष भर के साप्ताहिक बनाना है तो सारिणी चक्र नं० ५२ में प्रत्येक ग्रह की मध्यम गति दिन १३-१४-१५-१६-१७ की दिखलाई है। यदि ७-८-९ दिन की गति जानना हो तो प्रत्येक ग्रह वाटिका के छठे कोष्ठ की अंशादि गति को अभीष्ट दिन से गुणा करके अभीष्ट दिन की गति बना लेवे फिर ग्रह में चालन देता हुआ वर्ष भर की अवधि के मध्यम ग्रह बना लेवें वर्ष के आदि और मध्य और अंत में वल्ली से मध्यम ग्रह बना लेवे फिर चालन देकर बनावें जब ठीक ठीक मिल जावे तब शुद्ध जाने नहीं तो फिर जाँच करके शुद्ध कर लेवें, इस प्रकार अहर्गणाधिकार तथा मध्यमाधिकार का क्रम हो गया।

अब इसका उदाहरण लिखते हैं—अभीष्ट शाके १८४९ में मार्ग शु० १५ वृहस्पतिवार के प्रातः कालीन ६ बजे के मध्यमग्रह बनाने हैं इसलिए सारिणी चक्र नं० २५ व २६ तथा पक्षचालन सारिणी चक्र नं० २७ से मार्ग शु० १५ का चालन देकर ग्रह सब जोड़कर तथा वारों को अलग जोड़कर उसमें ७ का भाग देकर वार वृहस्पति और ग्रह दिन वल्ली ८।३०।१२।३८ यह हुई जो अभ्यास बनाकर दिखलाया है—

च. नं. २५ शा० १७९९ में	८	२५	३	४७	३
च. नं. २६ शेषाब्द ५० में	०	५	४	४०	३
च. नं. २७ मार्ग शु. १५ में	०	०	४	११	६
	८	३०	१३	३८	५
					वृहस्पति

अब बल्ली ८।३०।१२।३८ इसके दिन बनाने के निमित्त ६० से प्रत्येक को गुणा करके जोड़ते हुए अन्त के अंक को जोड़कर क्रिया बन्द करके सर्वदिन १८३६७५८ हुए, वार जाननेके लिए ७ का भाग दिया तो शेष ० शून्य रहा शुक्रादि होने से वृहस्पतिवार हुआ पूर्वोक्त दिन १८३६७५८ यह कलियुग के आरम्भ से लेकर अभीष्ट समय तक के दिन है,

फिर १८३६७५८ को विपरीत क्रिया अर्थात् ६० से भाग देकर उपर के अंक वल्ली रूप बनाने से पूर्वोक्त वल्ली ८।३०।१२।३८ हो गई। अब बल्ली बनी रहे और वार की जाँच हो जावे इसका क्रम यह है कि पहले सब अंकों को अलग अलग ७ से भाग करके शेषित को रखे फिर गुणक अंक क्रमानुसार १।२ ४।१ यह जो है इनसे क्रमानुसार गुणकर फिर सबको जोड़कर ७ का भाग देने से जो शेष रहे उसे भृगु आदि वार जाने। यह इसकी जाँच है जैसे वल्ली ८।३०।१२।३८ के प्रत्येक अंक को ७ के भाग से शेषित करने पर १।२।५।३ यह रहे इनको गुणक १।२।४।१ से गुणा कर १।४।२०।३ हुए इनका योग २८ हुआ इसमें ७ का भाग देने से ० रहा शुक्र आदि गणना से बृहस्पतिवार हुआ सो ठीक है। यदि वल्ली के ४ अंक से बढ़कर और अधिक हो जाय तब भी गुणक उल्टे क्रम से 'अर्थात् नीचे से क्रमानुसार १।४।२।१ पुनः १।४।२।२।१ इसी प्रकार जाने इत्यादि और वल्ली के सर्व दिन अहर्गण में १६८७८५१- दिन घटाने से अथवा वल्ली में ७।४८।५०।५१ घटाने से ग्रहलाघवीय अहर्गण तथा वल्ली होती है। जिसका वार भौमादि जाने और ग्रहलाघवी के अहर्गण में १२३११४ दिन जोड़ने से करण कुतूहल का अहर्गण होता है। जिसका बार बृहस्पति आदि से होता है और ग्रह लाघव के अहर्गण में ४४०३६८४४७८ दिन जोड़ने से सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण होता है। जिसका वार शनिवार आदि देकर गिना जाता है यह अहर्गण व ग्रह दिन वल्ली का उदाहरण हो गया।

अब ग्रह दिन वल्ली ८।३०।१२।३८ द्वारा ग्रह वाटिका से मध्यम ग्रह बनाकर अभ्यास सहित दिखलाते हैं। यथा—पूर्वोक्त वल्ली ८।३०।१२।३८ है। पूर्वोक्त क्रमानुसार अभ्यास में देखना चाहिए, जैसे वल्ली के नीचे के चतुर्थांक तुल्य सूर्यवाटिका चक्र नं० १६ से अंशादि ६।१४।३१।४४ हुए और वल्ली के उससे उपर के अंक १२ तुल्य कोष्ठ से अंश का अंक छोड़कर कलादि ५८।१६।१०।२० हुए इनको भी अंशादि जाने फिर वल्ली के उससे उपर के अंक ३० तुल्य कोष्ठ से उपर के २ अंक छोड़कर ४०।५०।५२।१ हुए फिर उससे ऊँचे के अंक ८ तुल्य कोष्ठ से उपर के ३ अंक छोड़कर ५३।३३।५२।१६ हुए। इन सबको अंशादि मानकर जोड़ा तो योगफल ३८।५५।३६।२१ हुआ। इसको ६ से गुणा करके राश्यादि बनाई तो ७।२३।३३।३८ यह मध्य रेखा का मध्यम सूर्य हुआ। इसी प्रकार अभ्यास में लिखते हैं—

चक्र नं० १६ से

सूर्य	६	१४	३१	४४
	५८	१६	२०	२०
	४०	५०	५२	१
	५३	३३	५२	१६
	३८	५५	३६	२१
				६ गुणा
	७	२३	३३	३८
देशान्तर—			०	१२ ऋण
निशि—	७	२३	३३	२६

चालन ऋण प्रातः ६ बजे से अर्द्धरात्रि का ४४।२१

निशि—	७	२३	३३	२६	
			—४४	२१	ऋण
प्रातः ६ बजे का मध्यरवि—	७	२२	४९	५	

चक्र नं० १७

चन्द्र—	२३	२७	०	४९	
	२१	९	४४	७	
	५४	२०	१९	५	
	२९	२५	५	२५	
	८	२२	९	२६	
				६	गुण
	१	२०	१२	५६	
देशान्तर—			२	४८	ऋण
निशि—	१	२०	१०	८	
चालन—		९	५२	५६	ऋण
	१	१०	१७	१२	

प्रातः ६ बजे का मध्य चन्द्र

चक्र नं० १८

चन्द्र केन्द्र—	२२	४४	४१	१९	
	७	४७	४७	६	
	२९	२७	४८	३८	
	५१	२४	१०	१३	
	५१	२४	२४	१६	
				६	गुण
	१०	८	२४	२५	
देशान्तर—			२	४६	ऋण
निशि—	१०	८	२१	३९	
चन्द्रकेन्द्र—		९	४७	५५	ऋण
	९	२८	३३	४४	

प्रातः ६ बजे का चन्द्र केन्द्र ।

नोट—६ से गुणा करने पर विकला को छोड़कर लिखा गया है ।

चक्र नं० १९

मंगल—	३	१९	७	३८	
	२	५२	५६	२२	
	१२	२०	५५	४४	
	१७	३४	५१	५५	
	३६	७	५१	३९	
				६	गुण
	७	६	४७	१०	
देशान्तर—			०	७	ऋण
निशीथे—	७	६	४७	३	
चालन—			२३	३५	ऋण
	७	६	२३	२८	

प्रातः ६ बजे का मध्यम भौम

चक्र नं० २०

बुधकेन्द्र—	४०	१९	२६	५३	
	४७	११	३८	५७	
	५९	७	२२	४४	
	४५	५८	३	५४	
	१२	३६	३२	३८	
				६	गुण
	२	१५	३९	१५	
वीजं—		६	४२	१४	धनं
	२	२२	२१	२९	
देशान्तर—			०	३९	
निशीथे—	२	२२′	२२′	८″	
चालन वक्रगति होने से धन—		२′	१९′	४८″	
	२	२४	४१	५६	

प्रातः ६ बजे का बुधकेन्द्र

चक्र नं० २१

बृहस्पति—	०	३१	३४	३५	
	६	५८	१७	३७	
	५५	४४	२	५८	
	५१	४४	४७	४३	
	५७	५८	४२	५३	
				६	गुण
	११	१७	५२	१७	
वीजं—		३	२१	७	ऋण
	११	१४	३१	१०	
देशान्तर—			०	१	ऋण
निशीथे—	११	१४	३१	६	
चालन—			३	४५	ऋण
	११	१४	२७	२४	

प्रातः ६ बजे के मध्यम गुरु

चक्र नं० २२

शुक्रकेन्द्र—	५६	५	४२	४८	
	४६	०	५३	६	
	२	१२	४५	३६	
	३५	२४	६	४६	
	१६	४३	३१	१६	
				६	गुण
	३	२८	२१	६	
वीजं—		५	१	४०	ऋण
	३	२३	१६	२६	
देशान्तर—			०	७	विप.धन
निशि—	३	२३	१६	३३	
चालन—			२७	४५	वि० धन
	३	२३	४७	१८	

प्रातः ६ बजे के शुक्र केन्द्र।

चक्र नं २३

शनि—	०	१२	४२	२४	
	४	००	४५	४६	
शनि में देशान्तर की	१	५४	२७	८	
विकला मात्र है	३०	३१	१४	२२	
	३६	३६	६	४०	
				६	गुण
	७	६	५४	५८	
वीजं—		५	१	४०	धनं
निशीथे—	७	१४	५६	३८	
चालन—			१	३०	ऋण
	७	१४	५५	८	

प्रातः ६ बजे का मध्यम शनि

चक्र नं० २४

केतु—	५६	३६	५१	५५	
	५३	३८	३६	१०	
	६	१५	२५	१	
	४०	६	४०	२३	
	३६	४०	२७	२६	
				६	गुण
	७	२८	२	४५	
	६	राशि जोड़ा			
निशि-केतु राहु—	१	२८	२	४५	
चालन—			२	२३	वि०धनं
	१	२८	५	८	

प्रातः ६ बजे का राहू।

ये संस्कार प्रात; ६ बजे के मध्यम ग्रह के हुये।

बीज संस्कार करने के निमित्त शाके १८४६ में ३१७९ जोड़ने से ५०२८ यह कलिगताब्द हुआ। इसमें १००० का भाग देने से लब्धि अंशादि ५।१।४० हुई। इसको शुक्र केन्द्र में ऋण और शनि में धन किया गया है और कलिगताब्द ५०२८ में ७५० का भाग देने से लब्ध अंशादि ६।४२।१४ को बुध केन्द्र में धन किया गया है। तथा कलिगताब्द ५०२८ में १५०० का भाग देने से लब्ध अंशादि ३।२१।७ को वृहस्पति में ऋण किया गया है फिर देशान्तर संस्कार अर्थात् अभीष्ट नगर देहली जो अनुमानतः मध्यरेखा से १७ योजन पूर्व है इसलिये देशान्तर योजन १७ से प्रत्येक ग्रह की कलादि मध्यम गति को अलग-अलग गुणने से, यथा सूर्य की मध्यम गति ५९।८, चन्द्र ७१०।३५ चन्द्र केन्द्र ७८३।५३, मंगल ३१।२६, बुधकेन्द्र १८६।२४ ऋण, वृहस्पति ५।०, शुक्रकेन्द्र ३७।० ऋण, शनि ०।२।०, राहु या केतु ३।११ ऋण वक्र को गुणा करके ८० का भाग देने से अलग-अलग लब्धि विकलादि इस प्रकार हुई, यथा सूर्य की कलादि.०।१२, चन्द्र की २।४८, चन्द्र केन्द्र की २।४६, मंगल ०।७, बुध केन्द्र ०।३९, बृहस्पति ०।१, शुक्र केन्द्र ०।७, शनि ०।०, राहु ०।० इनका देशान्तर संस्कार प्रत्येक का उपर किया गया है। जिनकी गति ऋण है। जैसे बुधकेन्द्र शुक्रकेन्द्र में विपरीत ऋण के स्थान धन संस्कार किया गया है। बीजसंस्कृत तथा देशान्तरसंस्कृत ग्रह अर्धरात्रि (निशीथ) समय के हुए। इनको प्रातः ६ बजे बनाने के निमित्त प्रत्येक ग्रह का (३/४ पौना) मार्गी ग्रहों में ऋण और वक्री में धन संस्कार या तो प्रातः ६ बजे के मध्यम ग्रह होवें जैसा अभ्यास में ऊपर किया गया है। यथा—चक्र में लिख दिये हैं—

सूर्य	चन्द्र	च०उ०	मं०	बु०के०	वृ०	शु०के०	शनि	राहु
७	१	६	७	२	११	३	७	१
२२	१०	११	६	२४	१४	२३	१४	२८
४९	१७	४३	२३	४१	२७	४७	५५	५
५०	१२	२८	२८	५६	२४	१८	८	८

ये मध्यम ग्रह शाके १८४६ मार्ग शु० १५ गुरुवार प्रातः ६ बजे के हुए। यदि वर्ष भर की अवधियों में मध्यम ग्रह बनाना हो तो चलन देकर सब अवधियों के बना लेवें फिर स्पष्ट करें।

अब ग्रहों को स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं। प्रथम सूर्य चन्द्र स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं—मध्यम रवि में रवि का मन्दोच्च राश्यादि चक्र नं० २९ के ऊपर जो लिखा है भगणादि करके लिखा है अतः भगण को छोड़कर राश्यादि २।१७।१७।२१ केवल ४ अंक लेवें और मध्यम रवि में घटावें। जो राश्यादि शेष बचा वह रवि का मन्द केन्द्र होता है और चन्द्रोच्च* पहले मध्यमाधिकार में कर चुके हैं।

मध्यम चन्द्र में चन्द्रोच्च घटाने से शेष बचे वह राश्यादि चन्द्र का मध्य केन्द्र होता है। रवि तथा चन्द्र के मन्दकेन्द्र (भुजांश क्रम यह है कि यदि राश्यादि ३ से कम हो तो उसी के अंशादि कर लेवें वह स्वयं भुज है यदि ३ राशि से अधिक हो और ६ राशि से कम हो तो उसे ६ राशि में घटाने से शेष रहे वह भुज है। यदि ६ राशि से अधिक हो और ९ राशि से कम हो तो उसमें ६ राशि घटाने से शेष रहे वह भुज है। यदि ९ राशि से अधिक और १२ से कम हो तो १२ राशि में घटाने से जो शेष रहे वह भुज होता है) जो भुज में राशि होवे उसके भी अंश करके अंशों में जोड़ लेवें और अंशादि बना लेवें। पूर्वोक्त रवि केन्द्र भुजांश तुल्य कोष्ठ रवि फल सारणी

*विशेष—चन्द्रोच्च चक्र में चन्द्रकेन्द्र ९।२८।३३।४४ को चन्द्र १।१०।१७।१२ में घटाने से शेष रहा २।११।४३।२८ उसमें ३ राशि जोड़ने से राश्यादि ६।११।४३।२८ यह चन्द्रोच्च हुआ।

चक्र नं० २६ से और चन्द्र के मन्द केन्द्र भुजांश तुल्य कोष्ठ से चन्द्रफल सारणी चक्र नं० ३० से सानुपात अंशादि फल लाकर यदि मंद केन्द्र* मेषादि हो ती फल ऋण और तुलादि हो तो फल धन !

इसका संस्कार मध्यम सूर्य में करने से स्पष्ट सूर्य तथा मध्यम चन्द्र में करने से चन्द्रमा स्पष्ट होता है।

(सानुपात फल लाने का यह क्रम है कि भुजांश तुल्य कोष्ठ में जो अंशादि हो वह और एक कोष्ठ आगे में जो अंशादि हो उसका परस्पर अन्तर करके उस अन्तर से भुजांश की शेष कलादि से गुणा करके ६० का भाग देने से जो कलादि लब्ध होगा वह यदि अग्रिम कोष्ठ अधिक हो तो पूर्व कोष्ठ के अंशादि में जोड़ देवें। यदि (ऋण) कम हो तो पूर्व कोष्ठ में ऋण करे घटावें तब जो प्राप्त हो वह अंशादि सानुपात फल होता है इसी प्रकार सब जाने।)

अब सूर्य चन्द्र की गति स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं। पूर्वोक्त भुजांश परिमित चन्द्रफल सारणी से सानुपात कलादि गतिफल लाकर और चन्द्र के मन्द केन्द्र पूर्वोक्त भुजांश परिमिति चन्द्रफल सारणी से सानुपात कलादि गतिफल लाकर यदि केन्द्र कर्कादि हो तो फल धन और केन्द्र मकरादि हो तो गतिफल ऋण जानकर सूर्य की मध्यम गति कलादि ५६।८ तथा चन्द्र की मध्यम गति कलादि ७६०।३५ में संस्कार करने से सूर्य तथा चन्द्र की कलादि गति स्पष्ट होती है।

अब पहले सूर्य चन्द्र को स्पष्ट करने का उदाहरण दिखलाकर फिर पञ्चतारा स्पष्ट क्रम लिखेंगे। उदाहरण— पूर्वोक्त मध्यम रवि ७।२२।४६।५ है इसमें रवि का मन्दोच्च राश्यादि २।१७।१७।२१ को घटाया तो ५।५।३१।४४ यह रवि का मन्द केन्द्र हुआ। इसके भुजांश २४।२८।१६। तुल्य चक्र नं० २६ अंशादि रवि फल सारणी से सानुपात अंशादि फल ०।५४।५१ हुआ (सानुपात इस प्रकार हुआ कोष्ट २४ में फल अंशादि ०।५३।५३ हैं और आगे के कोष्ठ में इससे अधिक कलादि २।५। (अन्तर) है इससे शेष कलादि २८।१६ को गुणा करके ६० का भाग देने से विकलादि ५७।५३ हुए इसको ५८ विकला मानकर पूर्व कोष्ठ फल अंशादि ०।५३।५३। में अग्रिम कोष्ठ अधिक होने से जोड़ा तो अंशादि ०।५४।५१ को मन्द केन्द्र मेषादि होने से मध्यम सूर्य ७।२२।४६।५ में ऋण अर्थात् घटाया तो ७।२१।५४।१४ यह स्पष्ट सूर्य हुआ।

अब गति स्पष्ट करते हैं—पूर्वोक्त भुजांश २४।२८।१६ पूर्वोक्त (चक्र नं० २६) शेष सानुपात कलादि २।३ गतिफल हुआ। इसको मन्द्र केन्द्र कर्कादि होने से रवि की मध्यम गति कलादि ५९'८ में जोड़ा तो ६१।११ यह सूर्य की स्पष्ट गति हुई।

चन्द्र स्पष्ट कहते हैं पूर्वोक्त मध्यमचन्द्र १।१०।१७।१२ है। इसमें पूर्वोक्त चन्द्रोच्च ६।११।४३।२८ को घटाया तो ६।२८।३३।४४ यह चन्द्र का मन्द केन्द्र हुआ। इसके भुजांश २८।३३।४४ परिमित चक्र नं० ३० अंशादि चन्द्र फल सारणी द्वारा सानुपात अंशादि २।२५।२३ पल हुआ। इसको मन्द केन्द्र तुलादि होने से धन अर्थात् मध्यम चन्द्र १।१०।१७।१२ में जोड़ा तो राश्यादि १।१२।४२।३५ यह चन्द्र स्पष्ट हुआ।

अब गति स्पष्ट करते हैं—पूर्वोक्त भुजांश २८।३३।४४ तुल्य पूर्वोक्त चक्र नं०३० से सानुपात कलादि ६०।४७ गति फल हुआ इसको चन्द्र का मन्द केन्द्र कर्कादि होने से चन्द्र की मध्यम गति ७९०।३५ में जोड़ा जोड़ा तो ८५१।२२ यह कलादि चन्द्र की स्पष्ट गति हुई यह प्रातः ६ बजे के सूर्य चन्द्र स्पष्ट हुए। यदि उदयकालीन बनाना हो तो पहले दिनमान जानने पर सूर्योदय काल जानकर चर पल का चालन देकर अर्थात् चर संस्कार करके उदयकालीन ग्रह बना लेवें प्रातः ६ बजे का और उदय का जो अन्तर है वह ही चालन है।

*विशेष—यदि मन्दोच्च में मध्यम सूर्य चंद्र घटाकर उस केन्द्र का फल लावे तो केन्द्र मेषादि होने से धन तुलादि होने से ऋण करे तब भी ग्रह स्पष्ट होता है दोनों प्रकार समानता होती है।

अब प्रथम अयनांश साधन क्रम लिखते हैं, उदाहरण सहित—शाके में ४२१ घटाकर शेष में शेष का दशवाँ भाग घटाकर शेष जो रहे वह अयनांश कलादि है। उसे ६० के भाग से अंशादि बना लेवें। अर्थात् प्रतिवर्ष ५४ विकला अयनांश बढ़ता है इस सिद्धान्त का परमायनांश २७ अंश तक क्रमोत्क्रम से होता है और दूसरे पक्ष (ग्रह लाघवीय) में परमायनांश ३० अंश तक क्रम उत्क्रम से होता है अर्थात् इस पक्ष में प्रतिवर्ष १ कला बढ़ता है। जिसका क्रम यह है कि शाके में ४४४ घटाकर शेष कलाहोती है। कलाओं में ६० का भाग करके अंशादि बना लेवें। उदाहरण—मकरन्दीय क्रम का अयनांश बनाते हैं, अभीष्ट शाके १८४९ में ४२१ घटाया तो शेष १४२८ हुआ। इसके १०वें भाग १४२।४८ को १४२८।० में घटाया तो शेष कलादि १२८५।१२ हुई। इसके अंशादि बनाये, अंशादि २१।२५ १२ यह अयनांश आरम्भ वर्ष का हुआ। प्रतिमास विकलादि ४।३० बढ़ता है इसलिए वृश्चिक के सूर्य में ८ मास का विकलादि ३६।० हुआ। इसको पूर्वोक्त २१।२५।१२ में जोड़ा तो २१।२५।४८ यह अंशादि तात्कालिक अयनांश हुआ। ग्रह लाघवीय अयनांश उदाहरण—शाके में ४४४ घटायें तो शेष कला १४०५ हुइ, इसके अंशादि २३।२५ यह वर्षारम्भ में अयनांश हुआ। इसमें प्रतिमास ५ विकला बढ़ती है (अथवा ग्रहलाघवीय) अयनांश का दशवाँ भाग उसी में घटाकर उसमें कलादि २०।४२ जोड़ने से अयनांश* होता है अयनांश की उपपत्ति\$ नीचे लिखते हैं।

अब दिनमान साधनक्रम लिखते हैं—स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोड़कर सायनरवि राश्यादि के अंशादि बनाकर उसके अंशों में ६ का भाग देकर जो लब्धि हो उससे दिनमान सारिणी चक्र नं० २८ लब्ध अंशादि तुल्य सानुपात घटिकादि जो प्राप्त हो वही दिनमान जानें १ कोष्ठ प्रति ६ दिन का जानें। एक कोष्ठ से जो दूसरे कोष्ठ का अन्तर हो उसका छठाँ भाग चालन देकर प्रतिदिन का बना लेवे।

उदाहरण—सूर्यस्पष्ट ७।२१।४६।१४ में अयनांश २१।२५।४८ को जोड़ा तो ८।१३।२०।२ यह सायनार्क हुआ। इसके अंशादि २५३।२०।२२ (केवल अंशों) में ६ का भाग दिया तो लब्ध ४२ हुये और शेष अंशादि १।२०।२ रहे। लब्ध ४२ परिमित कोष्ठ चक्र नं० २८ में कान्यकुब्ज देश के कोष्ठ (क्योंकि देहली और कान्यकुब्ज का काशी की अपेक्षा थोड़ा अन्तर है) में २५।५८ है। और अग्रिम कोष्ठ में ८ पल कम है इस अन्तर ८ पल से शेष अंशादि १।२०।२ को गुणा किया तो १०।४०।१६ हुआ इसमें ६ का भाग दिया तो २ पल लब्ध हुये अग्रिम कोष्ठ न्यून होने से २५।५८ में ०।०२ घटाया तो २५।५६ घटिकादि यह सानुपात् दिनमान हुआ।

अब स्वदेशीय दिनमान जानने के लिए पलभा तथा दिनमान की उपपत्ति तथा क्रम उदाहरण सहित लिखते हैं—जिस दिन सायन रवि राश्यादि ०।०।०।० के होय उस दिन (ता० २० या २१ मार्च के निकट अथवा मेष

---

*विशेष—मकरन्दीय अयनांश का नवां भाग जोड़कर फिर २३ कला जोड़ने से ग्रहलाघवीय अयनांश होता है। और ग्रहलाघवीय अयनांश में २३ कला घटाकर फिर शेष का १० वाँ भाग घटाने से मकरन्दीय होता है। परन्तु जब उक्त क्रमानुसार अयनांश घटता हो तो इसके विपरीत २३ कला घटाने के बजाय जोड़ना चाहिये।

\$विशेष—उपपत्ति—यहाँ युग के ४३२०००० में ६०० बार भूचक्र पूर्व को परिलम्बमान होता है। ६०० भगण होते हैं। इसलिए युग गताब्द ६०० में गुणा करके ४३२०००० का भाग देने से लब्ध भगणादि होते हैं। भगण छोड़कर राश्यादि को भुज बनाकर भुजांश को ३ से गुणा करके १० का भाग देने से लब्ध अंशादि अयनांश होता है। जिसका सिद्धान्त यह है कि प्रतिवर्ष भुजांश ३ कला बढ़ता है इसको ३ से गुणा कर १० का भाग देने से ५४ विकला प्रतिवर्ष बढ़ता है। ९० भुजांश में २७ परमायनांशाः है।

की संक्रान्ति से अयनांश दिन कम करने से यह समय होता है) सामान्य की भूमि पर १२ अंगुल के तिनके के स्थान १२ हाथ का बाँस मध्याह्न काल में खड़ा करे। उसकी छाया जितने हाथ होय उतने अंगुल जानकर और अंगुल से नीचे का व्यंगुल जानें (० व्यंगुल १ अंगुल) यह छाया ही अंगुलात्मक पलभा (अक्षभा होती है। यदि बाँस की छाया उत्तर होय तो अपना देश लङ्का (पूर्वापर रेखा) से उत्तर जाने। यदि छाया दक्षिण हो तो अपना देश दक्षिण जानें।

चरखण्ड बनाने का क्रम लिखते हैं—पलभा मूलादि को ३ स्थान में रखकर एक स्थान में १० से गुणा करें जो पलात्मक होय वह पलात्मक प्रथम चरखण्ड होता है। फिर दूसरे स्थान में ८ से गुणा करे जो प्राप्त हो वह पलात्मक द्वितीय चरखण्ड होता है। फिर तीसरे स्थान में १० से गुणा कर ३ से भाग देवे जो प्राप्त हो वह पलात्मक तृतीय चरखण्ड होता हैं। इन तीनों चरखण्डों के योगफल को १५ घटी में जोड़कर दूना करने से जो होय उस देश में अधिक से अधिक उतना दिनमान हो सकता है। उसे ६० घटी में घटाने से जो होय कम से कम उतना दिनमान हो सकता है।

अब प्रत्येक दिन का दिनमान जानने का यह क्रम है कि सायन रवि मेष के शून्य अंश के दिन से बृष के शून्य अंश तक (३० दिन तक) प्रथम चरखण्ड पलात्मक का ३० वाँ भाग का दूना (१५ वाँ भाग) प्रतिदिन बढ़ाते हुए ३० घटी में जोड़ते जाने पर एक मास तक का दिनमान बन जाय। फिर सायनार्क वृष के शून्य अंश के दिन से मिथुन के शून्य अंश तक ३० दिन में दूसरे चरखण्ड का १५ वाँ भाग उसी में क्रमानुसार प्रत्येक दिन जोड़ने से दूसरे मास का भी मिथुन के शून्य अंश तक का बन जायगा। फिर तीसरे चरखण्ड का १५ वाँ भाग (चरखण्ड दूने का ३० भाग) क्रमानुसार प्रतिदिन १ मास तक यानी मिथुन के शून्य अंश से कर्क के शून्य अंश दिन तक पूर्वोक्त दिनमान में जोड़ने से कर्क के शून्यांश तक ३ मास का दिनमान बन जायगा फिर आगे के तीन मास में चरखण्ड उल्टे क्रम से अर्थात् तीसरे चरखण्ड का फिर दूसरे चरखण्ड का फिर प्रथम चरखण्ड का १५ वाँ भाग प्रत्येक-प्रत्येक दिन क्रमानुसार घटता हुआ तुला के शून्यांश दिन के १ दिन पूर्व तक ६ मास का बन जायगा। अर्थात् घटिकादि ३० का रह जायेगा। जितना (तीनों चरखण्डों का दूना मान) तीन मास तक बढ़ा था, उतना ही घटता जायगा। फिर प्रथम चरखण्ड द्वितीय तृतीय चरखण्ड का क्रमानुसार १५ वाँ भाग प्रतिदिन ३० घटी से मकरसायनार्क तक बना लेवे। शून्य अंश तक फिर चरखण्ड उल्टे क्रम से अर्थात् तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरखण्ड का क्रमानुसार १५ वाँ भाग प्रतिदिन बढ़ाता हुआ मेष शायनार्क के शून्य अंश दिन पूर्ण ३०।० का दिनमान बन जायगा। इस प्रकार पूर्ण वर्ष का दिनमान बना लेवे। जो सदैव के लिए काम आवेगा और इसी प्रकार दिनमान सारणी भी बनाना चाहिये। पञ्चाङ्ग बनाने वालों को चाहिए सूर्य स्पष्ट करते समय प्रत्येक अवधि में चरपल बनाकर प्रत्येक अवधि का दिनमान प्रथम बनाकर नोट करते जाना। फिर एक अवधि से दूसरे अवधि तक का जो दिनान्तर हो और जो दोनों के दिनमान का अन्तर हो प्रत्येक दिन में विभाजित करके घटा बढ़ा कर ठीक कर लिया करें। यह शुद्ध और शीघ्र बनेगा। चरपल को १५ घटी में अर्थात् सायनार्क मेषादि हो तो धन तुलादि हो तो ऋण करके दूना करने से भी दिनमान होता है।

अभीष्ट दिन का दिनमान जानने का उदाहरण—पूर्वोक्त अयनांश २१।२५।४८ को स्पष्ट सूर्य ७।२१।५४।१४ में जोड़ा तो ८।१३।२०।२ यह सायनार्क होगा। इसके भुजांश ७३।२०।२ हुए (राश्यादि भुज २।१३।२०।२ है)।

चर साधन के निमित्त चरखण्ड बनाते हैं—अभीष्ट देश देहली के पलभा अंगुलादि ६।३३ हैं। इसका १० गुणा पलात्मक ६५।३० यह प्रथम चरखण्ड हुआ। और पलभा का ८ गुणा पलात्मक ५२।२४ यह द्वितीय चरखण्ड हुआ और पलभा को १० गुणा करके ६५।३० इसका तृतीयांश (प्रथम चरखण्ड ६५।३० का) पलात्मक २१।५०

यह तृतीत चरखण्ड हुआ। अर्थात् प्रथम ६५।३० द्वितीय ५२।३० तृतीय २१।५० यह तीनों चरखण्ड हुए। पूर्वोक्त भुज राश्यादि २।१३।२०।२ है। भुज में २ राशि है। सो प्रथम चरखण्ड पलादि ३५।३० द्वितीय ५२।२४ इनका योग किया तो ११७।५४ पलादि हुए और भुज के शेष अंशादि १३।२०।२ रहे यह तीसरी राशि अथवा तृतीय चरखण्ड २१।५० का भुक्त भाग है (३० अंश में पलादि २१।५० तो अंशादि १३।२०।२ में कितना) इसलिए शेष अंशादि १३।२०।२ को चरखण्ड २१।५० से गुणा किया तो २९१।७।२३।४२ हुए इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध पलादि ९।४२ हुए। इनको पूर्वोक्त योग ११७।५४ में युक्त किया तो पलादि १२७।३६ यह चर हुआ अर्थात १२८ पल चर हुआ। उसकी घटिकादि २८ हुई। इसको सायनार्क तुलादि होने से १५ घटी में घटाया जाय १२।५२ यह दिनार्द्ध हुआ इसको दूना किया तो २५।४४ यह दिनमान हुआ। सारणी चक्र नं २८ से भी दिनमान होने का उदाहरण दिखलाते हैं:। सायनार्क राश्यादि ८।१३।२०।२ इसके सर्वांश २५३ में ६ का भाग दिया तो लब्धि ४२ हुई तो चक्र नं २८ के कोष्ठ ४२ में (काव्यकुब्ज के कोष्ठ में) (क्योंकि काशी की अपेक्षा देहली से कान्य कुब्ज का थोड़ा ही अन्तर है) घटिकादि २५।५८ है और अग्रिम कोष्ठ में ८ पल कम है इस ८ कलान्तर से शेष अंशादि १।२०।२ को गुणा किया १०।४०।१६ हुए। इसमें ६ का भाग दिया तो २ पल लब्ध हुए अग्रिम कोष्ठ न्यून होने से २५।५८ हुआ ०।२ को घटाया तो २५।५६ यह घटिकादि दिनमान सानुपात हुआ। इस प्रकार दिनमान लाना चाहिए। दिनमान जानकर उदय अस्त में घंटा मिनट जानने का यह क्रम है कि दिनमान को ६० घटी में घटाने से रात्रिमान होता है और रात्रिमान में ५ का भाग देने से जो लब्ध घण्टादि हो वह उदयमान के घण्टा मिनट होते हैं, और उदय काल के १२ घंटे मे घटाने से अस्त के घंटा मिनट होते हैं।

उदाहरण—जैसे पूर्वोक्त दिनमानघटिकादि २५।४४ है इसको ६० में घटाया तो ३४।१६ रहा इसमें ५ का भाग किया तो ६ घंटा ५१ मिनट हुये अर्थात् ६ बजकर ५१ मिनट पर सूर्य उदय होना चाहिये, और १२ में घटाया तो ५ घंटा ९ मिनट पर अस्त होना चाहिये।

अब उदय कालीन सूर्य बनाते हैं—प्रातः ६ बजे के पूर्वोक्त स्पष्ट रवि ७ २१।५४।१५ गति ६१।११ और स्पष्ट चन्द्र १।१२।४२।३५ गति ८५१।२२, है और सूर्योदयकाल ६ बजकर ५१ मिनट पर है अर्थात् घटिकादि २।८ (चरपल १२८) यह धन चालन है। सूर्य की स्पष्ट गति ६१।११ से चरचालन घटिकादि २।८ को गुणा करके ६० का भाग देने से २।१० लब्धि हुयी इसको चालन धन होने से स्पष्ट सूर्य ७।२१।५४।१४ में जोड़ा तो ७।२१।५६।२४ गति ६१।११ यह उदयकालीन सूर्य स्पष्ट हुआ। इसी प्रकार चन्द्र गतिकलादि ८५१।२२ को चालन धन घटिकादि २।८ में गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि ३०।१६ लब्ध हुये इसको चालनधन होने से स्पष्ट चन्द्र १।१२।४२।३५ में जोड़ा तो १।१३।१२।५१ गति ८५१।२२ यह उदय कालीन चन्द्र स्पष्ट हुआ इसी प्रकार उदयकालीन ग्रह बनाना चाहिये।

अब क्षेपक रूप में प्रसंग वश स्पष्ट सूर्य चन्द्र से तिथि नक्षत्र और योग बनाने का क्रम तथा उदाहरण लिखते हैं—क्रम स्पष्ट चन्द्रगति सहित में स्पष्ट सूर्यगति सहित घटावे जो राश्यादि शेष रहे—राशि के अंश बना कर अंशों में जोड़कर १२ का भाग देवे जो लब्ध होवे वह शुक्लादि गत तिथि जाने और जो अंशादि शेष रहे वह वर्तमान तिथि का गतभाग जाने उसे १२ अंशो में घटा देवे जो शेष रहे वह तिथि का भोग्य भाग जाने फिर भोग अंशादि का विकला बनाकर ६० से गुणा करके उसमें चन्द्र सूर्य की गति के अन्तर की विकलाओं का भाग देवे जो घटिकादि लब्धि होवे वह वर्तमान तिथि की भोग्य घटिकादि जाने अर्थात् उस दिन वह तिथि उतनी घटिकादि जाने और नक्षत्र साधन में स्पष्ट चन्द्र के राश्यादि की कलादि बनाकर उसमे ८०० का भाग देवें जो लब्धि होवे वह अश्विन्यादि

गत नक्षत्र जाने और जो शेष कलादि रहे वह वर्तमान नक्षत्र की भुक्त कलादि भुक्त भाग जाने उनको ८०० कला में घटाकर जो शेष कलादि रहे वह नक्षत्र की भोग्य कलादि जाने भोग्य कलादि को विकला बनाकर उसको ६० गुणा करके उसमें चन्द्रमा का स्पष्ट गति का विकलाओं का भाग देने से जो घटिकादि लब्धि होय वह नक्षत्र की भोग्य घटिकादि होती है और योगसाधन मे पूर्वोक्त उदय कालीन स्पष्ट सूर्य गति सहित और स्पष्ट चन्द्रगति सहित इन दोनों के योग को राश्यादि की कलादि बना लेवे। कलाओं में ८०० का भाग (८०० कला १३ अंश २० कला) देवे जो लब्धि होवे वह गतयोग जाने और जो कलादि शेष रहें वह वर्तमान योग की भुक्तकलादि जाने। भुक्त कलादि को ८०० कला में घटाने से जो शेष रहें वह योग की भोग्य कलादि होती है। उनकी विकला बनाकर उसे ६० से गुणा करके फिर उसमें सूर्य चन्द्र के गति के योग की विकलाओं का भाग देवे जो घटिकादि लब्धि होवे वह वर्तमान योग भोग्य घटिकादि होती हैं। पूर्वोक्त क्रम उदयकालीन स्पष्ट चन्द्र से बनाने पर वही घटिकादि उस दिन सूर्योदय से जानना चाहिये।

अब पूर्वोक्त क्रमानुसार तिथी नक्षत्र और योग बनाने का उदाहरण अभ्यास बनाकर दिखलाते हैं—शाके १८४७ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ गुरौ सूर्योदय कालीन पूर्वोक्त स्पष्ट सूर्य ७।२१।५६।२४ गति ६१।११ और स्पष्ट चन्द्र १।१३।१२।५१ गति ८५१।२२ है।

तिथि साधनम्

स्प० चन्द्र — १।१३।१२।५१ ८५१।२२

स्प० रवि — ७।२१।५६।२४ ६१।११

५।२१।१६।२७ १९।११

९ंश बनाये — ३०

१५०

२१

१२)१७१(१४

१२

५१

४८

३।१६।२७

१२। ०। ०

गतभाग — ३।१६।२७

अंशादिभोग्य ८।४३।३३

६०

४८०

४३

५२३

४७४०० वि०

११

४७४११ विकला

भाजकशुक्लादि गततिथी

५२३

६०

३१३८०

३३

विकला ३१४१३

६०

४७४११) १८४८४७८० (३९ घटि

१२२२३३

४६२४५०

४२६६९९

३५७५१

६०

४७४११) २१४५०६० (४५ पल

१८९६४४

२४८६२०

२३७०५५

११५६५

पूर्णमासी की भोग्य घटिकादि ३९।४५ हुयी

नक्षत्र साधन

स्प॰ चन्द्र १।१३।१२।५१
३०
३०
१३
४३
६०
कला २५८० गतनक्षत्र
१२
८००)२५९२(३
२४००
१९२।५१

चतुर्थनक्षत्र का गतभाग

८५१।२२
६०
५१०६०
२२
५१०८२ विकला भाजक

८००।००
१९२।५१ गतभाग
६०७। ९ भो॰ भाग
६०
३६४२०
९
३६४२९ विक॰
६०
५१०८२) २१८५७४० (४२ घ०
२०४३२८
१४२४६०
१०२१६४
४०२९६
६०
५१०८२) २४१७७६० (४७ पल
२०४३२८
३७४४८०
३५७५७४
१६९०६

रोहिणी नक्षत्र घटी पल ४२।४७

योग साधन

स्प॰ सूर्य—७।२१।५६।२४
स्प॰ चंद्र—१।१३।१२।५१
९। ५। ९।१५
३०
२७०
५
२७५
६०
कला १६५००
९
८००)१६५०९(२० गतयोग
१६०००
५०९।१५
५४७५३) १०४६७०० (१९ घटी
५४७५३
४९९१७०
४९२७७७
६३९३
६०
५४७५३) ३८३५८० (७ पल
३८३२७१
३०९

६१।११
८५१।२२
९१२।३३
६०
५४७२०
३३
५४७५३ विकला भाजक।

८००। ०
५०९।१५ भोग भुक्त भाग
२९०।४५ भोग्य
६०
१७४००
४५
४७४४५ विकला
६०
१०४६७००

२१ वाँ सिद्धियोग घटिकादि १९।७ हुआ।

नोट—[यदि विपरीत साधन अर्थात् मध्यम रविमें प्रत्येकग्रह घटाकर क्रिया करें तो फल मेषादि में धन तुलादि में ऋण करें दोनों क्रियाओं से स्पष्ट हो सकता है ऋण साधन और धनका ऋण भी हो जाता है परन्तु परिणाम एकसा ही होता है।

इसी प्रकार तिथी नक्षत्र योग स्पष्ट करना चाहिये। विशेषतया सूर्य चन्द्र ग्रहण में अमावाश्या तथा पूर्णिमा इसी प्रकार सूर्य चन्द्र द्वारा अवश्य सदैव स्पष्टकरना चाहिये।

अब भौमादि पंचतारा स्पष्ट करने का क्रमलिखते हैं। राश्यादि मध्यमसूर्य के तुल्य मध्यम बुध तथा मध्यम शुक्र को जाने और बुधकेन्द्र व शुक्रकेन्द्र को पहले बतला चुके हैं। मध्यम मंगल तथा मध्यम गुरु मध्यम शनि में अलग अलग मध्यम रवि को घटाने से जो शेष रहैं वह प्रत्येक ग्रहका अलग-अलग शीघ्रकेन्द्र होता है। बुध शुक्र का शीघ्रकेन्द्र पहले बना चुके हैं। यदि शीघ्र केन्द्र ६ राशि तक होवे तो उसीके अंशादि कर लेवे, यदि ६ राशि से अधिक होवे तो उसे १२ राशि में घटाकर जो शेष रहे उसके अंशादि बना ले फिर अंशादितुल्य ग्रहफल सारिणी द्वारा (चक्र नं० ३१ से ३५ तक) सानुपात अंशादि फल जो प्राप्त हो (सानुपात क्रम का फल पहले बतला चुके हैं सर्वत्र उसी क्रम से जाने) उसका आधा करके मध्यम ग्रह में यदि शीघ्रकेन्द्र मेषादि हो तो ऋण और तुलादि हो तो धनकर दे तब शीघ्रफलार्द्धसंस्कृतग्रह होता है। फिर शीघ्र फलार्द्धसंस्कृत ग्रह में ग्रह का मन्दोच्च राश्यादि जो प्रत्येक ग्रहफल सारिणी के उपर मन्दोच्च भगणादि लिखे हैं उसमें भगण छोड़कर राश्यादि ४ अङ्क ले और वह घटा देवे जो शेष रहे वह ग्रह का मन्दकेन्द्र होता है। यदि मन्द केन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो पूर्ववत १२ राशि मे घटाकर केन्द्र के पूर्वोक्त अंशादि बना ले फिर अंशादि परिमित सारिणी द्वारा सानुपात् अंशादि मन्दफल लावे। इस सम्पूर्ण मन्द-फल को यदि मन्द केन्द्र मकरादि हो तो ऋण और कर्कादि हो तो धन, इसका संस्कार मध्यम ग्रह में करने से मन्दस्पष्ट ग्रह होता हैं और इसी मन्दफल अंशादि को ग्रहवत् धन तथा ऋण इसका संस्कार शीघ्रकेन्द्र मे करने से द्वितीय शीघ्र-केन्द्र होता है पुनः इसी द्वितीय शीघ्र केन्द्र के (यदि ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में घटाकर पूर्ववत अंशकर लेवे) अंशादि परिमित सारिणी से (ग्रह फलसारिणी से) सानुपात द्वितीय शीघ्रफल लावे। इसको सम्पूर्ण मन्दस्पष्ट ग्रह में यदि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र मेषादि हो तो ऋण और तुलादि हो तो धन करे। तब राश्यादि स्पष्ट ग्रह होता है।

द्वितीय शीघ्र केन्द्र के अंशादि अलग अलग प्रत्येक ग्रहके नोट कर लेवे क्योंकि इसी के द्वारा ग्रहों का वक्र मार्ग तथा उदय अस्तकाल जाना जाता है। अब भौमादि पञ्चतारा की गति स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं। मन्दफल साधन समय कोष्ट का जो अन्तर है उससे ग्रहकी कलादि मध्यम् गति को गुणा करके ६० का भाग देकर जो कलादि फल होवे उसे यदि मन्दकेन्द्र कर्कादि होवे तो धन, मकरादि होतो ऋण इसका संस्कार ग्रह के मध्यम् गति कलादि में करने से मन्दस्पष्ट गति होती है। फिर मन्दस्पष्ट गति को शीघ्रोच्च गति (मंगल बृहस्पति शनि की शीघ्रोच्च गति ५९।८ बुध की २४५।३२ शुक्र की ९६।८ होती है) में घटाने से शेष शीघ्रकेन्द्र गति होती है। इसको द्वितीय शीघ्रफल साधन में जो कोष्ठान्तर होय उससे गुणा करके ६० का भाग देकर जो कलादि फल हो इसको यदि अग्रिम कोष्ट अधिक हो तो मन्दस्पष्ट गति में जोड़ दे और जो अग्रिम कोष्ट न्यून हो तो मन्द स्पष्ट गति में इस फल को घटा दे तब ग्रह की कलादि स्पष्ट गति होती है। यदि फल ऋण होने पर मन्दस्पष्ट गति में नहीं घट सके तो फल में मन्द स्पष्टगति को घटाने से जो शेष रहे वह ग्रह की वक्रगति स्पष्ट होती है। अर्थात् ग्रह वक्री होता है।

अब पञ्चतारा (भौमादि पञ्चतारा) स्पष्ट करने का उदाहरण लिखते हैं—पूर्वोक्त लाए हुए प्रातः ६ बजे के मध्यम ग्रह इस प्रकार के हैं।

प्रातः ६ बजे के राश्यादि पूर्वोक्त मध्यम ग्रह

रवि.	७	२२	४६	०५
बुध.	२	२४	४१	५६
शुक्र.	३	२३	४७	१८
भौम	७	६	२३	२८
गुरु	११	१४	२७	२४
शनि.	७	१४	५५	८
राहु.	१	२८	५	८
केतु.	७	२८	५	८

मंगल स्पष्ट करते हैं। मध्यम मंगल ७।६।२३।२८ में मध्यम सूर्य ७।२२।४६।५ घटाया तो ११।१३।३४।२३ यह मंगल का शीघ्रकेन्द्र हुआ ६ राशि से अधिक होने पर १२ राशि में घटाकर शेष के अंशादि १६।२५।३७ परिमित सानुपात अंशादि ६।२३।४८ (चक्र नं० ३१ से) हुआ इसका आधा अंशादि ३।११।५४ को केन्द्र तुलादि होने से धन अर्थात् मध्यम मंगल ७ ६।२३।२८ में जोड़ा तो ७।९।३५।२२ यह शीघ्र-फलार्द्ध संस्कृत भौम हुआ। इसका मन्दोच्च राश्यादि ४।१०।२।३५ को घटाया तो शेष २।२९।३२।४७ यह भौम का मन्द केन्द्र हुआ। ६ राशि कम होने से इसी के अंशादि ८९।३२।४७ परिमित सानुपात अंशादि ११।२८।५ यह मन्दफल हुआ। इसको मन्द केन्द्र मकरादि होने से ऋण अर्थात् मध्यम मङ्गल ७।६।२३।२८ घटाया तो ६।२४।५५।२३ यह मन्दस्पष्ट भौम हुआ और मन्दफल अंशादि ११।२८।५ को शीघ्र केन्द्र ११।१३।३४।२३ में घटाया तो २१।२।६।१८ यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ। १२ राशि में घटाकर इसके अंशादि २७।५३।४२ परिमित सानुपात अंशादि १०।५५।३५ धन (तुलादि केन्द्रे धनं) इसको मन्दस्पष्ट भौम ६।२४।५५।२३ में धन किया तो ७।५।५०।५८ यह भौम स्पष्ट हुआ। इसी प्रकार ग्रह स्पष्ट करना चाहिए।

अब उदाहरण को अभ्यास करके ग्रह स्पष्ट गति स्पष्ट करके दिखाते हैं—जिससे शीघ्र समझ में आवे—

मध्यम मङ्गल ७। ६।२३।२८
मध्यम रवि ७।२२।४६। ५
शीघ्रकेन्द्र तुलादौ धनं ११।१३।३४।२३
शीघ्र केन्द्र ६ राशि से अधिक होने पर १२ राशि में घटाया
१२। ०। ०। ०
११।१३।३४।२३
०।१६।२५।३७

चक्र नं० ३१ भौमफल सारणी में १३ अंश के
कोष्ठक में अंशादि ६।११। ०
शीघ्रफलं ०।१२।४८
सानुपात शीघ्र फलं २) ६।२३।४८ (३।११।५४

प्रथम शीघ्र केन्द्र — १८।३०
१२।३०
६०) १२।४८।३० (०।१२।४८

अग्रिम कोष्ठान्तर ०।३० धन
शेष कलादि २५।३७ से गुणा

मध्यम मंगल ७। ६।२३।२८
३।११।५४ धन
७। ९।३५।२२ प्रथम शीघ्र फलार्द्ध संस्कृत भौम
४।१०। २।३५ मन्दोच्च राश्यादि को घटाया
२।२९।३२।४७ मन्द केन्द्र मकरादि होने से
८९।३२।४७ ऋण अंशादि

शेष ३२।४७
कोष्ठान्तर ०। २ से गुणा
६०) १।५।३४ (०।१।५

चक्र नं० ३१ कोष्ठ ८६ में
मन्द फल अंशादि ११।२७।०
को धन १।५
मन्दफल सानुपात ऋण ११।२८।५

गतिसाधन

मध्यमगति ३१।२६
मन्दकोष्ठान्तर २
६०) ६२।५२ (१।३
६०
२।५२

५६। ८ शीघ्रोच्चगति
३०।२३ मन्दस्पष्टगति
२८।४५ शीघ्रकेन्द्रगति
२३ द्वि० शीघ्रकोष्ठान्तर धन
६०) ६६१।१५ (११।१
६००
१

मध्यमगति ३१।२६
मन्दकेन्द्र १। ३ मकरादिऋण
३०।२३ मन्दस्पष्टगति

३०।२३ मन्दस्पष्टगति
११। १ धन
४१।२४ स्पष्टगति

शीघ्रकेन्द्र ११।१३।३४।२३
मन्द फल — ११।२८। ५ ऋण
द्वितीय शीघ्रकेन्द्र + ११। २। ६।१८
१२। ०। ०। ० ६ रा० से अधिक
११। २। ६।१८ होने पर १२ राशि
०।२७।५३।४२ में घटाया

चक्र नं० ३१ कोष्ठ २७ में
शेष कलादि ५३।४२
कोष्ठान्तर ०।२३ धन से गुणा
६०) १२३५।६ (२०।३५
१२०
३५

मध्यम मं० ७। ६ ।२३।२८
मन्दफल — ११ ।२८। ५
मं० स्प० मंगल ६।२४।५५।२३
द्वि० शी० फल + १०।५५।३५
७। ५।५०।५८
भौम स्पष्ट गति ४१।२४

द्वितीय शीघ्र फल १०।३५। ०
अंशादि २०।३५
द्वि० शीघ्र फल १०।५५।३५
फल सानुपात १०।५५।३५

अब गति स्पष्ट करते हैं—मंगल की मध्यम गति ३१।२६ को मंदफल साधन में कोष्ठान्तर २ है इससे गुणा करके ६० का भाग देने से लब्धि कलादि १।३ हुई। मन्द केन्द्र मकरादि ऋण होने से मध्यम गति ३१।२६ में घटाया तो ३०।२३ यह मन्द स्पष्टगति हुई इसको शीघ्रोच्च गति ५६।८ में घटाया तो २८।४५ यह शीघ्र केन्द्रगति हुई। इसको द्वितीय शीघ्र केन्द्र के कोष्ठान्तर २३ धन से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध कलादि ११।१ हुई इसको मन्द

स्पष्ट गति ३०।२३ में कोष्ठवशात् धन किया तो ४१।२४ यह भौम की गति स्पष्ट हुई। इसी प्रकार स्पष्ट करना चाहिए। अभ्यास गति साधन उपर दिखलाया गया है।

अब चक्र नं० ३२ द्वारा बुध स्पष्ट करते हैं—

मध्यम सूर्यवत् मध्यम बुध

बुध ७ ।२२।४६। ५
प्र० केन्द्र मेषादि— २ ।२४।४१।५६

अंशादि ८४।४१।५६
मन्दफल ०।१३।३५ ऋण

द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ८४।२८।२१
मेषादि ऋ. अं. शेष कलादि ४१।५६
अग्रिम कोष्ठान्तर ०।६ से गुणाधन

६०) ३७७।३४ (६।१७
३६०
१७

शेष कलादि ५३।४६
४

कोष्ठान्तर धन ६०) २१५।१६ (३।३५
१८०
३५

चक्र नं० ३२ बुध सारणी में
८४ कोष्ठ में अंशादिफल १६।२०।० शी० फ०
६।१७ धन

सानुपात शीघ्रफल २) १६।२६।१७ (
इसका आधा २।४३। ८

मध्यम बुध ७।२२।४६। ५
६।४३। ८ शी० के० मे० ऋण
७।१३। ५।५७ प्र० शी० फलार्ध
मन्दोच्च घटाया ७।१०।१२। ८ सं० पु०
०। २।५३।४६ मं.के. मकरादि ऋण
२।५३।४६ अंशादि

चक्र नं० ३२ में २ कोष्ठ में मन्दफल अं०
०।१०।०
धन ३।३५
सानुपात मंदफल ०।१३।३५

चक्र नं० ३२ के कोष्ठ ८४ में द्वितीय शीघ्रफल

शेष कलादि २८।३१
६

कोष्ठान्तर ६०) २।५५।६ (४।१५
२४०
१५

अंशादि १६।२०। ०
धन ४।१५
१६।२४।१५
द्वितीय शीघ्रफल सानुपात हुआ

मध्यम बुध ७।२२।४६।५
मन्दफल ऋण ०।१३।३५
मन्दस्पष्ट बुध ७ ।२२।३५।३०
द्वितीयशी० फल १६।२४।१५ ऋण
स्पष्ट बुध ७ । ३।११।१५ गति ८३।४५

गति साधन

५६।८ मध्यम गति
४ मन्दान्तर
६०) २३६।३२ (३।५६
१८०
५६
५६।८
३।५६ मन्द केन्द्र मकरादि ऋण
५५।१२ मन्दस्पष्टगति
२८।३३ कोष्टान्तर धन होने से धन किया
८३ ४५ स्पष्टगति

२४५।३२ शीघ्रोच्च गति
५५।१२ मन्द स्पष्टगति
१९०।२० शीघ्रकेन्द्र गति
कोष्टान्तर ६ द्वि० शीघ्र धन
६०) १७१३ (२८।३३
१२०
५१
४८
३३

द्वितीय शीघ्रफल ऋण होकर यदि मन्दस्पष्ट गति में न घट सके तो जो फल प्राप्त हुआ उसी में मन्दस्पष्ट गति घटावें जो शेष रहे वह ग्रह की वक्र गति होती है।

अब चक्र नं ३३ से गुरु स्पष्ट करते हैं

मध्यम गुरु ११।१४।२७।२४
मध्यम रवि ७।२२।४९। ५
शीघ्र के. मेषादि ऋण ३।२१।३८।१९
मन्दफल धन १११ ।३८।१९
द्वि० शीघ्रकेन्द्र १। १०।५४
अंशादिक मेषादि ऋण ११२ ।४९।१३

च० न० ३३ गुरु फल सारणी में कोष्ठ १११ में
शीघ्रफल अंशादि ११।२२। ०
ऋण ०। १।५५
सानुपात शीघ्रफल २) ११।२०। ५ (इसका आधा किया
५।४०। २
शेष फलादि ३८।१९
अग्रिम कोष्टान्तर ०। ३ ऋणं
६०) ११४।५७ (१।५४
६०
५४

मध्यम गुरु ११।१४।२७।२४
५।४०। २
११। ८।४७।२२
५।२१।२२। ४
५।१७।२५।१८
१६७।२५।१८
शेष कलादि २५।१८
कोष्टान्तर ऋण ०। ५
६०) १२६।३० (२।६
१२०
६

केन्द्र मेषादि ऋण
प्र० शी० फलार्ध संस्कृत
मन्दोच्च घटाया
मंद केन्द्र कर्कादि धन
अंशादि
चक्र नं० ३३ कोष्ठ १६७ में मंदफल अंशादि
१।१३।०
२।६ ऋण
सानुपात मंदफल हुआ १।१०।५४

चक्र नं० ३३ कोष्ठ ११२ में द्वितीय शीघ्र फल अंशादि ११।१६। ०
शेष कलादि ४६।१३ २।२७ ऋण
३ कोष्ठान्तर ऋण सानुपात द्वि० शीघ्रफल ११।१६।३३

६०) १४७।३६ (२।२७
१२०
२७

मध्यम गुरु ११।१४।२७।२४
मन्दफल धन १।१०।५४
मन्द स्पष्ट गुरु ११।१५।३८।१८
११।१६।३३ ऋण
गुरु स्पष्टः ११। ४।२१।४५ गति २।४४

गति साधन

५।०	मध्यम गति	५६। ८	शीघ्रोच्च गति
५	मदान्तर कोष्ठ	५।२५	मन्द स्पष्ट गति
६०) २५।० (०।२५		५३।४३	
५ ।०	मध्यम गति	३	द्वि० शी० अन्तर कोष्ठ
० ।२५	मन्दकेन्द्र कर्कादि धन	६०) १६१।६ (२।४१	
५ ।२५	मन्द स्पष्ट गति	१२०	
२ ।४१	ऋण कोष्ठ वशात्	४१	
२ ।२४	स्पष्ट गति		

अब चक्र नं० ३४ द्वारा शुक्र स्पष्ट करते हैं—

मध्यम शुक्र सूर्यवत् ७।२२।४६। ५
शुक्र केन्द्र मेषादि ऋण अंशादि ३।२३।४७।१८
अंशादि ११३।४७।१८
मन्दफल धन १।२१।३५
द्वि० शीघ्र केन्द्र मेषादि ऋण ११५। ८।५३

चक्र नं० ३४ शुक्र फल सारणी में शेष कलादि ४७।१८
कोष्ठ ११३ में शीघ्रफल अंशादि ४२।५१। ० अग्रिम कोष्ठान्तर ०।१७ गुणा
धन १३।२४ ६०) ८०४। ६ (१३।२४
सानुपात शीघ्रफल २) ४३। ४।२४ ६०
२१।३२।१२ २०४
१८०
२४

मध्यम शुक्र ७।२२।४६। ५

२१।३२।१२ मेषादि केन्द्र ऋण

७। १।१६।५३ प्र० शी० केन्द्र फलार्ध संस्कृत भृगुः

२।१६।५२। ७ मन्दोच्च घटाया

४।११।२४।४६ मन्दकेन्द्र कर्कादि धन

१३१ ।२४।४६ अंशादि

शेष कलादि २४।४६

कोष्टान्तर ऋण ०। १

६०) २४।४६ (०।२५

चक्र नं० २४ में मंदफल

अंशादि १।२२। ०

ऋण ०।२५

सानुपात मंदफल १।२१।३५

चक्र नं० ३४ से कोष्ट ११५ में द्वितीय शीघ्रफल—

अंशादि ४३।२१। ०

२। ४

४३।२३। ४ अंशादि

१ ।१३। २२।४ राश्यादि सानुपात द्वितीय शीघ्रफल

शेष कलादि ८।५३

कोष्टान्तर धन ०।१४

६०) १२४।२२ (२।४

१२०

४

मध्यम भृगु ७।२२।४६। ५

मंदफल धन १।२१।३५

७।२४।१०।४०

द्वि० शीघ्रफल १।१३।२३। ४ ऋण

भृगु स्पष्ट ६।१०।४७।३६ गति ६८।३१

यदि अन्तर कोष्ठ धन हो तो धन ऋण हो तो ऋण.

५६।८ मध्यम गति

१ मन्दान्तर

६०) ५६।८ (०।५६

५६।८ मध्यम गति

०।५६ मं० के० कर्कादि धन

६०। ७ मन्द स्पष्ट गति

८।२४ धन

६८।३१ स्पष्टगति

६६। ८ शीघ्रोच्च गति

६०। ७ मन्द स्पष्ट गति

३६।०१ शीघ्रकेन्द्र गति

१४ कोष्टान्तर धन

६०) ५०४।१४ (८।२४

४८०

२४

अब चक्र नं० ३५ द्वारा शनि स्पष्ट करते हैं—

मध्यम शनि ७ ।१४।५५।८

मध्यम रवि ७ ।२२।४६।५

प्र० शीघ्र केन्द्र ११।२२। ६।३

तुलादि धन १२। ०। ०।०

६ राशि से अधिक होने पर ११।२२। ६।३

१२ राशि में घटाया ७।५३। ७ अंशादि

शीघ्र केन्द्र ११।२२। ६।३

मन्द फल १।२५।३३ ऋण

द्वि० शीघ्र केन्द्र ११।२०।४०।३०

तुलादि धन १२। ०। ०। ०

११।२०।४०।३०

अंशादि ६।१६।३०

च० नं० ३५ शनिफलसारिणी कोष्ठ ७ में

शीघ्रफल अंशादि—

०।४१। ०
५।२३
सानु. शी. फ. २)०।४६।२३(
०।२३।११

मध्य. शनि ७।१४।५५। ८
०।२३।११ केन्द्र तुलादि धन
७।१५।१८।१६ प्र० शी० फलार्ध संस्कृत शनि
७।२६।३७।३३ मन्दोच्च घटाया
११।१८।४०।४६ मन्दकेन्द्र मकरादि ऋण
१२।१८।४०।४६ राशि में घटाया
शेष अंशादि ०।११।१६।१४

शेष कलादि — ५३।५७

अग्रिम कोष्ठान्तर धन ६

६०) ३२३।४२ (५।२३
३००
२३

चक्र न० ३५ के कोष्ठ ११ में मन्दफल अंशादि

शेष कलादि १६।१४
कोष्ठान्तर धन ८
६०) १५३।५२ (२।३३
१२०
३३,

१।२३। ०
२।३३
सानुपा० म० फ० १।२५।३३

चक्र न० ३५ कोष्ठ ६ में द्वि० शी० फ०

शेष कलादि १६।३०
कोष्ठान्तरधन ×६
६०) ११७।० (१।५७
६०
५७

०।५३। ०
०। १।५७
सानुपात् ०।५४।५७ द्वितो० शी० फ०

मध्यम शनि— ७।१४।५५। ८
मन्दफल ऋण— १।२५।३३
मन्दस्पष्ट शनि— ७।१३।२६।३५
द्वितीय शी० फल— ०।५४।५७ धन
स्पष्ट शनि— ७।१४।२४।३२ गति ७।२८

गतिसाधन

२।०	मध्यम गति	५९। ८	शीघ्रोच्च गति
८	मन्दान्तर कोष्ठ में	१।४४	मन्दस्पष्ट गति
६०) १६।० (९।१६		५७।२४	शीघ्रकेन्द्रगति
२। ०	मध्यम गति—	६	कोष्ठान्तर धन
०।१६	मन्दकेन्द्र मकरादि ऋण	६०) ३४४।२४ (५।४४	
१।४४	मन्दस्पष्ट गति	३००	
५।४४	धनकोष्ठवशात्	४४	
७।२८	स्पष्टगति		

इस प्रकार सगति ग्रहस्पष्ट करना चाहिये अब ग्रह स्पष्टाधिकार उदाहरण सहित होगया और राहु केतु का ६ राशि का अन्तर सदैव रहता है (मध्यम राहु को ही स्पष्ट समझें) ॥

अथ सौरभ सारिणी द्वारा (चक्र नं० ६१ से ६७ तक) किंचित् स्थूल सूर्यादिक ग्रहस्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं—पूर्वोक्त मध्यमाधिकार में जो ग्रहबल्ली बनायी गई है उसकी कन्द संज्ञा जाने और बीजफल अंशादिका छठवाँ भाग (मध्यम ग्रह को ६० भाग करके अंशादि कर लेने से ग्रहबल्ली हो जाती है) ग्रहबल्ली अंशादि में धन हो तो जोड़ ले बीज ऋण हो तो घटा ले फिर देशान्तरकला विकला जो हो उसका भी ६ ठां भाग ग्रहबल्ली अंशादि में धन हो तो धन, ऋण हो तो ऋण कर दे तब देशान्तरसंस्कृत कन्द (ग्रह बल्ली) होती है अथवा मध्यमाधिकार में कहे हुए क्रम से बीज और देशान्तरसंस्कृत राश्यादि मध्यमग्रह लाकर उसका ६ ठां भाग करके अंशादि चार भाग कर ले (राशियों के भी अंश करके अंशों में जोड़ ले तो भी कन्द ग्रहबल्ली बन जायगी ।

प्रथम कन्द बनाकर फिर स्पष्ट करना चाहिए सूर्यकन्द के अंशादि तुल्य रविसौरभसारणी चक्र नं० ६१ से सानुपात जो अंशादि फल प्राप्त हो उसको ६ से गुणा करने से अंशादि ३० अंश से अधिक होने पर राश्यादि बना ले जो राश्यादि हो वही सूर्यस्पष्ट जाने ।

सूर्य गति साधन क्रमः—पूर्वोक्त सौरभसारणी चक्र नं० ६१ द्वारा फल साधन में जो कोष्ठ का अंशादि अन्तर आया हो उसको एक अंश में घटाकर जो शेष रहे उसकी कलादि को मध्यम गति में ऋण करने से सूर्य की गति स्पष्ट होती है । यदि अन्तर १ अंश से अधिक हो तो उसमें से १ अंश घटाकर शेष को सूर्य की मध्यम गति कलादि ५९।८ मे धन कर दे तो सूर्य की कलादि स्पष्ट गति होती है । अन्यथा एक अंश से कम होने पर ऋण करने से गति स्पष्ट होती है ।

अथ चन्द्रस्पष्ट करने का क्रमः—चन्द्र केन्द्रबल्ली देशान्तर संस्कृत के ऊपर के अंक में ४५ अंश जोड़ दे जो बल्ली प्राप्त हो उसकी लता संज्ञा जाने । लता तुल्य कोष्ठक से चन्द्रसौरभ सारणी चक्र नं० ६२ द्वारा सानुपात अंशादि फल लाकर चन्द्रकन्द (चन्द्रबल्ली) जोड़कर ६ से गुणा करके अंशों को राश्यादि बना ले यह चन्द्र-स्पष्ट हो जाएगा और गतिसाधन में उसी कोष्ठ के नीचे भुक्तिफल सानुपात लाकर ६ से गुणा कर दे और अंशों की कला बनाकर कलादि जो होय वह चन्द्र की कलादि स्पष्ट गति होती है ।

अब भौमादि पञ्चतारा ग्रह स्पष्ट करने का क्रम लिखते हैं—भौमकेन्द्र (भौमबल्ली) में रविकन्द घटाने से जो शेष रहे उसकी लता संज्ञा (केन्द्र) है । इसी प्रकार वृहस्पति तथा शनिकेन्द्र में रविकन्द घटाने से जो शेष

रहे वह उसी ग्रहकी लताकेन्द्र जाने और रविकन्द के तुल्य बुधकन्द तथा शुक्रकन्द कल्पित कर ले और बुध की लता जो बुधकेन्द्र है और शुक्र की लता शुक्रकन्द है वही है जो पूर्वोक्त बनाई गई है। फिर ग्रहलता के तुल्य भौमादि अभीष्ट ग्रह की सौरभसारणी द्वारा सानुपात अंशादि फल बल्ली कोष्ठ से लाकर ग्रह के मन्दकन्द में जोड़ दे तब वह उपकन्द होता है। उपकन्द के अंशादि तुल्य उपकन्दफल सानुपात अंशादि लावे वह ग्रह के कन्द में जोड़ने से अंशादि सुकन्द होगा और ग्रह को लता में जोड़ने से सुलता होगी फिर सुलता के अंशादि तुल्यग्रह सौरभ से अंशादि सानुपात सुबल्लीफल लाकर सुकन्द में जोड़ दे। (अंशकोष्ठ ६० से अधिक होने पर ६० से शेषित ग्रहण करे) फिर अंश के स्थान १० घटा दे तब उसकी मकरन्द संज्ञा होती है। फिर उसे ६ से गुणा करके राश्यादि बना ले वही स्पष्ट ग्रह हो जायगा।

अब गति साधन क्रम लिखते हैं—ग्रह के उपकन्द द्वारा फल साधन में जो अग्रिम कोष्ट का अन्तर हो उसे ग्रह की मध्यम गति कलादि से गुणा करके ६० का भाग दे जो कलादि फल हो उसे यदि अग्रिम कोष्ठ अधिक हो तो धन न्यून हो तो ऋण कोष्ठक वशात् इसका संस्कार ग्रह की मध्यम गति में करने से ग्रह की मन्दस्पष्ट गति होती हैं। फिर मन्द स्पष्टगति को शीघ्रोच्च गति में घटाने से शीघ्रकेन्द्र गति होती है। उसको सुबल्ली (सुलता) द्वारा फल साधन में जो कोष्ठ का अन्तर हो वह यदि अग्रिम कोष्ठ से अधिक हो तो ऋण, न्यून हो तो धन कोष्ठक वशात् विपरीत इसका संस्कार मन्दस्पष्ट गति में करने से ग्रह की स्पष्ट गति होती है। यदि फल ऋण होने पर अधिक होने के कारण मन्दस्पष्ट गति में नहीं घट सके तो (विपरीत) फल में मन्दस्पष्ट गति घटाने से जो शेष रहे वह ग्रह की वक्रगति स्पष्ट होती है।

अब सौरभ द्वारा ग्रहस्पष्ट करने का उदाहरण लिखते हैं—पूर्वोक्त प्रातः ६ बजे के राश्यादि मध्यम ग्रह इस प्रकार है सूर्य ७।२२।४६।५ चन्द्र १।१०।१८।११ चन्द्र केन्द्र ६।२८।३३।४४ चन्द्र १।१०।१७।१२ में चन्द्रोच्च ६।११।४३।२८ घटाने से अथवा पूर्वोक्त चन्द्रकेन्द्र में ६ राशि का षष्ठांश (४५ अंश) जोड़ने से वही चन्द्रकेन्द्र हो गया (४५ अंश ६ राशि का ६वाँ भाग है क्योंकि बल्ली को ६ से गुणा करना होता है) मंगल ७।६।२३।२८ बुधकेन्द्र ३।२३।४७।४८ शनि ७।१४।५५।८ यह ग्रह बीज तथा देशान्तर संस्कृत पूर्वोक्त ही हैं इन्हें प्रत्येक को प्रथम ६ से भाग देकर ग्रहबल्ली अर्थात् कन्द बनाया तो सूर्यकन्द (बल्ली) ३८।४८।१०।५० चन्द्रकन्द ६।४२।५२।० चन्द्रलता (केन्द्र) ३४।४५।३७।२० मंगलकन्द ३६।३।५४।४० बुधलता (केन्द्र) १४।६।५६।२० गुरुकन्द ५७।२४।३४।० शुक्र लता (केन्द्र) १८।५७।५३।० शनिकन्द ३७।२६।११।२० इस प्रकार हुआ।

अब प्रथम सूर्य चन्द्र स्पष्ट करते हैं—सूर्यकन्द अंशादि ३८।४८।१०।५० इसके तुल्य चक्र नं० ६१ सूर्य सौरभसारिणी से सानुपातीय अंशादि ३८।३६।५ हुये (अन्तरकोष्ट और कन्द का शेष कलादि में गुणाकरके ६० का भागदेकर लब्धको अंशवाले कोष्टके फल में, जोड़कर सानुपात हुआ) ३८।३६।५ अंशादि को ६ से गुणा किया तो अंशादि २३१।५४।३० हुआ इसको राश्यादि बनाया तो ७।२१।५४।३० यह सूर्यस्पष्ट हुआ। अब गति स्पष्ट करते हैं पूर्वोक्त चक्र नं० ६१ पूर्वोक्त फल साधन में कोष्टान्तर अंशादि १।१।५३। है इसमें १ अंश से अधिक कलादि १।५३ है इसको सूर्य की मध्यम गति ५६।८ में जोड़ा तो ६१।१ यह सूर्य की स्पष्ट गति हुई।

अब चन्द्र स्पष्टकरते हैं—चन्द्रकन्द (चन्द्रबल्ली) ६।४२।५२।० चन्द्रलता ३४।४५।३७।२० है लता के अंशादि ३४।४५।३७।२० से चक्र नं० ६२ चन्द्रसौरभ सारीणी द्वारा सानुपात अंशादि ०।२८।२६।४८ फल हुआ। इसको चन्द्रकन्द ६।४२।५२।० में जोड़ा तो अंशादि ७।११।१८।४८ हुआ इसको ६ से गुणा किया तो १।१३।७।५१ यह चन्द्रस्पष्ट हुआ। अब गतिस्पष्ट करते हैं पूर्वोक्त चन्द्रलता ३४।४५।३७।२० परिमित चक्र नं० ६२ से सम्पात अंशादि

२।२१।५२ भुक्तिफल हुआ इसको ६ से गुणा किया तो अंशादि १४।११।१२ यह हुआ इसकी कलादि ८५१।१२ यह चन्द्रकी स्पष्ट गति हुई।

अब भौमादि पञ्चतारा ग्रह स्पष्ट करते हैं—प्रथम मंगलस्पष्ट करते हैं। भौमकन्द ३६।३।५४।४० में रविकन्द ३८।४८।१०।५० को घटाया तो ५७।१५।४३।५० यह भौमलता हुई इस परिमित चक्र नं० ६३ भौम सौरभ सारिणी से अंशादि सानुपात ३८।५१।५५।१० यह वल्लीलता (फल) हुआ इसको भौमकन्द ३६।३।५४।४० मे जोड़ा तो १४।५५।४६।५० यह उपकन्द हुआ इसपरिमित चक्र नं० ६३ से सानुपात उपकन्द फल ०।५।१७।३६ हुआ। इसको भौमकन्द ३६।३।५४।५० में जोड़ा तो ३६।६।१२।१६ यह सुकन्द हुआ और पुनः इसी ०।५।१७।३६ फल को लता ५७।१५।४३।५० में जोड़ दिया तो ५७।२१।१।२६ यह सुलता हुई (सुवल्ली)। चक्र नं० ६३ से सानुपात सुलता सुवल्ली का फल ६।४६।२४।३६ को सुकन्द ३६।६।१२।५६ में जोड़ा तो ४५।५८।३६।५२ हुआ। इसमें १० घटाया तो ३५।५८।३६।५२ यह मकरन्द संज्ञक हुआ। इसे ६ से गुणाकर राश्यादि ७।५।५१।४१ यह भौमस्पष्ट हुआ।

अब गति स्पष्ट करते हैं—उपकन्दोपरि फलसाधन में कोष्ठान्तर १।४७ ऋण था इसको भौम की मध्यम-गति ३१।२६ से गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि फल ०।५६ को अग्रिम कोष्ठ न्यून होने से मध्यमगति कलादि ३१।२६ में घटाया तो ३०।३० यह मन्दस्पष्ट गति हुई इसको शीघ्रोच्चगति ५६।८ में घटाया तो २८।३८ यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई। इसको सुबल्ली (सुलता) से फल साधन में जो कोष्ठान्तर २३।३१ ऋण था इससे गुणाकर ६० का भाग देने से कलादि ११।१३ फल हुआ। कोष्ठ ऋण के विपरीत धन अर्थात् ११।१३ इसको मन्दस्पष्ट गति ३०।३० में जोड़ा तो ४१।१३ यह भौम स्पष्टगति हुई।

अब बुधस्पष्ट करते हैं—सूर्यवत् बुधकन्द ३८।४८।१०।५० बुधलता (बुधकेन्द्र) १४।६।५६।२० हैं लता परिमित चक्र नं० ६४ बुध सौरभसारिणी द्वारा सानुपात अंशादि २१।४२।२।५६ वल्लीफल हुआ। इसको बुधकन्द ३८।४८।१०।५० में जोड़ा तो ०।३०।१३।४६ यह उपकन्द हुआ। इसे चक्र नं० ६४ से सानुपात उपकन्द फल अंशादि १।५७।३६।२५ हुआ इसको बुधकन्द ३८।४८।१०।५० में जोड़ा तो ४०।४५।४७।१५ यह सुकन्द हुआ और बुधलता १४।६।५६।२० में भी जोड़ा तो १६।४।३५।४५ यह सुलता हुई। इसका चक्र नं० ६४ से सानु-पात सुवल्ली फल ४।४६।२।०० हुआ इसको सुकन्द ४०।४५।४७।१५ में जोड़ा तो ४५।३१।४६।१५ यह हुआ इसमें १० अंश घटाया तो ३५।३१।४६।१५ यह मकरन्द संज्ञक हुआ इसे ६ से गुणा किया तो राश्यादि स्पष्ट ७।३।१०।५५ बुध हुआ।

अब गति स्पष्ट करते हैं—उपकन्दोपरि फल साधन में जो कोष्ठान्तर ४।४५ ऋण था इससे बुध की मध्यम गति कलादि ५६।८ को गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि ४।४१ फल हुआ इसको अग्रिम कोष्ठ न्यून होने से मध्यमगति ५६।८ में घटाया तो ५४।२७ यह मन्दस्पष्ट गति हुई (इसको बुध को शीघ्रोच्च गति २४५।३० में घटाया २६१।१५ यह शीघ्र केन्द्र गति हुई)। इसको सुवल्लीफल साधने में जो कोष्ठान्तर ७।३७ ऋण था इससे गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि २४।१५ फल हुआ। इसको ऋण कोष्ठ का विपरीत धन अर्थात् मन्दस्पष्टगति ५४।२७ में जोड़ा तो ७८।४२ यह बुध की स्पष्ट गति हुई।

अब गुरु स्पष्ट करते हैं—गुरुकन्द ५७।२४।३४।० में रविकन्द ३८।४८।१०।५० घटाया तो शेष १८।३६।२३।१० गुरुलता हुई। चक्र नं० ६५ गुरु सौरभसारिणी द्वारा सानुपात अंशादि ३०।३०।४।१४ फल

हुआ इसको गुरुकन्द ५७।२४।३४।० में जोड़ा तो २७।५४।३८।१४ यह उपकन्द हुआ इसका चक्र नं० ६५ से सानुपात अंशादि १।४८।१०।५७ उपकन्द फल हुआ। इसको गुरुकन्द ५७।२४।३४।० में जोड़ा तो ५९।१२।४४।५७ यह सुकन्द हुआ और लता १८।३६।२३।१० में भी जोड़ा तो २०।२४।३४।७ यह सुलता हुई। पुनः चक्र नं० ६५ से सानुपात सुवल्ली फल ६।६।३३।१७ हुआ इसको सुकन्द ५९।१२।४४।५७ में जोड़ा तो ५।१९।१८।१४ में १० घटाये (ऊपर के अङ्क ५ में न घटने से ६० और जोड़कर घटाये) तो ५५।११।१८।१४ यह मकरन्द संज्ञक हुआ इसको ६ से गुणा करके राश्यादि बनाने से ११।१।५५।४९ यह स्पष्टगुरु हुआ।

अब गुरु गति स्पष्ट करते हैं—उपकन्दोपरि फल साधन में जो कोष्ठान्तर ५।२५ था इससे गुरु की मध्यम गति कलादि ५।० को गुणा करके ६० का भाग देने से फल कलादि ०।२७ हुआ। इसको अग्रिम कोष्ठ धन होने से मध्यम गति ५।० में जोड़ा तो ५।२७ मन्दस्पष्ट गति हुई। फिर इसको शीघ्रोच्च गति ५९।८ में घटाया तो ५३।४१ यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई। इसको सुवल्ली कोष्ठान्तर २।१५ धन से गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि २।१ हुआ। अग्रिम कोष्ठ के विपरीत इसे मन्दस्पष्ट गति ५।२७ में घटाया तो शेष ३।२६ यह गुरु की स्पष्टगति हुई।

अब शुक्र स्पष्ट करते हैं—सूर्य कन्दवत शुक्रकन्द ३८।४८।१०।५० और शुक्रलता (केन्द्र) १८।५७।५३।० है। लता परिमिति चक्र नं० ६६ शुक्र सौरभसारिणी द्वारा सानुपात बल्ली फल अंशादि ४२।५६।१३।५८ हुआ। इसको शुक्रकन्द ३८।४८।१०।५० में जोड़ा तो २१।४४।२४।४८ यह उपकन्द हुआ इसका चक्र नं० ६६ से सानुपात उपकन्द फल १।४६।९।४५ हुआ इसको शुक्रकन्द ३८।४८।१०।५० में जोड़ा तो ४०।३४।२०।३५ यह सुकन्द हुआ और लता १८।५७।५२।० में भी जोड़ा तो २०।४४।२।४५ यह सुलता हुई। चक्र नं० ६६ से सानुपात सुवल्ली फल ०।५२।६।५३ हुआ इसको सुकन्द ४०।३४।२०।३५ में जोड़ा तो ४१।२६।३०।२८ यह हुआ। इसमें १०° घटाया तो ३१।२६।३०।२८ यह मकरन्द संज्ञक हुआ। इसको ६ से गुणाकर राश्यादि बनाया तो ६।८।३६।२ यह शुक्रस्पष्ट हुआ।

अब गति स्पष्ट करते हैं—उपकन्दोपरि फलसाधन में जो कोष्ठान्तर ०।५१ था इससे मध्यमगति ५६।८ से गुणाकर ६० का भाग देने से कलादि ०।५० हुआ। अग्रिम कोष्ठ अधिक होने से मध्यम गति ५६।८ में जोड़ा तो ५६।५८ यह मन्दस्पष्ट गति हुई। इसको शीघ्रगति ६६।८ में घटाया तो शेष ३६।१० यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई। इसको सुवल्ली फल के कोष्ठान्तर ५।१५।५१।० ऋण से गुणा करके ६० का भाग देने से लब्धि कलादि ६।३३ हुई इसको कोष्ठ ऋण के विपरीत धन अर्थात् फल ६।३३ को मन्दस्पष्ट गति ५६।५८ में जोड़ा तो ६६।३१ यह शुक्र की स्पष्ट गति हुई।

अब शनि स्पष्ट करते हैं—शनिकन्द ३७।२६।११।२० में रविकन्द ३८।४८।१०।५० को घटाया तो ५८।४१।०।३० यह शनिलता हुई। चक्र नं० ६७ शनि सौरभ सारिणी से सानुपात वल्लीफल २०।३७।३२।१८ हुआ। इसको शनिकन्द ३७।२६।११।२० में जोड़ा तो ५८।६।४३।३८ यह उपकन्द हुआ। पुनः चक्र नं० ६७ से सानुपात उपकन्द फल २।१४।२०।३३ हुआ इसको शनिकन्द ३७।२६।११।२० में जोड़ा तो ३६।४३।३१।५३ यह सुकन्द हुआ और लता ५८।४१।०।३० में भी जोड़ा तो ०।५५।२१।३ यह सुलता हुई। चक्र नं० ६७ से सानुपात सुवल्ली फल ८।६।९।५४ हुआ। इसको सुकन्द ३९।४३।३१।५३ में जोड़ा तो ४७।४६।४१।४७ में १०° घटाया तो ३७।४६।४१।४७ मकरन्द संज्ञक हुआ इसको ६ से गुणाकर राश्यादि ७।१५।५८।१० यह शनिस्पष्ट हुआ।

अब गति स्पष्ट करते हैं—उपकन्दोपरि फल साधन में जो कोष्ठान्तर ७।३० ऋण था उससे शनि की

मध्यम गति कलादि २।० को गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि ०।१५ लब्धि हुई इसका अग्रिम कोष्ठवशात् ऋण मध्यम गति २।० में घटाया तो १।४५ यह मन्दस्पष्ट गति हुई। इसको शीघ्रोच्चगति ५९।८ में घटाया तो शेष ५७।२३ यह शीघ्रकेन्द्रगति हुई इसको सुवल्लीफल साधन के कोष्टान्तर ६।१ ऋण से गुणा करके ६० का भाग देने से कलादि ५।४५ यह फल प्राप्त हुआ। इसको कोष्टान्तर ऋण के विपरीत धन अर्थात् मन्दस्पष्टगति १।४५ में जोड़ा तो ७।३० कलादि शनि की स्पष्टगति हुई। इसी प्रकार सौरभ द्वारा ग्रहस्पष्ट करना चाहिए। यह स्थूल क्रम है। इसमें अंशादि में सूक्ष्मान्तर हो जाया करता है। इति।

अब अक्षांश बनाने का क्रम उदाहरण के साथ लिखते हैं—पलभा बनाने का क्रम पहले बतला चुके हैं पूर्वोक्त पलभा अंगुलादि को ५ से गुणा करके उसे अंशात्मक मान उसमें पलभा के वर्ग (सजातीय को परस्पर गुणने से वर्ग होता है) का दशवाँ भाग अंशात्मक घटाकर जो अंशादि शेष रहे वह अंशादि अक्षांश होते हैं। अपने नगर से लंका की पूर्वापर रेखा दक्षिण हो तो अक्षांश दक्षिण और नगर से लंका उत्तर हो तो अक्षांश उत्तर होते हैं (और कोई इसको विपरीत मानते हैं लंका की पूर्वापर रेखा से अपना नगर उत्तर हो तो अक्षांश उत्तर, दक्षिण हो तो अक्षांश दक्षिण मानते हैं)।

उदाहरण—अभीष्ट देश दिल्ली की पुर्वोक्त पलभा अंगुलादि ६।३३ है इसको ५ से गुणा किया तो गुणनफल अंशादि ३२।४५ हुआ। इसमें पलभा के वर्ग (६।३३)×(६।३३)=४२।५४ का दशमांश ४।१७।२४ घटाया तो शेष २८।२७।३६ यह अक्षांश हुआ। अभीष्ट नगर से लंका दक्षिण है इसलिए अक्षांश दक्षिण हुआ।

अब स्वदेशीय लग्न प्रमाण बनाने का क्रम उदाहरण सहित लिखते हैं—पूर्वोक्त तीनों चरखण्डों को लाकर (जो सूर्य चन्द्र स्पष्ट करने में दिनसाधने में चरखण्ड बनाये थे) उनका पलात्मक मान (विपल छोड़ दे. या १ पल बढ़ा लेवे) फिर लंकोदय लग्न प्रमाण के मेष वृष मिथुन के लग्न प्रमाण में क्रमानुसार तीनों चरखण्डों को घटाने से शेष क्रमानुसार मेष वृष मिथुन लग्न का स्वदेशीय प्रमाण पल होते हैं। फिर उक्त तीनों चरखण्डों को उलटे क्रम से अर्थात् पहले तीसरा फिर दूसरा फिर पहला चरखण्ड इनको लंका के उदयमान कर्क सिंह कन्या में क्रमानुसार जोड़ दे तो कर्क सिंह कन्या का स्वदेशीय लग्न प्रमाण हो जायगा। फिर कन्या लग्न प्रमाण से उलटे क्रम से मेष पर्यन्त के लग्न प्रमाण को तुलादि मीन पर्यन्त का लग्न प्रमाण जाने, इस प्रकार मेषादि मीन पर्यन्त स्वदेशीय लग्न प्रमाण बना ले। परन्तु इसका ध्यान रक्खे कि, लंका से दक्षिण जहाँ अक्षांश उत्तर है इससे विपरीत होता है। जब इस देश में जाड़ा है तब वहाँ गरमी होती हैं। इत्यादि।

अब लंकोदय मान तथा स्वदेशीय लग्न प्रमाण तथा उदाहरण लिखते हैं।

अथ लंकोदय लग्न प्रमाणम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	लग्न
४	४	५	५	४	४	४	४	५	५	४	४	घटी
३८	५६	२३	२३	५६	३८	३८	५६	२३	२३	५६	३८	पल
२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	पल

अथ स्वदेशीय लग्न प्रमाणम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	लग्न
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घटी
३३	७	१	४५	५१	४३	४३	५१	४५	१	७	३३	पल
२१३	२४७	३०१	३४५	३५१	३४३	३४३	३५१	३४५	३०१	२४७	२१३	पल

उदाहरण—पूर्वोक्त स्वदेशीय चरखण्ड प्रथम चरखण्ड पलादि ६५।३० द्वि ५२।२४ तृ० २२।५० हैं उनका केवल पल ग्रहण करने से प्र० ६५ द्वि० ५२ तृ० २२ इस प्रकार ग्रहण किए इनको क्रमानुसार लंकोदय लग्न प्रमाण मेष पल २७८ वृ० २९९ मि० ३२३ में घटाने से मेषपल २१३ वृष २४७ मिथुन ३०१ यह मेषादि मिथुन पर्यन्त लग्न प्रमाण हुआ, फिर उलटे क्रम से तीनों चरखण्डों को यथा २२।५२।६५ इनको' लंकोदयमान कर्क के पल ३२३ सिं० २९९ कन्या २७८ पल ये क्रमानुसार जोड़ा तो कर्क ३४५ सिंह ३५१ कन्या ३४३ यह कन्या पर्यन्त स्वदेशीय लग्न-प्रमाण हुआ। फिर कन्या लग्न प्रमाण से उलटे क्रम से मेष पर्यन्त के प्रमाण को तुलादि मीनान्त लिखा तो तुला ३४३ वृश्चिक ३५१ धनु ३४५ मकर ३०१ कुम्भ २४७ मीन २१३ इस प्रकार द्वादश लग्न प्रमाण स्वदेशीय बन गया और पलों को घटिकादि बना ले तथा सर्व लग्नों के प्रमाण को जोड़ने से ६० घटी होगा यह सिद्धान्त चक्र में निर्दिष्ट है।

तात्कालिक लग्न स्पष्ट करने की यह रीति है कि, तात्कालिक स्पष्टसूर्य में अयनांश जोड़कर सायनरवि जिस राशि के जितने अंशादि भुक्त हो उनको ३० अंशों में घटाकर जो शेष अंशादि हो वह उस लग्न का भोग्य (बाकी बीतने वाला) काल जाने फिर उसी लग्न प्रमाण के पलों से भोग्य अंशादि को गुणाकर ३० का भाग अंशादि में देने से जो लब्ध पलादि हो वह उसी लग्न का भोगपल जाने (जैसे ३० अंशों में इतने पल हैं तो इतने अंशों में कितने पल) फिर इष्टकाल का पला बनाकर प्रथम उसमें उस लग्न के पलादि को घटावे। फिर उससे आगे के लग्न प्रमाण पल को घटावे अर्थात् जितने लग्नों का पल प्रमाण घट सके घटाता चला जाय जो पलादि शेष रहे वह उस लग्न से आगे वाली लग्न का भुक्तपल जाने फिर त्रैराशिक द्वारा अर्थात् भुक्तपलों को ३० से गुणा करके उसी लग्न प्रमाण पल का भाग देने से लब्ध अंशादि उस लग्न के भुक्त जाने। फिर राश्यादि चार अंक लिखकर अयनांश घटा दे शेष राश्यादि तात्कालिक लग्न स्पष्ट होता है, लग्न स्पष्ट करने का उदाहरण सूर्य ग्रहण के उदाहरण में है वहाँ पर देखकर समझ लेना चाहिए और साधारण लग्नसारिणी जो पंचांग में हैं उसका क्रम यह है कि अयनांश के केवल अंशमात्र को मेषलग्न के शून्यअंश में घटाने से जो राशि अंश प्राप्त हो उसी राशि के उतने अंशों के कोठे में (१२ कोष्ठ नीचे १२ राशियों के और ऊपर के कोष्ठ अंशों के शून्यादि २९ अंश पर्यन्त ३० कोष्ठकों में बनावे) घटिकादि ०।० रखकर फिर उसी कोठे से प्रथम मेष लग्न प्रमाण के ३० वें भाग को प्रतिकोष्ठ में जोड़ता जावे फिर वृष के लग्न प्रमाण का तीसवां भाग प्रत्येक कोष्ठ में जोड़ देवे। इसी क्रमानुसार राशियों के लग्न प्रमाण के ३० वें भाग को जोड़कर सभी कोष्ठ भर दे तो लग्नसारिणी बन जायगी। यह सामान्य बात होने से उदाहरण नहीं दिया है, केवल क्रम ही बतला दिया। अथवा मेषादि १२ राशियों के कोष्ठ बनाकर ३० अंश के ३० कोष्ठ बनाकर मेष के शून्यांश में शून्य रखकर फिर मेष का ३० वाँ भाग प्रत्येक कोष्ठ में जोड़कर फिर इसी प्रकार वृषादि

सब राशियों के अंशों में प्रत्येक कोष्ठ में जोड़कर ६० घटी तक जोड़ ले यह निरयन सारिणी बन जायेगी। फिर सायन रवि (तात्कालिक) के राशि अंश तुल्य कोष्ठ में कलादि से सानुपात करके घटिकादि भुक्त बना ले और उस लग्न प्रमाण में भुक्त भाग घटाकर जितनी राशियों का प्रमाण घट सके उसे घटाकर जो शेष बच रहे वह वर्तमान लग्न का भुक्त भाग जानकर वह घटिकादि जो हो उनमें मेषादि गत लग्नों का प्रमाण सब जोड़कर जिस राशि के जितने सानुपात अंशादि कोष्ठ में त्रैराशिक क्रम से जो राश्यादि प्राप्त हो उसमें अयनांश घटा दे। जो राश्यादि प्राप्त हो वह लग्न स्पष्ट होता है।

शुक्ल प्रतिपद् या चन्द्र दर्शन ज्ञान क्रम—जिस मास में शुक्ल प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन होगा या नहीं होगा ऐसा जानना हो तो उस समय सूर्य जिस राशि का हो और राहु जिस राशि का हो सो चक्र नं० ४८ चन्द्र दर्शन की सारिणी में सूर्य राशि के सामने राहु राशि के नीचे कोष्ट में जो अंक होय वह अलग रक्खे फिर अमावस्या की घटी पलों को ६० घटी में घटाकर जो शेष रहे उसमें दिनमान को जोड़ देवे जो अंक (घटिका अंक) प्राप्त होय वह अंक यदि सारिणी के कोष्ठांक (जो पूर्व अंक अलग रक्खा है) से अधिक होय तो प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन होगा। यदि न्यून हो तो प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन नहीं होगा ऐसा जाने।

शुक्ल प्रतिपदा चन्द्रदर्शन उदाहरण—जैसे संवत् १९८२ भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार को चन्द्रदर्शन होगा या नहीं ? यह जानना है तो सूर्य सिंह राशि के हैं और राहु कर्क राशि के हैं तो चक्र नं० ४८ चन्द्रदर्शन सारिणी में सूर्य सिंह के सामने और राहु कर्क के नीचे के कोष्ट में अंक ६४ है और अमावश्या घटिकादि २९।४४ को ६० घटी में घटाने से ३०।१६ रहा उसमें दिनमान घटिकादि ३२।२० को जोड़ा तो ६२।३६ हुआ पूर्वोक्त कोष्ठांक ६४ से न्यून है इसलिए चन्द्रदर्शन प्रतिपदा को नहीं होगा द्वितीया को होगा, इसी प्रकार सदैव जाने।

अब भौमादि पञ्चतारा ग्रहों का उदयास्त तथा मार्गी वक्री आरम्भ होने का समय जानने का क्रम लिखते है—चक्र नं० ५० सारिणी में भौमादि पंचताराओं के वक्र मार्ग उदयास्त होने के द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश प्रगट किए हैं उसी अनुकूल द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश जिस समय होंगे तब उदयास्त या वक्रमार्ग गति का आरम्भ होगा जिसका क्रम यह है कि प्रत्येक अवधि के ग्रहस्पष्ट करने में जो अन्तिम द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंशादि हों उनको बराबर लिखता रहे। द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंशों को ३६० अंशों में घटाकर शेष अंशादि का ग्रहण करे। उदयास्त वक्र मार्ग के अंशके निकटवर्ती जो अंश हो उनका परस्पर अन्तर करके उसको कलादि करके अभीष्ट ग्रह की शीघ्र केन्द्रगति जो चक्र नं० ३६ वक्र ग्रह चरणप्रवेशसारिणी पर दी है गति की कलादि का भाग (पूर्वोक्त अन्तर में) देने से जो दिनादि लब्ध हो वह यदि अवधि के केन्द्रांश से वक्रादिका केन्द्रांश अधिक हो तो अवधि के वारादिक में दिनादि ऋण करने से और न्यून होने से धन करने से वक्र आदि का बारादि स्पष्ट होता है क्योंकि केन्द्र गति वक्र हैं।

उदाहरण—चक्र नं० ५० में देखने से मालूम हुआ कि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश २८ होने पर भौम पूर्व में उदय होता है तो भौमस्पष्ट करने में भौम के द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंशादि २७।५३।४२ है इनका और पूर्वोक्त २७ अंशों का परस्पर अन्तर किया तो अंशादि ०।६।१८ यह हुआ इसकी कलादि ६।१८ में भौमकेन्द्र की गति कलादि ३७।४२ ऋण (मध्यम गति ३१।२६ शीघ्रोच्च गति ५९।८ = केन्द्रगति २७।४२) का (अर्थात् दोनों का विकला बनाकर समराशि करके) ३७८ ÷ २२६२ भाग दिया तो लब्ध दिनादि ०।१०।१ हुआ। उदयांश २८ से केन्द्रांश न्यून होने से मार्गशुक्ल १५ वृहस्पति प्रातः ६ बजे (अवधि के समय) में ऋण करने से पूर्वदिन (बुध) रात्रो ५

बजकर ५६ मिनट पर मंगल का पूर्वोदय हुआ अथवा उस दिन सूर्योदय ६ बजकर ५१ मिनट पर पूर्वोक्त है और भौम प्रातः का (शीघ्रकेन्द्रांश) स्पष्ट है इसलिए ५१ मिनट और १० पल का मिनट यह जोड़कर ५५ मिनट की घटिकादि २।१८ हुई इनको ६० घटी में घटाने से घटिकादि ५७।४२ हुई अर्थात् पूर्वदिन मार्ग० शी० शु० १४ बुध कल ५७।४२ भौमोदय पूर्व होगा। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह (पंचतारा) का वक्री मार्गी तथा उदयास्त होने का समय बनाना चाहिए।

अवराशिचार तथा नक्षत्रचरण प्रवेश समय जानने का क्रम उदाहरण सहित लिखते हैं—अवधि के स्पष्ट ग्रहों के अंशादि राश्यादि देखने से चक्र नं० ३६ और ३७ वक्री तथा मार्गी ग्रह के नक्षत्र चरणप्रवेश सारिणी के अंशादि को देखकर अवधि के ग्रह के अंशादि अन्तर को कलादि बनाकर उसी ग्रह की स्पष्ट गति कलादि का भाग देने से लब्ध दिनादि को यदि अवधि के अंशादि कम होवे तो दिनादि को अवधि के वारादि में जोड़ देवें यदि अवधि (जो १ पक्ष में अवधि पंक्ति रखते हैं) के अंशादि अधिक हो तो उक्त फल को अवधि के वारादि में घटा दे और यदि ग्रह वक्री हो तो विपरीत संस्कार करें अर्थात् जोड़ने के स्थान घटावे और घटाने के स्थान जोड़ दे जो वारादि हो (अवधि के जितने दिन आगे या पीछे) उसी समय अभीष्ट ग्रह अभीष्ट नक्षत्र चरण तथा अभीष्ट राशि में प्रवेश करेगा। परन्तु इतना ध्यान अवश्य चाहिए जैसे (सारिणी में) राश्यादि ०।०।०।० में मार्गी ग्रह प्रवेश करने में अश्विनीनक्षत्र प्रथम चरण वक्रगत्या मीन प्रवेश होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिए। (मार्गी के क्रम से एक चरण पीछे करने से वक्री का क्रम जाने) इत्यादि।

उदाहरण—जैसे मार्ग शुक्ल १५ गुरुवार स्पष्ट भौम राश्यादि ७।५।५०।५८ है और चक्र नं० ३७ सारिणी मे राश्यादि ७।६।४०।० यहाँ अनुराधा नक्षत्र का प्रथम चरण समाप्त होकर द्वितीय चरण आरम्भ होता है इसलिए इनका परस्पर अन्तर किया तो कलादि ४६।२ यह अन्तर हुआ इसमें भौम की स्पष्टगति कलादि ४१।२४ का भाग देने के लिए दोनों की विकला बनाकर (४९४२÷२४८४) लब्ध दिनादिक १।११।३ हुए अर्थात् मार्ग शु० १५ गुरुवार को प्रातः ६ बजे में धन अर्थात् सूर्योदय ६ बजकर ५१ मिनट पर है इसलिए प्रातः ६ बजे का समय बुधेष्ट ५७।५३ यह है अतः इसी में पूर्वोक्तफल दिनादि १।११।३ (४।५७।५३ + १।११।३) को धन किया तो = ६।८।५६ वारादि पौषकृष्ण १ प्रतिपदा शुक्र घटिकादि ८।५६ पर अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में भौम का प्रवेश होना जाने यही पंचांग में लिख दे। इसी प्रकार ग्रहों का राशिचार नक्षत्रचार आदि बनाना चाहिए। यह मार्गी ग्रह का हुआ। यदि यही ग्रह वक्री हो तो धन के स्थान पर ऋण किया जाता है और १ चरण घटाकर अर्थात् अनुराधा प्रथम चरणे वक्र लिखा जाता है।

अश्विन्यादि नक्षत्रों का उदय मध्य क्रम होने पर लग्न ज्ञान क्रम उदाहरण सहित लिखते हैं—चक्र नं० ५३ सारिणी में उदय मध्य अस्त परिमित लग्न राश्यादि लिखी है। उदाहरण—जैसे हस्त नक्षत्र का उदय राश्यादि ५।२४।५४।० और मध्य (जब नक्षत्र शिर पर हो) राश्यादि ८।१६।५४।० और अस्त राश्यादि ११।१२।४४।० पर हुआ यह चक्र नं० ५३ से जाने इस प्रकार सब नक्षत्रों का सारिणी के अनुसार जाने।

अब चन्द्र सूर्य के ग्रहण के गणित का क्रम तथा उदाहरण लिखने के पहले प्रथम ग्रहण सम्भव ज्ञान लिखते हैं ग्रहण सम्भव ज्ञान में अपनी बनाई "पञ्चाङ्ग रत्नावली" पुस्तक जो सन् १६०५ लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस में छपी थी लिख चुका हूँ वह यह है कि सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण होने के १५ दिन बाद अथवा ५॥ या ६ या ६॥ महीने बाद पुनः ग्रहण पड़ने का सम्भव होता है और पर्वान्तिकालीन स्पष्टरवि में राहु घटाने से जो शेष रहे वह व्यग्वर्क होता है व्यग्वर्क मेषादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिण होता है इस व्यग्वर्क के भुजांश कर ले यह भुजांश १५ अंश

हो तो सूर्य चन्द्र ग्रहण का सम्भव होता है। परन्तु सूर्यग्रहण में विशेषता यह है कि व्यग्वर्क दक्षिण हो तो व्यग्वर्क भुजांश के अंश ८ अंश तक हो तब इस देश में सूर्यग्रहण होता है और यदि व्यग्वर्क उत्तर हो तो व्यग्वर्क के भुजांश ८ अंश से अधिक हो तभी सूर्यग्रहण इस देश में होता है अन्यथा नहीं और ग्रहण सम्भव होने पर भी यदि अमावस्या का अन्त दिन में हो तो सूर्यग्रहण दिखलाई पड़ता है और पूर्णिमा का अन्त रात्रि में हो तब चन्द्रग्रहण दिखलाई पड़ता है। ग्रह लाघव में सूर्यग्रहण के सम्भव में केवल इतना ही लिखा है कि व्यग्वर्क दक्षिण में हो तो भुजांश ८ अंश तक होने पर सूर्यग्रहण होता है। इसका पूरा भावार्थ स्पष्ट नहीं करने से यह त्रुटि समझी जाती है। परन्तु ऐसे विद्वान् के कार्य में त्रुटि का होना उचित नहीं जानकर मैं इस विषय में यह लिखता हूँ कि उनका भावार्थ इस प्रकार है कि व्यगु दक्षिण के भुजांश ८ से कम होने पर जब सूर्यग्रहण का सम्भव है तो इसके विपरीत उत्तर में व्यगु होने पर ८ अंश से अधिक होने पर सूर्यग्रहण का सम्भव जाने। जैसे कोई फल मेषादि ऋण कहने से यह भावार्थ होता है कि तुलादि में धन होना चाहिए इत्यादि (व्यगु दक्षिण के भुजांश ८ तक और व्यगु उत्तर के भुजांश ८ से १५ तक में सूर्यग्रहण का सम्भव जाने) यह इसलिए रक्खे गये हैं कि चन्द्रकक्षा से सूर्यकक्षा ऊपर है और सूर्यग्रहण में सूर्य को चन्द्रमा ढकेलता है। चन्द्रशर दक्षिणोत्तर वशात् सूर्य के दक्षिणोत्तर चन्द्रमा पश्चिम से पूर्व को जाता है इसलिए सूर्यग्रहण पश्चिम से स्पर्श और पूर्व की तरफ मोक्ष होता है और चन्द्रशर के अनुसार दक्षिण या उत्तर की तरफ से होकर जाता है और सूर्य के ठीक नीचे जब चन्द्रमा होता है ग्रहण के समय में उत्तर या दक्षिण को हटा हुआ उस समय पृथ्वी के बीच अर्थात् लंका देश के पूर्वापरसूत्र देश में ठीक ऊपर सूर्य होने से ग्रहण ठीक मालूम होता है और चन्द्रशर दक्षिण अर्थात् चन्द्रमा दक्षिण को हटा हुआ हो और लंका से उत्तर जितने अधिक दूरवाले देशों में तिरछा पड़ने से सूर्य साफ दिखलाई देता है। लंका से दक्षिणवाले देशों में अधिक ढका हुआ दिखलाता है इसका विपरीत उत्तरशर होने से जाने। जैसे लंका के पूर्वापरसूत्र के देश में सूर्यग्रहण २ अंगुल ग्रास और चन्द्रशर दक्षिण है तो लंका के मध्य सूत्र से जितनी दूर उत्तर जाने पर सूर्य बिलकुल साफ दिखलाएगा (२ अंगुल संस्कार ऋण हो गया) तथा लंका के मध्य सूत्र से दक्षिण उतनी ही दूर जाने से (संस्कार धन होने से) २ अंगुल ग्रास के स्थान वहां पर ४ अंगुल ग्रास दिखलायेगा। इसको ज्यामेट्री (रेखागणित) जानने वाले कोण समकोण बनाकर भली प्रकार समझ सकेंगे और इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि सूर्यग्रहण १ अंगुल या अंगुल से कम का ग्रास होने से नहीं दिखलाता है। क्योंकि तीव्रप्रभा के कारण नहीं मालूम होता और स्पर्शकाल के समय के कुछ कालबाद स्पर्श दिखलाता है तथा मोक्षकाल से कुछ समय पहले ही से मोक्ष मालूम होता है यह भी तीव्रप्रभा का कारण है।

अब मकरन्दीय ग्रहण गणित लिखते हैं—चन्द्रग्रहण गणित क्रम—पूर्णिमान्त में जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र का सर्वेक्ष मान जो घटिकादि परिमित चक्र नं० ४५ सारिणी द्वारा सानुपात अंगुलादि चन्द्रविम्ब और राहु बिम्ब लावे फिर पूर्णिमान्त में स्पष्ट सूर्य जिस राशि का हो उस राशि तुल्य चक्र नं० ४६ सारिणी से जो प्रतिबिम्ब फल गतांशों के अनुसार सानुपात अंगुलादि फल प्राप्त हो वह पूर्वोक्त राहुबिम्ब में जोड़ने से जो प्राप्त हो वह स्पष्ट भूभाबिम्ब (राहु बिम्ब) अंगुलादि होता है (पूर्वोक्त राहु का बिम्ब फल सदा धन जाने) फिर छादकबिम्ब (राहु बिम्ब) और छाद्यबिम्ब (चन्द्रबिम्ब) इन दोनों के योग का आधा कर ले उसे मानैक्यखण्ड कहते हैं फिर मानैक्य खण्ड में चन्द्रशर को घटाने से शेष चन्द्रग्रास होता है यदि मानैक्य खण्ड की अपेक्षा चन्द्रशर अधिक होने से नहीं घट सके तो ग्रहण नहीं होता है।

अब चन्द्रशर साधन क्रम लिखते हैं—पूर्णिमान्तकालीन स्पष्ट चन्द्र में स्पष्ट राहु घटाकर जो शेष रहे वह सपात चन्द्र होता है उसका अंशादि कर ले जो ६ राशि कम हो तो उसी का अंशादि करले जो ६ राशि से

अधिक हो तो १२ राशि में घटाकर शेष के अंशादि परिमित चक्र नं० ४२ सारिणी से सानुपात जो प्राप्त हो उसमें ६ का भाग देने से लब्ध अंगुलादि चन्द्रशर होता है। सपातचन्द्र तुलादि हो तो चन्द्रशर उत्तर और मेषादि हो तो दक्षिण जाने।

अब मध्यस्थिति साधन क्रम लिखते हैं—ग्रास के अंगुल परिमित चक्र नं० ५७ सारिणी द्वारा सानुपात घटिकादि मध्यस्थिति लावे। इति चन्द्र ग्रहण।

अब सूर्य ग्रहण साधन क्रम लिखते हैं—अमावस्यान्त में स्पष्टसूर्य जिस राशि का हो तत्तुल्य चक्र नं० ४६ सारिणी द्वारा अंशों से अनुपात करके सानुपात अंगुलादि सूर्यबिम्ब लावे और चक्र नं० ४५ से सर्वेक्ष द्वारा सानुपात चन्द्रबिम्ब लावे।

अब लंबन साधन क्रम लिखते हैं—त्रिभोन लग्न और सूर्य का अन्तर करे ३ राशि से कम होने पर ९० अंश हीते हैं उन अंशों में ६ का भाग दे जो लब्ध हो उस परिमित चक्र नं० ४३ सारिणी से सानुपात घटिकादि लंबन साधे, सूर्य से त्रिभोन लग्न अधिक हो तो लंबन धन और न्यून हो तो लंबन ऋण जाने।

पूर्वोक्त चक्र नं० ४३ सारिणी से सानुपात स्थूल क्रांति साधन क्रम-सायन सूर्य (सायनग्रह के भुजांश) के भुजांश करके ६ का भाग दे लब्ध परिमित चक्र नं० ४३ सारिणी द्वारा सानुपात घटिकादि स्थूल क्रांति लावे फिर उसे ६ से गुणा करे तब स्थूल क्रांति होती है। अथवा चक्र नं० ४३ में कोष्ठ ३० हैं जिसके ६ गुणा १२० अंश अर्थात् ६ राशि हुई सो सायन ग्रह यदि ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में घटाकर शेष राश्यादि के अंशादि बनाकर अंशों में ६ का भाग देकर लब्ध परिमित चक्र नं० ४३ से सानुपात घटिकादि स्थूल क्रांति लावे दोनों साधनों का परिणाम एक ही है।

अथ सूक्ष्म क्रांति साधन क्रम—सायनलग्न अथवा सायन ग्रह के भुजांश करले अंशोपरि चक्र नं० ३९ सारिणी से सानुपात घटिकादि सूक्ष्म क्रांति साधन करे।

अथ शर साधन क्रम—स्पष्ट चन्द्र में राहु घटाने से सायन चन्द्र होता है जिसके भुजांश परिमित चक्र नं० ४० सारिणी द्वारा सानुपात कलादि शर लावे फिर उसमें ३ का भाग देने से अंगुलादि शर होता है सायनचन्द्र मेषादि तो शर दक्षिण, तुलादि हो तो शर ऊत्तर होता है उन्नतांशोपरि द्वादश अंगुल शंकु छाया साधन उन्नतांशोपरि चक्र नं० ५५ सारिणी द्वारा सानुपात अंगुलादि छाया साधे।

इति ग्रहणाधिकार समाप्त।

अब सूर्य चन्द्र ग्रहण का उदाहरण दिखलाते हैं प्रथम चन्द्र ग्रहण का गणित करते हैं—संवत् १९८४ शकः १८४९ मार्ग शुक्ल १५ गुरुवार इस दिन चन्द्रग्रहण होगा जिसका गणित करते हैं। पूर्वोक्त मार्ग शु० १५ गुरुवार का उदयकालीन स्पष्ट सूर्य ७।११।५६।२४ गति ६१।११ और स्प. च. १।१३।१३।५१ गति ८५१।२२ है और प्रातः ६ बजे के राहु (१।२८।५।८) में चर चालन ५१ मिनट का चर १२८ पल यानी घटिकादि २।८ धन चालन वक्री ग्रह होने से ऋण करके उदय कालीन राहु १।२८।५।१ हुआ और स्पष्ट सूर्य चन्द्र से लाई हुई पूर्णिमा तिथि घटिकादि ३९।४५ है यह पर्वान्तिकाल ही चन्द्रग्रहण का मध्य काल है। अब दर्शान्त घटिकादि ३९।४५ का चालन देकर पर्वान्त कालीन स्पष्टसूर्य चन्द्र और राहु बनाते हैं। सूर्य गति ६१।११ से ३९।४५ चालन को गुणा करके ६० का भाग देने से लब्धि ४०।३२ फल हुआ धन चालन होने से उदयकालीन स्पष्टरवि ७।२१।५६।२४ में जोड़ने से ७।२२।३६।५६ गति ६१।११ यह पर्वान्तिकालीन स्पष्टरवि हुआ और चन्द्रगति ८५१।२२ को घटिकादि

चालन ३६।४५ से गुणा करके ६० का भाग देने से अंशादि ९।२४।२ (कला के अंश बना लिए) फल हुआ इसको उदयकालीन स्पष्ट चन्द्र १।१३।१२।५१ में जोड़ा तो १।२२।३६।५३ यह स्पष्ट चन्द्र हुआ, परन्तु सूर्य से ठीक ६ राशि अधिक होने के कारण ३ विकला बढ़ा दी अथवा सूर्य स्पष्ट में ६ राशि जोड़ दी तो १।२२।२६।५६ गति ५८१।२२ यह पर्वान्त कालीन चन्द्र स्पष्ट हुआ और राहु की वक्र कलादि गति ३।११ को चालन ३६।४५ में गुणा करके ६० का भाग देने से लब्धि कलादि २।६ फल हुआ इसको उदयकालीन राहु १।२८।५।१ में घटाया तो १।२८।२।५५ यह पर्वान्त कालीन राहु हुआ अर्थात् पर्वान्तकालीन स्पष्टसूर्य ७।२२।३६।५६ गति ६१।११ और चन्द्र १।२२।३६।५६ गति ८५१।२२ और राहु १।२८।२।५५ गति ३।११ वक्र हुआ।

अब ग्रहण गणित आरम्भ करते हैं—स्पष्ट सूर्य ७।२२।३६।५६ में राहु १।२८।२।५५ को घटाया तो ५।२४।३४।१ यह व्यग्वर्क हुआ मेषादि होने से उत्तर है इसका भुजांश ५।२५।२६ हुआ। (१५ अंश से कम होने पर ग्रहण सम्भव है) भुजांश ५।२५।५६ को ११ से गुणा किया तो ५१।४५।४६ हुआ इसमें ७ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ८।३२ हुआ यह चन्द्र शर हुआ व्यग्वर्क मेषादि होने से उत्तर है। अब सूर्य की स्पष्ट गति ६१।११ ×२=१२२।२२ हुआ इसमें ११ का भाग देने से अंगुलादि ११।७ यह सूर्यबिम्ब हुआ और चन्द्र की स्पष्टगति ८५१।२२ में ७४ का भाग देने से लब्ध अंगुलादि ११।३५ यह चन्द्रबिम्ब हुआ और चन्द्र की स्पष्ट गति कलादि ८५१।२२ में ७१६ कला घटाकर शेष १३५।२२ में २२ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ६।६ हुआ इसमें ३२ अंगुल युक्त किआ तो अंगुलादि ३८।६ हुआ इसमें सूर्य की गति ६१।११ का सप्तमांश ८।४४ को घटाया तो २६।२५ अंगुलादि यह राहु (भूभाविम्ब) हुआ। चन्द्रग्रहण होने से छाद्य चन्द्र और छादक राहु इन दोनों के बिम्बों को यथा चन्द्रविम्ब अंगुलादि ११।३५ और राहुबिंब अंगुलादि २६।२५ को जोड़ा तो ४१।०० मानैक्य हुआ इसको आधा किया तो २०।३० यह मानैक्यखंड हुआ इसमें चन्द्रशर ८।३२ को घटाया तो ११।५८ यह ग्रास हुआ यह चन्द्रविम्ब ११।३५ से अधिक होने से (विपरीत) ग्रास ११।५८ में चन्द्रविम्ब ११।३५ घटाया तो ०।२३ यह खग्रास हुआ।

अब मध्य स्थिति तथा खग्रास की मर्दस्थिति लाते हैं—मानैक्य खण्ड २०।३० में शर ८।३२ युक्त किया तो २८।५२ हुआ इसको १० से गुणा किया तो २८८।४० हुआ इसको खग्रास ११।५८ से गुणा किया तो ३४५४।२२ यह हुआ इसका वर्गमूल लिया तो ५८।४६ हुआ इसको ५ से गुणा करके २९३।५० इसमें ६ का भाग दिया तो ४८।५८ हुआ इसमें चन्द्रबिंब मान ११।३५ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि ४।१३ यह मध्यस्थिति हुई।

अब खग्रास की मध्य स्थिति लाते हैं—चन्द्रबिंब ११।३५ और राहुबिंब २६।२५ इन दोनों का अन्तर १७।५० का आधा ८।५५ इसमे शर ८।२३ जोड़ा तो १७।२७ हुआ इसको १० से गुणा किया तो १७४।३० हुआ इसको खग्रास ०।२३ से गुणा किया तो ६६।५३ हुआ इसका वर्गमूल लिया तो ८।११ हुआ इसको ५ से गुणा करके ४०।५५ इसमें ६ का भाग दिया लब्ध ६।४६ हुआ। इसमें चन्द्रबिंब मान ११।३५ का भाग दिया तो घटिकादि ०।३५ लब्धि मर्दस्थिति हुई।

अब स्पर्शस्थिति तथा मोक्षस्थिति और स्पर्शमर्द तथा मोक्षमर्द लाते हैं—व्यग्वर्क के भुजांश ५।२५।५६ के द्विगुणमान ११ पल को व्यग्वर्क ५ राशि १६ अंश ६ राशि से कम हैं इसलिए पूर्वोक्त ११ पल को मध्यस्थिति ४।१३ में घटाया तो ४।२ यह स्पर्श स्थिति हुई, और पूर्वोक्त ११ पल को मर्दस्थिति ०।३५ में घटाया तो ०।२४ यह स्पर्शमर्द हुआ और पूर्वोक्त ११ पल को मध्यस्थिति ४।१३ में जोड़ा तो ४।२४ यह मोक्षस्थिति हुई और मर्दस्थिति ०।१५ में जोड़ा तो ०।४६ यह मोक्षमर्द हुआ।

अब चन्द्रग्रहणका स्पर्शकाल और मोक्षकाल लाते हैं और सम्मीलन तथा उन्मीलन काल लाते हैं—पूर्णिमा का अंत जो घटिकादि ३९।४५ यह पर्वकाल है यही चन्द्रग्रहण का मध्यकाल है मध्यकाल ३९।४५ में स्पर्श स्थिति ४।२ को घटाया तो ३५।४३ यह स्पर्श काल हुआ और मध्यकाल पर्वान्त ३९।४५ में मोक्ष-स्थिति ४।२४ को जोड़ा तो ४४।९ यह मोक्षकाल हुआ, और मध्यकाल ३९।४५ में स्पर्शमर्द ०।२४ घटाने से शेष ३९।२१ यह सम्मीलनकाल हुआ और पर्वान्त ३९।४५ में मोक्षमर्द ०।४६ जोड़ने से ४०।३१ यह उन्मीलन काल हुआ मोक्षकाल ४४।९ स्पर्शकाल ३५।४३ को घटाया तो शेष ८।२६ यह ग्रहण का पर्वकाल और उन्मीलन काल ४०।३१ में सम्मीलन काल ३९।२१ को घटाया तो शेष १।१० यह खग्रास का पर्वकाल हुआ इसी प्रकार साधन करना चाहिए।

अब अयन बलन साधते हैं—पर्वान्त कालीन स्पष्ट रवि ७।२२।३६।५६ में (चन्द्र ग्रहण होने से) ३ राशि घटाया तो शेष ४।२२।३६।५६ हुआ इसमें अयनांश २२।१।१२ को जोड़कर ५।१४।३८।८ हुआ इसकी भुज राश्यादि ०।१५।२१।५२ (इसके भुजांश १५।२१।५२ हुए) राशि ० होने से प्रथम खण्ड ७ से भुज के अंशादि को गुणा किया तो १०७।३३।४ हुआ इसमें ३० का भागदिया तो लब्ध अंगुलादि ३।३१ यह अयन वलन हुआ, सायन रवि मेषादि होने से अयन वलन ३।३१ हुआ।

अब मध्य नत लाते हैं—चन्द्रग्रहण का मध्यकाल ३९।४५ हुआ इसमें दिनमान २५।४४ को घटाया तो १४।१ रहा इसका और रात्यर्ध १७।८ का अन्तर किया तो ३।७ मध्यनत हुआ (अथवा निशीथ) अर्धरात्रि ४२।५२ और मध्यकाल ३९।४५ का अन्तर ३।७ यह मध्यनत हुआ अर्धरात्रि में मध्यकाल पूर्व है इसलिए मध्यनत पूर्व है।

अब अक्ष बलन साधते हैं—मध्यनत पूर्व ३।७ में ५ का भाग दिया (अथवा ६ से गुणाकरके अंशादि की राश्यादि बनाई) तो लब्धि राश्यादि ०।१९।१२।० हुई इसमें अयनांश न मिलाकर बलन साधते हैं। राशि स्थान में ० है इसलिए प्रथम खण्ड ७ से अंशादि १९।१२।० को गुणा करके १३४।२४ में ३० का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ४।३० वलन हुआ इसको पलभा ६।३३ से गुणा करके २९।२८।३० में ५ का भाग दिया लब्ध अंगुलादि ५।५३ यह अक्षवलन हुआ मध्यनत पूर्व है इसलिए अक्षवलन उत्तर है।

अब बलनाड्घ्रि साधते हैं—पूर्वोक्त अयनवलन अंगुलादि ३।३१ उत्तर और अक्षबलन अंगुलादि ५।५३ उत्तर है इन दोनों की एक ही दिशा होने से परस्पर दोनों का योग किया तो ९।५४ यह हुआ इसमें ६ को भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि १।३४ यह वलनाड्घ्रि हुआ दोनों के योग की दिशा उत्तर है इसलिए बलनाड्घ्रि उत्तर है।

अब ग्रासाड्घ्रि तथा खग्रासाड्घ्रि साधते हैं—ग्रास ११।५८ को ६० से गुणा किया तो ७१८ हुआ इसमें मानैक्यखंड २०।३३ का भाग दिया (दोनों की एक राशि बनाने के लिए दोनों को ६० से गुणा करके छोटी संख्या बनाकर भाग दिया) तो ४३।०।८० भागा १२२३ = लब्ध ३५।१३ हुआ इसका वर्गमूल लिया तो ५।५६ यह अंगुलादि ग्रासाड्घ्रि हुआ और खग्रास ०।२३ में अंगुलादि १।३० को जोड़ा तो १।५३ यह खग्रासाड्घ्रि हुआ।

अब मकरन्द के अनुसार चन्द्रग्रहण के गणित का उदाहरण पुनः दिखलाते हैं। यहाँ प्रथम नक्षत्रमान अर्थात् सर्वर्क्ष जानना है तो पहले सूर्य चन्द्र की स्पष्टगति से तिथि नक्षत्र और योग का मान जानने का उदाहरण सहित लिखते हैं—स्पष्ट चन्द्र की गति में सूर्य की स्पष्ट गति कलादि को घटाकर शेष कलादि गति को विकला बनाकर फिर १२ अंशों की विकलाओं ७२० को ६० सेगुणा करके अर्थात् २५९२००० में (पूर्वोक्त विकलाओं का) भाग देने से जो घटिकादि लब्धि हो वह उस तिथि का मान जाने और ८०० कलाओं की विकला ४८००० को ६० से गुणा करके अर्थात् २८८०००० में चन्द्र की स्पष्टगति की विकलाओं का भाग देने से जो लब्धि हो वह नक्षत्रमान सर्वर्क्ष होता है और सूर्य चन्द्र की स्पष्ट गतिके योग की विकलाओंका भाग २८८०००० में देनेसे जो लब्धि घटिकादि हो वह योगमान होता है।

उदाहरण—चन्द्र की स्पष्ट गति कलादि ८५१।३२ में सूर्य की स्पष्टगति ६१।११ को घटाने से शेष ७६०।११ विकला ४७४११ हुई इसका भाग २५६२००० में दिया तो लब्धि घटिकादि ५४।४० यह तिथिमान हुआ और पूर्वोक्त २८८०००० में चन्द्र की स्पष्टगति ८५१।२२ की विकलाओं ५१०८२ का भाग देने से लब्धि घटिकादि ५६।२३ यह नक्षत्रमान हुआ और पूर्वोक्त २८८००० में सूर्य चन्द्र की स्पष्टगति के योग ६१२।३३ की विकलाओं ५४७५३ का भाग देने से लब्धि घटिकादि ५२।३६ यह योगमान हुआ।

अब ग्रहण गणित का उदाहरण आरम्भ करते हैं—रोहिणी नक्षत्र का मान सर्वत्र घटिकादि ५६।२३ है इस परिमित चक्र नं० ४५ से सानुपात अंगुलादि ११।३० चन्द्रबिम्ब और अंगुलादि २६।१६ राहुबिम्ब हुआ अब सूर्य ७।२२।३६।५६ वृश्चिक राशि के हैं सो चक्र नं० ४६ से सूर्य राश्यादि तुल्य सानुपात अंगुलादि ०।२ प्रतिबिम्ब फल को राहुबिम्ब २६।१६ में जोड़ा तो २६।२१ यह स्पष्ट राहुबिम्ब हुआ। चन्द्रबिम्ब ११।३० और राहुबिम्ब २९।२१ को जोड़कर ४०।५१ इसका आधा २०।२५ यह मानैक्य खण्ड हुआ।

अब चन्द्रशर लाते हैं—पर्वान्त कालीन स्पष्टचन्द्र १।२२।३६।५६ में राहु १।२८।२।५५ को घटाया तो ११।२४।३४।१ यह विराहु चन्द्र हुआ (अथवा राहु में चन्द्र जोड़ने से सपात चन्द्र होता है) उसे १२ राशि में घटाने से फल एक ही होता है) विराहु चन्द्र ६ राशि से अधिक होने पर १२ राशि में घटाने से शेष ०।५।२५।५९ यह हुआ इसके अंशादि ५।२५।५९ से चक्र नं० ४२ सारिणी द्वारा सानुपात ४८।२५ हुआ। इसमें ६ का भाग दिया तो अंगुलादि ८।४ यह चन्द्र शर हुआ। विराहु चन्द्र तुलादि होने से उत्तर है। मानैक्य खण्ड २०।२५ में शर ८।४ को घटाया तो शेष १२।२१ यह ग्रास हुआ इस परिमित चक्र नं० ५७ सारिणी द्वारा सानुपात घटिकादि ३।५८ यह मध्य स्थिति हुई दर्शान्तकाल पूर्णिमांत ३९।४५ में मध्यस्थिति ३।५८ को घटाया तो ३५।४७ स्पर्शकाल हुआ और मध्यकाल पूर्णिमान्त ३६।४५ में मध्यस्थिति ३।५८ को जोड़ा तो ४३।४३ यह मोक्षकाल हुआ मोक्षकाल ४३।४३ में स्पर्शकाल ३५।४७ को घटाने से ७।५६ यह ग्रहण का पर्वकाल हुआ १२।२१ ग्रास (ग्रास अधिक होने से) में चन्द्रबिम्ब ११।३० को घटाया तो शेष ०।५१ यह खग्रास हुआ। शेष क्रिया पूर्ववत् करना चाहिए।

अब सूर्यग्रहण का उदाहरण लिखते हैं—संवत् १९८२ शके १८४७ माघकृष्ण ३० गुरौ १३।१८ इस दिन सूर्यग्रहण होने का सम्भव मकरन्द और ग्रहलाघव दोनों से आता है परन्तु एतद्देश में सूर्यग्रहण नहीं हुआ। जैसा कि मैं ग्रहण सम्भवज्ञान में स्पष्ट रूप से बतला चुका हूँ (क्योंकि व्यग्वर्क के भुजांश ८ अंश से कम होने पर जब कि व्यग्वर्क उत्तर गोल में हो तो सूर्यग्रहण एतद्देश में नहीं होता है वही योग यहाँ पर है) ग्रहण नहीं हुआ परन्तु मैं इस ग्रहण का उदाहरण दिखलाता हूँ क्योंकि गणित क्रम का उदाहरण दिखलाना है।

उदाहरण—पहले अहर्गण दिन बल्ली बनाकर सूर्य चन्द्र राहु स्पष्ट करते हैं—पूर्वोक्त क्रमानुसार बृहस्पति को अर्द्धरात्रिकालीन ग्रहदिन बल्ली ८।३०।१।५ हुई। अभ्यास से स्पष्ट समझ लेना चाहिए।

अभ्यास		वार
चक्र नं० २५ से शा० १७९९ में	८।२५।३।४७	३
चक्र नं० २६ से शेषाब्द ४८ में	७।४।५२।२२	०
चक्र नं० २७ से माघ कृ० १५ में	०।०। ४।२५	१
बृहस्पति होने से १ दिन अधिक किया	०।०। ०। १	१
शा० १५४७ माघ कृष्ण ३० बृहस्पतिवार दिन ग्रह बल्ली ८।३०।१।५५		

इससे मध्यम सूर्य चन्द्र तथा चन्द्रकेन्द्र तथा केतु लाकर राहु बनाते हैं और प्रत्येक में देशान्तर संस्कार करके फिर प्रातः ६ बजे के बताते हैं क्योंकि, अर्द्धरात्रि के होते हैं इसका उदाहरण पहले दिखला चुके हैं, अब यहाँ भी अभ्यास दिखलाते हैं। ग्रहदिन वल्ली ८।३०।१।५ (पूर्वोक्त देहली का देशान्तर दिया गया)।

८।३ ०। १। १५ द्वारा।

मध्यम सूर्य

०। ४६। १६। १८
६। ५१। २१। ४१
४०। ५०। ५२। १
५३। ३३। ५२। १६
४५। ५। २२। ४६
६
६। ०। ३२। १६
देशान्तर ०। १२ ऋण
निशि ६। ०। ३२। ४
१८ घंटे का चा० ४४। २१ ऋण
प्रा० ६ बजे ८। २६। ४७। ४३

मध्यम चन्द्र

१०। ५८। ४६। ३
११। ४५। ४८। ४०
५४। २०। १६। ५
२६। २५। ५। २५
४६। ३०। २। १३
६
६। ६। ०। १३
देशान्तर २। ४८ ऋण
निशि ६। ८। ५७। २५
१८ घंटे चालन ६। ५२। ५६ ऋण
प्रातः ६ बजे ८। २६। ४। २६

चन्द्र केन्द्र

१०। ५३। १४। ५४
१०। ३८। ५८। ५५
२६। २७। २५। ३८
५१। २४। १०। १३
४२। २३। ४६। ४०
६
८। १४। २२। ५८
देशान्तर २। ४६ ऋण
निशि ८। १४। २०। १२
१८ घंटे का चा. ६। ४७। ५५
प्रातः ६ बजे ८। ४। ३२। १७

चन्द्र केन्द्र

८। २६। ४। २६
८। ४। ३२। १७
०। २४। ३२। १२
३।
चं० उ० ३। २४। ३२। १२
केतु ५६। ५७। २१। २
५६। २८। १२। ३०
६। १५। २५। १
४०। ६। ४०। २३
४५। ४७। ३८। ५६
केतु ६। ४। ४५। ५३
६
राहु ३। ४। ४५। ५३
देशान्तर ।०
निशि ३। ४। ४५। ५३
१८ घंके का चालन २। २३ धन
प्रातः ६ बजे ३। ४। ४८। १६

अब प्रातः ६ बजे के मध्यम सूर्य चन्द्र चन्द्रोच्च राहु बना दिए, सूर्य स्पष्ट करते हैं।

मध्यम रवि	८।२६।४७।४३	मध्यम सूर्य	८।२६।४७।४३
केन्द्र फल धन	०।२८।४८	मन्दोच्च	२।१७।१७।२१
स्पष्टरवि	६। ०।१६।३१	मं. के. तुलादि धन	६।१२।३०।२३
मध्यम गति	५६। ८	भुजांश	१२।३०।२२
गतिफल केन्द्र कर्कादि धन	२।१३	अस्योपरि सानुपात	
		केन्द्रफल अंशादि	०।२८।४८
स्पस्ट गति	६१।२१	तथा गति फल	२।१३

अर्थात् राश्यादि ६।०।१६।३१ गति ६१।२१ यह सूर्य स्पष्ट हुआ।

अब प्रातः ६ वजे का चन्द्र स्पष्ट करते हैं। अभ्यास देखो—

मध्यम चन्द्र	८।२९। ४।२६	मध्यगति	७६०।३५
फल ऋण	२।१०।४४	गतिफलकर्कादिधन	६२।३८
स्पष्ट चन्द्र	८।२६।५३।४५	स्पष्ट गति	८५३।१३
भुजांशोपरि केन्द्र फलं		मध्य चन्द्र	८।२६। ४।२६
सानुपात अंशादि	२।१०।४४	चन्द्रोच्च	३।२४।३२।१२
गतिफल सानुपात कलादि	६२।३८ हुआ	केन्द्र मेषादि ऋण	५। ४।३२।१७
		भुजांश	२५।२७।४३

अर्थात् राश्यादि ८।२६।५३।४५ गति ८५३।१३ यह चन्द्र स्पष्ट हुआ।

अब उदयकालीन ग्रह बनाने के लिए प्रथम पूर्वोक्त क्रमानुसार चर पल तथा दिनमान बनाकर चर संस्कार करके उदयकालीन बनाते हैं शाके १८४७ में ४२१ घटाकर शेष १४२६ का दशमांश १४२।३६ घटाया तो १२८३।२४ कलादि हुई इसके अंशादि २१।२३।२४ हुए फिर विकलादि ४।३० प्रतिमास के हिसाब से ६ मास की ४० विकला जोड़ दी तो अंशादि २१।२४।४ यह अयनांश हुआ। अब इसको स्पष्ट सूर्य ६।०।१६।३१ में जोड़ा तो ६।२१।४०।३५ यह सायनार्क हुआ इसको १२ राशि में घटाकर शेष २।८।१६।२५ यह भुज हुआ भुज में राशि हैं तो पूर्वोक्त प्रथम चरखण्ड फलादि ६५।३० द्वितीय चरखण्ड फलादि ५२।२४ का योग किया तो ११७।५४ यह योग फल हुआ और इसके शेष अंशादि ८।१६।२५ को तृतीय चरखण्ड फलादि २१।५० से गुणा किया तो १८१।४५।४३ हुए इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध पलादि ६।३ हुई इनको पूर्वोक्त योगफल फलादि ११७।५४ में जोड़ा तो फलादि १२३।५७ अर्थात् १२४ पल हुई यही चर फल १२४ हैं इनकी घटिकादि २।४ में सायनार्क तुलादि होने से १५ घटी में घटाया तो यह दिनार्ध हुआ द्विगुण करने से २५।५६ यह दिनमान हुआ इसमें ५ का भाग देने से लब्ध घंटादि ६ घण्टा ४६ मिनट हुआ यह उदयकाल हुआ अब चर पल भी घटिकादि २।४ का धन चालन करके सूर्य की स्पष्ट गति ६१।२१ से फल कलादि २।७ सूर्य ६।०।१६।३१ में जोड़ने से ६।०।१८।३८ यह उदयकालीन स्पष्ट सूर्य हुआ और चन्द्र गति कलादि ८५३।१३ चालनोपरि फल २६।२३ हुआ यह चन्द्र ८।२६।५३।४५ में जोड़ने से ८।२७।२३।८ यह उदयकालीन स्पष्ट चन्द्र हुआ और राहु की वक्रगति ३।११ से फल ६ विकला हुआ इनको राहु ३।४।४६।१६ में ऋण करने से ३।४।४८।१० यह उदयकालीन राहु हुआ।

अब सूर्य चन्द्र स्पष्ट करते हैं—क्योंकि ग्रहण के लिए सूर्य चन्द्र स्पष्ट से ही तिथि स्पष्ट करना चाहिए। अब अमावस्या की भोग्य घटिकादि बनाकर पर्वान्त कालीन सूर्य चन्द्र बनाकर गणित आरम्भ करना चाहिए।

स्पष्ट चन्द्र ८।२७।२३।८ चन्द्र गति = ८५३।१३
स्पष्ट रवि ९। ०।१८।३८ सूर्य गति = ६१।२१
इसके अंश बनाये ११।२७। ४।३० ७९१।५२
१२) ३५७। ४।३० (२९ गततिथि ६०
२४ ४७५१२ विकला
११७
१०८
९।४।३०

१२। ०। ०
९। ४।३०
२।५५।३० भोग्य

२।५५।३० भोग्य की विकला किया
६०
१७५
६०
१०५३० विकला
६०
४७५१२) ६३१८०० (१३
४७५१२
१५६६८०
१४२५३६
१४१४४
६०
४७५१२) ८४८६४० (१८ पल
४७५१२
३७३५२०
३८००९६

अर्थात् अमावस्या की भोग्य घटिकादि १३।५८ हुई।

अब अमान्त घटिकादि १३।१८ का चालन धन देकर पर्वान्त कालीन सूर्य चन्द्र और राहु बनाया तो पर्वान्त कालीन सूर्य ९।०।२२।१४ गति ६१।२१ चन्द्र ९।०।३२।१४ गति ८५३।१३ राहु ३।४।४७।३२ हुए और स्पष्ट सूर्य में राहु घटाने से ५।२५।४४।४२ यह व्यग्वर्क हुआ। तथा पर्वान्त कालीन इष्ट घटिकादि १३।१८ परिमित स्वदेशीय (देहली की) लग्न स्पष्ट हुई राश्यादि ०।१३।५८।९ यथा सूर्य तात्कालिक ९।०।३२।१४ में अयनांश २१।२४।४ जोड़कर सायन रवि ९।२१।५६।१८ हुए मकर लग्न के भुक्त अंशादि २१।५६।१८ को ३० अंश में घटाने से ८।३।४२ यह मकर का भोग्य भाग हुआ इसको पूर्वोक्त स्वदेशीय मकर लग्न प्रमाण ३०१ पल से गुणा किया तो २४२३।४५।४२ हुआ इसमें ३० का भाग देने से लब्धि पलादि ८०।४७ यह मकर लग्न का भोग्य पलादि हुआ। अब घटिकादि १३।१८ के पलों ७९८ में मकर का भोग्य पलादि ८०।४७ और कुम्भ लग्न प्रमाण पल २४७ और मीन प्रमाण पल २१३ मेष प्रमाण २१३ को घटाया तो शेष पलादि ४४।१३ यह वृषलग्न का भुक्त भाग हुआ इसको ३० से गुणा किया तो १३२६।३० हुआ इसमें वृष प्रमाण पल २४७ से भाग दिया तो लब्धि अंशादि ५।२२।१३ हुआ इसमें वृष राशि जोड़कर राश्यादि

१।५।२२।१३ यह सायन लग्न हुआ। इसमें अयनांश २१।२४।४ को घटाया तो राश्यादि ०।१३।५८।६ यह लग्न स्पष्ट हुआ। यह पर्वान्त कालीन लग्न हुआ। पर्वान्त कालीन लग्न में ३ राशि घटाकर शेष ६।१३।५८।६ यह त्रिभोन लग्न हुआ इसमें अयनांश २१।२४।४ को जोड़ा तो १०।५।२२।१३ यह सायन त्रिभोग लग्न हुआ। इसका भुजांश ५४।३७।४७ हुआ इसके अंशों में १० का भाग देने से लब्धि ५ हुई। सूक्ष्म क्रान्ति साधन के कोष्ट ५ (जो सूर्य ग्रहण गणित में चक्र सूक्ष्म क्रान्ति लाने का दिया है उसमें) तक योगांश १८१ हुआ और छठे कोष्ट का अंक २५ है इससे शेष अंशादि ४ ३७।४७ को गुणा ११५।४४।३५ मे १० का भाग दिया तो अंशादि १६२।३४।२७ हुआ इसमें १० का भाग देने से लब्ध अंशादि १६।१५।२७ यह सूक्ष्म क्रान्ति हुई सायन त्रिभोन लग्न तुलादि होने से दक्षिण है इसका और पूर्वोक्त अक्षांश २८।२७।३६ दक्षिण का परस्पर संस्कार १ दिशा में होने से योग किया तो ४७।४३।३ यह दक्षिण नतांश हुआ नतांश ४७।४३।३ में २२ का भाग दिया तो लब्धि २।१०।८ हुई इसका वर्ग किया तो ४।४२।१४ हुआ २ से अधिक होने पर इसमें २ घटाकर शेष २।४२।१४ का आधा १।२१।७ इसको पूर्वोक्त वर्ग ४।४२।१४ में जोड़ा तो ६।३।२१ हुआ इसमें १२ अंश और जोड़े तो १८।३।२१ यह हार हुआ स्पष्ट रवि ६।०।३२।१४ और त्रिभोन लग्न ६।१३।५८।६ इन दोनों का अन्तर ०।१३।२५।५५ इसके अंशादि १३।२५।५५ में १० का भाग दिया तो लब्ध १।२०।३५ हुआ इसको १४ अंश में घटाया तो शेष १२।३६।२५ रहा इसको पूर्वोक्त लब्ध १।२०।३५ से गुणा किया तो २६।४६।५६ हुआ (६११७६ वि०) इसमें हार १८।३।२१ (६५००१ वि०) का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि ०।५६ यह लम्बन हुआ। सूर्य से त्रिभोन लग्न अधिक होने से लम्बन धन है इसका संस्कार अमाबास्यान्त की घटिकादि १३।१८ में धन किया तो १४।१४ यह लम्बन संस्कृत अमान्त हुआ यह सूर्यग्रहण का मध्य काल है लम्बन ०।५६ को १३ से गुणा किया तो कलादि १२।८ हुआ इसको लम्बन धन होने से व्यग्वर्क ५।२५।४४।४२ मे धन किया तो ५।२५।५६।५० यह लम्बन संस्कृत व्यग्वर्क हुआ। इसके भुजांश ८ अंश से कम होने से ग्रहण सम्भव है परन्तु व्यग्वर्क उत्तर है और भुजांश ८ अंश से कम होने पर सूर्य ग्रहण एतत् देश में नहीं होगा यहाँ केवल गणित क्रम दिखलाना है। भुजांश ४।३।१० को ११ से गुणा करके ४४।३४।५० इसमें ७ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ६।२२ यह चन्द्र शर हुआ व्यग्वर्क मेषादि होने से उत्तर है। लम्बन ०।५६ को ६ से गुणा किया तो अंशादि ०।५।३६।० हुआ इसको त्रिभोन लग्न ६।१३।५८।६ में लम्बन के समान धन किया तो ६।१६।३४।६ यह लम्बन संस्कृत त्रिभोन लग्न हुआ। इसमें अयनांश २१।२४।४ को जोड़ा तो १०।१०।५८।१३ यह सायन त्रिभोन लग्न हुआ इसके भुजांश ४६।१।४७ परिमित पूर्वोक्त क्रमानुसार अंशादि १७।४८।३२ यह सूक्ष्म क्रान्ति हुई सायन लग्न तुलादि होने दक्षिण हुआ। इसका और स्वदेशीय दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का परस्पर संस्कार एक दिशा में होने से योग किया तो ४६।१६।८ यह लम्बन संस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश हुआ इसमें १० का भाग दिया तो लब्धकलादि ४।३७ हुई इसको १८ कला में घटाकर शेष कलादि १३।२३ रही इसको पूर्वोक्त लब्धि ४।३७ से परस्पर गुणा किया तो कलादि ६१।४३ हुआ इसको ६ अंश १८ कला में घटाया तो अंशादि ५।१६।१७ यह शेष रहा इसको कलात्मक मानकर इसका गुणनफल कलादि ६१।४३।० में भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ११।४२ यह नति हुई। पूर्वोक्त नतांश की दिशावत् दक्षिण हुई इसका और पूर्वोक्त चन्द्रशर अंगुलादि ६।२२ उत्तर का परस्पर संस्कार भिन्न दिशा होने से परस्पर अन्तर किया तो शेष ५।२० दक्षिण यह स्पष्ट शर हुआ सूर्य की स्पष्ट गति ६१।२१ को २ से गुणा करके १२२।४२ इसमें ११ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ११।६ यह सूर्यबिम्ब हुआ और चन्द्र की स्पष्ट गति ८५३।१३ में ७४ का भाग दिया तो अंगुलादि ११।३२ यह चन्द्र बिम्ब हुआ इन दोनों के योग २२।४१ का आधा ११।२० यह मानैक्य खण्ड हुआ इसमें स्पष्ट शर ५।२० को घटाया तो शेष ६।० यह अंगुलादि ग्रास हुआ रवि बिम्ब ११।६ में ग्रास ०।६।० को घटाया तो शेष ५।६ यह शेष बिम्ब हुआ।

अब मध्यस्थिति लाते हैं—मानैक्य खण्ड ११।२० में स्पष्ट शर ५।२० को जोड़ा तो १६।४० हुआ इसको १० से गुणा किया तो १६६।४० हुआ इसको ग्रास ६।० से गुणा किया तो १०००।०।० हुआ इसका वर्गमूल ३१।३७ हुआ इसे ५ से गुणा करके १५८।५ में ६ का भाग दिया तो २६।२१ लब्ध हुआ इसमें चन्द्र बिम्ब मान ११।३२ का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि २।१७ यह मध्य स्थिति हुई, मध्य स्थिति २।१७ को ६ से गुणा करके अंगुलादि १३।१२ गुणनफल को त्रिभोन लग्न ६।१३।५८।६ में घटाया तो ६।०।१६।६ यह स्पर्श त्रिभोन लग्न हुआ। इसमें अयनांश २१।२४।४ जोड़कर सायनलग्न ६।२१।४०।१३ इसके भुजांश ६८।१६।४७ परिमित पूर्वोक्त (चक्र द्वारा) क्रमानुसार अंशादि २२।५।५७ यह सूक्ष्म क्रान्ति हुई सायन तुलादि होने से दक्षिण हुआ इसका और दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का एक दिशा में होने से परस्पर योग किया तो ५०।३३।३३ यह अंशादि दक्षिण नतांश हुआ नतांश ५०।३३।३३ में २२ का भाग दिया तो २।१७।५३ यह लब्ध हुआ इसका वर्ग किया तो ५।१७।१ हुआ इसमें दो से अधिक होने पर २ अंश घटाकर शेष ३।१७।१ का आधा १।३८।३० को पूर्वोक्त वर्ग ५।१७।१ में जोड़ा तो ६।५५।३१ हुआ इसमें १२ अंश और जोड़े तो १८।५५।३१ यह हार हुआ।

अब सूर्य को भी स्पर्शकालीन बनाते हैं—दर्शान्त कालीन स्पष्ट रवि ६।०।३२।१४ है गति ६१।२१ को मध्य स्थिति २।१७ से गुणा करके ६० का भाग देने से फल कलादि २।२० दर्शान्तकालीन रवि में घटाया तो ६।०।२६।५४ यह स्पष्टकालीन सूर्य हुआ इसका और स्पर्श त्रिभोन लग्न ९।०।१६।६ का अन्तर किया तो ०।०।१३।४५ यह हुआ इसके अंशादि १३।४५ में १० का भाग दिया तो ०।१।२२ लब्धि हुआ इसको १४ अंश में घटाकर शेष १३।५८।३८ से परस्पर गुणन किया तो ०।१६।६ यह गुणन फल हुआ इसमें हार १८।५५।३१ का भाग दिया तो लब्धि-घटिकादि ०।१ यह स्पर्श लम्बन हुआ स्पर्शकालीन सूय से स्पर्श त्रिभोन लग्न कम है इस लिए लम्बन ऋण है पुनः मध्यस्थिति २।१७ को ६ से गुणा करके अंशादि १३।४२ गुणनफल को त्रिभोन लग्न ६।१३।५८।६ में जोड़ा तो ६।२७।४०।६ यह मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न हुआ इसमें अयनांश २१।२४।४ को जोड़ा तो १०।१६।४।१३ यह सायन लग्न हुआ इसके भुजांश ४०।५५।४७ परिमित पूर्वोक्त क्रमानुसार अंशादि १६।३८।१६ यह सूक्ष्म क्रान्ति हुई, सायन लग्न तुलादि होने से क्रान्ति दक्षिण हुई, ईसका और दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का एक दिशा में होने से परस्पर योग संस्कार किया तो ४५।५।५२ यह दक्षिण नतांश हुआ इसमें २२ का भाग दिया तो लब्ध २।२।५६ हुआ इसका वर्ग किया तो ४।१२।५ इसमें २ से अधिक होने से २ घटाकर शेष २।१२।५ का आधा १।६।२ को पूर्वोक्त वर्ग ४।१२।५ में जोड़ा तो ५७।१८।७ यह हुआ इसमें १२ अंश और जोड़े तो १७।१८।७ यह हार हुआ।

अब सूर्य को मोक्षकालीन बनाने के निमित्त दर्शान्त कालीन रवि ६।०।३२।१४ में मध्यस्थिति घटिकादि २।१७ का चालान गति ६१।२१ के अनुसार फलकलादि २।२० को पर्वान्त कालीन रवि में जोड़ा तो ९।०।३४।३४ यह मोक्षकालीन रवि हुआ। इसका और मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न ६।२७।४०।६ का अन्तर किया तो ०।२७।५।३५ यह हुआ इसके अंशादि २७।५।३ में १० का भाग दिया तो २।४२।३३ यह लब्ध हुआ। इसको १४ अंश में घटाया तो शेष ११।१७।२७ से परस्पर गुणा किया तो ३०।३५।१६ यह गुणनफल हुआ। इसमें हार १७।१८।७ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि १।४६ यह मोक्ष लम्बन् हुआ। सूर्य से त्रिभोन लग्न अधिक होने से लम्बन धन है।

अब स्पर्शकाल और मोक्षकाल दिखलाते हैं—(अमांत) दर्शान्त घटिकादि १३।१८ में मध्यस्थिति २।१७ को घटाया तो शेष ११।१ में स्पर्श लम्बन ०।१ ऋण को घटाया तो ११।० यह स्पर्शकाल हुआ फिर अमान्त १३।१८ मध्यमस्थिति २।१७ को जोड़ा तो १५।३५ हुआ। इसमें मोक्षलम्बन १।४६ धन को जोड़ा तो १७।२१

मोक्षकाल हुआ। मोक्षकाल १७।२१ में स्पर्शकाल ११।० को घटाया तो ६।२१ ग्रहण का पर्वकाल हुआ। इस प्रकार ग्रहण गणित ग्रहलाघोक्त हुआ। परन्तु राहु सूर्य मकरन्दीय हैं।

अब मकरन्द सारिणी द्वारा सूर्य ग्रहण का उदाहरण दिखलाते हैं—अमान्त काल १३।१८ मे स्पष्टरवि ६।०।३२।१४ है इस परिमित चक्र नं० ४६ से सानुपात अंगुलादि सूर्य बिम्ब १६।१५ हुआ और चन्द्रमा की स्पष्ट गति ८५३।१३ से सर्वक्ष ५६।२५ हुआ (अर्थात् २८८०००० मे गति विकला ५१११३ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि ५६।१५ सर्वक्ष हुआ) सर्वक्ष परिमित चक्र न० ४५ से सानुपात अंगुलादि ११।३१ चन्द्रविम्ब हुआ। त्रिभोन लग्न ६।१३।५८।६ और स्पष्ट रवि ६।०।३२।१४ इनका अन्तर ०।१३।२५।५५ इसके अंशादि १३।२५।५५ में ६ का भाग दिया तो लब्ध २ हुआ। शेष अंशादि १।२५।५५ को (२ व ३ के चक्र नं० ४३ से कोष्ठान्तर) कोष्ठान्तर को २३।४० से गुणा करके ३३।५३ हुआ इसमें ६ का भाग देने से लब्ध ५।३६ हुआ अर्थात् ०।५।३६ इस अनुपात को २ कोष्ठ के ०।४८।३२ में अग्रिम कोष्ठ अधिक होने से धन किया तो ०।५४।११ यह सानुपात घटिकादि ०।५४ यह लंबन हुआ। सूर्य से त्रिभोन लग्न अधिक होने ते लम्बन धन है।

स्थूल क्रान्ति लाने का उदाहरण—सायन भुजांश ३६।१३।४७ (तुलादिक हैं) इनमें ६ का भाग दिया तो लब्धि ६ हुई, मेष ३।१३।४७ रहे सो चक्र नं० ४३ से सानुपात पूर्वोक्त बम्बनवत् घटिकादि २।२८।५२ हुई इसको ६ से गुणा किया तो अंशादि १४।५०।१२ यह स्थूलक्रान्ति हुई। यह तुलादि होने से दक्षिण हुई।

सूक्ष्म क्रान्ति का उदाहरण—पूर्वोक्ततुलादि के सायन भुजांश ३६।१३।४७ परिमित चक्र नं० ३६ से सानुपात अंशादि १४।४८।४५ सूक्ष्म क्रान्ति तुलादि होने से दक्षिण हुई।

मकरन्दीय राहु से ग्रहलाघवीय राहु शुद्ध है अतः मेरी सम्मति यह है कि ग्रहलाघवीय राहु बनाकर ग्रहण गणित करना चाहिए (मकरन्द और ग्रहलाघव के राहु की अन्तर की सारिणी आगे बनाकर ग्रहलाघवीय राहु के बनाने का उदाहरण दिखलायेंगे) क्योंकि सं० १९६६ शक: १८३३ कार्तिक शु० १५ चन्द्रवार इसदिन मकरन्दानुसार राहु ०।६।२३।२३ था इससे चन्द्रशर लाया तो अंगुलादि १७।३ था और चन्द्रबिम्ब अंगुलादि ११।७ और राहुबिम्ब २८।१६ मानैक्यखण्ड १६।४१ हुआ, इसमें चन्द्रशर १७।३ घटाया तो शेष अंगुलादि ०।३८ यह चन्द्र ग्रास हुआ अर्थात् पूर्वोक्त दिन चन्द्रग्रहण होना चाहिए था। परन्तु ग्रहलाघव के अनुसार पूर्वोक्त समय के राहु ०।७।३०।४६ और सूर्य ६।२०।१४।२५ होने से (व्यग्वर्क ६।१२।४३।३६ दक्षिण) चन्द्रशर अंगुलादि २०।३ हुआ। यह मानैक्य खण्ड १६।४१ में नहीं घट सकता इसलिए ग्रहण नहीं होना चाहिए सो वास्तव में उस समय ग्रहण नहीं हुआ था। इसलिए यह सम्मति देता हूँ जो उचित है।

अब संवत् १७८२ माघकृ ३० गुरुवार को सूर्य ग्रहण नहीं हुआ था (क्योंकि व्यग्वर्क भुजांश ८ अंश से कम और व्यग्वर्क उत्तर होने से एतद्देश में सूर्यग्रहण नहीं होता है) परंतु ग्रहलाघव के गणित द्वारा ग्रहण आता है जिसका ग्रहलाघवीय गणित करके दिखाता हूँ। संवत् १९८२ शक १८४७ मा० कृ० ३० गुरौ १३।३१ इस दिन ग्रहलाघवीय गणित द्वारा अहर्गण बल्ली ०।४१।२०।१४ तथा देशान्तर संस्कृत (देहली) मध्यम सूर्य ८।२६।४७।३२ त्रिफलचन्द्र (उदयकालीन मध्यमचन्द्र) ८।२६।२२।१० और राहु ३।२।४६।५७ प्रातः ६ बजे के स्पष्ट सूर्य ६।०।१४।३६ गति ६१।१६ उदय स्पष्ट चन्द्र ८।२७।१७।५८ गति ८४६।४३ चरपल ११६ दिनमान २६।४ (सूर्योदय काल ६ घटी ४७ मिनट) चर घटिकादि १।५६ का चालन देकर उदय कालीन स्पष्ट रवि ६।०।१५।३७ गति ६१।१६ स्पष्ट चन्द्र ८।२७।१७।५८ गति ८४६।४३ उदय राहु ३।२।४६।५१ गति ३।११ वक्र इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ। स्पष्ट चन्द्र सूर्य से तिथि की भोग्य घटिकादि बनाई तो घटिकादि १३।३१ हुई।

अब अमान्त घटिका १३।३१ का चालन देकर पर्वान्तकालीन स्पष्ट सूर्य ६।०।२९।२५ गति ६१।१६ तथा सूर्य तुल्य राश्यादि चन्द्र ९।०।२६।२५ गति ८४६।४३ और राहु ३।२।४६।१४ तथा रवि में राहु को घटाने से व्यग्वर्क ५।२७।४०।११ मेषादि होने से उत्तर है यह इस प्रकार हुआ।

अब अमान्तकालीन लग्नस्पष्ट करने हैं और प्रथम अयनांश साधते हैं—शक: १८४७ में ४४४ घटाकर शेष १४०३ कला के अंशादि २३।२३।० और ६ मास की ४५ विकला जोड़कर तात्कालिक अयनांश २३।२३।४५ हुआ। अयनांश २३।२३।४५ को स्पष्ट रवि ६।०।२९।२५ में जोड़ा तो सायनरवि ९।२३।५३।१० हुआ इससे लग्न स्पष्ट की तो ०।१५।५२।३१ यह लग्न स्पष्ट हुआ इसमें ३ राशि घटाई ता राश्यादि ६।१५।५२।३१ यह त्रिभोनलग्न हुआ इसका गणित ग्रहलाघव सारिणी से करते हैं (जो मेरी बनाई ग्रहलाघव सारिणी खेमराज श्रीकृष्णदास जी के प्रेस बम्बई में छपी है) त्रिभोनलग्न ९।१५।५२।३१ में अयनांश २३।२३।४५ जोड़कर १०।६।१६।१६ हुआ इसका भुजांश ५०।४३।४४ ग्र० ला० सा० चक्र नं० ६२ से सानुपात अंशादि १८।३१।२८ यह सूक्ष्म क्रान्ति हुई। सायन लग्न तुलादि होने से दक्षिण हैं। इसका और पूर्वोक्त दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का संस्कार एक दिशा में होने से योग किया तो अंशादि ४६।४५।४ यह दक्षिण नतांश हुआ (नतांशों को ६० अंश में घटाने से शेष उन्नतांश होते हैं) इनमें २२ का भाग दिया तो लब्ध २।७।३० हुआ। इसका वर्ग किया तो ४।३०।५६ हुआ। २ अंश से अधिक होने पर २ अंश घटा कर २।३०।५६ का आधा किया १।१५।२८ को पूर्वोक्त वर्ग ४।३०।५६ में जोड़ा तो ५।४६।२४ हुआ। इसमें १२ अंश और जोड़े तो १७।४६।२४ यह हार हुआ। स्पष्ट रवि ६।०।२९।२५ में और त्रिभोनलग्न ६।१५।५२।३१ इन दोनों का अन्तर ०।१५।२३।६ हुआ इसके अंशादि १५।२३।६ में १० का भाग दिया तो १।३२।१८ यह लब्ध हुआ, इसको १४ अंश में घटा कर शेष १२।२७।४२ से परस्पर गुणा किया तो १६।१०।१८ हुआ इसमें पूर्वोक्त हार १७।४६।२४ का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि ०।५५ यह लम्बन हुआ। सूर्य से त्रिभोनलग्न अधिक होने से लम्बन धन है। जबदर्शान्त ठीक मध्य दिन होता है तब लम्बन और नत दोनों का अभाव होता है। लम्बन धन घटिकादि ०।५५ को अमावस्या की घटिकादि १३।३१ में धन किया तो १४।२६ लम्बनसंस्कृतदर्शान्त अथवा सूर्यग्रहण का मध्यकाल हुआ। लम्बन ०।५५ को १३ से गुणा कर गुणनफल कलादि ११।५५ हुआ इसको लम्बन धन की समान व्यग्वर्क ५।२७।४०।११ में भी धन किया तो ५।२७।५२।६ यह लम्बन संस्कृत व्यग्वर्क हुआ। इसके भुजांश २।७।५४ तुल्य (ग्र० ला० सा० च० नं० ६३ से) सानुपात अंगुलादि ३।२० यह चन्द्रशर हुआ व्यग्वर्क मेषादि होने से उत्तर है। लम्बन ०।५५ को ६ से गुणा कर ५।३० अंशादि को त्रिभोन लग्न ६।१५।५२।३१ में लम्बन धन होने से धन किया तो ६।२१।२२।३१ यह लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्न हुआ इसमें अयनांश २३।२३।४५ जोड़कर १०।१४।४५।१६ इसके भुजांस ४५।१४।४४ से (ग्र० ला० सा० चक्र नं० ६२) सानुपात अंशादि १६।४०।२५ यह सूक्ष्म क्रान्ति हुई। सायन लग्न तुलादि होने से इसका और दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का संस्कार एक दिशा के होने से परस्पर योग किया तो ४५।८।१ यह लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश :दक्षिण हुआ। इसमें १० का भाग दिया तो कलादि ४।३०।३८ लब्धि हुई, इसको १८ कला में घटाया तो १३।२९।२२ शेष रहा, इसको और पूर्वोक्त लब्धि ४।३०।३८ को परस्पर गुणा किया तो कलादि ६०।५०।४१ यह गुणनफल हुआ, इसको और ६ अंश १८ कला में घटाया तो ५।१७।६ यह अंशादि शेष रहा। इसको कलात्मक ५।१७।६ मानकर इसका पूर्वोक्त गुणनफल ६०।५०।४१ में भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ११।३० नति हुई पूर्वोक्त नतांश दक्षिण होने से नति ११।३० दक्षिण है, इसका और पूर्वोक्त चन्द्रशर अंगुलादि ३।२० उत्तर परस्पर संस्कार भिन्न दिशा के होने से अन्तर किया तो ८।१० यह स्पष्टशर दक्षिण हुआ।

अब इसी स्पष्टशर ८।१० से ही चन्द्रग्रहणवत सूर्यचन्द्रविम्ब मध्यस्थिति आदि लाते हैं—सूर्यगति

६१।१६ से (ग्र० ला० सा० च० नं० ६७ से) सानुपात अंगुलादि ११।६ यह सूर्यबिम्ब हुआ और चन्द्रगति ८४६।४३ से सानुपात अंगुलादि ११।३० यह चन्द्रबिम्ब हुआ इन दोनों के योग २२।३६ का आधा ११।२० यह मानैक्यखण्ड हुआ इसमें स्पष्टशर ८।१० को घटाया तो शेष अंगुलादि ३।१० यह ग्रासमान हुआ। इसको सूर्यबिम्ब ११।६ में घटाया तो शेष ७।५९ यह शेषबिम्ब हुआ।

अब मध्यस्थिति लाते हैं—मानैक्यखण्ड ११।२० में स्पष्टशर ८।१० को जोड़ा तो १९।३० हुआ इसको १० से गुणा किया तो १६५।०० इसको ग्रास ३।१० से गुणा किया तो ६१७।३० यह लब्ध हुआ इसके वर्गमूल २४।५२ को ५ से गुणा कर १२४।२० इसमें ६ का भाग दिया तो २०।४३।२० यह लब्ध हुआ। इसमें चन्द्रबिम्बमान ११।३० का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि १।४८ मध्यस्थिति हुई। मध्यस्थिति १।४८ को ६ से गुणा करके अंशादि १०।४८।० गुणनफल को त्रिभोनलग्न ६।१५।५२।३१ में घटाया तो ९।५।४।३१ यह स्पर्श त्रिभोनलग्न आया। इसमें अयनांश २३।२३।४५ को जोड़कर ६।२८।२८।१६ के भुजांश ६१।३१।४४ से (ग्र० ला० सा० च० ६२ से) सानुपात अंशादि २०।५२।३१ यह सूक्ष्मक्रान्ति हुई, तुलादि होने से दक्षिण हुई। इसका और दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का संस्कार एक दिशा होने से योग किया तो ४९।२०।७ यह दक्षिण नतांश हुआ। इसमें २२ का भाग दिया यो २।१४।३३ यह लब्ध हुआ इसका वर्ग किया तो ५।१।४२ हुआ इसमें २ अंश से अधिक होने से २ अंश में घटाया तो ३।१।४२ रहा इसका आधा १।३०।५२ इसको पूर्वोक्त वर्ग ५।१।४२ में जोड़ा तो ६।३२।३४ हुआ। इसमें १२ अंश और जोड़े तो १८।३२।३४ यह धन हुआ।

अब दर्शान्तकालीन स्पष्टरवि ९।०।२९।२५ गति ६१।१६ में मध्यस्थिति घटिकादि १।४८ का चालन ऋण फल कलादि १।५० को सूर्य में ऋण किया तो ९।०।२७।३५ यह स्पर्शकालीन सूर्य हुआ। इसको और स्पर्श त्रिभोन लग्न ६।५।४।३१ का अन्तर किया तो ०।४।३६।५६ यह हुआ। इसके अंशादि ४।३६।५६ में १० का भाग दियां तो ०।२७।४१ लब्ध हुआ, इसको १४ अंश में घटाकर १३।३२।१९ से परस्पर गुणा किया तो ६।१४।४८ यह गुणनफल हुआ इसमें हार १८।३२।३४ का भाग दिया तो घटिकादि ०।२० यह स्पर्शलम्बन हुआ, स्पर्श कालीन सूर्य से त्रिभोन लग्न अधिक होने से लम्बन धन है। पुनः मध्यस्थिति १।४८ को ६ से गुणा करके अंशादि १०।४८ को त्रिभोन लग्न ६।१५।५२।३१ में धन किया तो ९।२६।४०।३१ यह मोक्षकालीन त्रिभोनलग्न हुआ। इसमें अयनांश २३।२३ ४५ जोड़कर १०।२०।४।१६ इसके भुजांश ३६।५५।४४ द्वारा (ग्र० ला० सा० चक्र ६२ से) सानुपात अंशादि १५।३।४३ यह सूक्ष्मक्रान्ति हुई। तुलादि होने से दक्षिण है। इसको और दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का संस्कार एक दिशा में होने से योग किया ४३।३१ १६ यह दक्षिण नतांश हुआ। इसमें २२ का भाग दिया तो १।५८।४१ लब्धि हुई। इसका वर्ग किया तो ३।५४।४५ हुआ। इसमें २ अंश से अधिक होने से २ अंश घटाकर शेष १।५४।४५ का आधा ०।५७।२३ को पूर्वोक्त वर्ग ३।५४।४५ में जोड़ा तो ४।५२।८ यह हुआ इसमें १२ अंश और जोड़े तो १६।५२।८ यह हार हुआ।

अब दर्शान्तकालीन स्पष्टरवि ९।०।२६।२५ गति ६१।१६ में मध्यस्थिति १।४८ का चालन धन से फल कलादि १।५० को सूर्य में धन किया तो ६।०।३१।१५ यह मोक्षकालीन रवि हुआ, इसका और मोक्षकालीन त्रिभोनलग्न ६।२६।१०।३१ का अन्तर किया तो ०।२५।४१।६ यह हुआ इसके अंशादि २५।४१।६ में १० का भाग दिया तो लब्ध २।३४।६ हुआ इसको १४ अंशों में घटाकर शेष ११।२५।५४ से परस्पर गुणा किया तो २६।२१।३७ यह गुणनफल हुआ। इसमें हार १६।५२।८ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि १।४४ यह मोक्ष लम्बन हुआ सूर्य से त्रिभोनलग्न अधिक होने से लम्बन धन है।

अब स्पर्श और मोक्षकाल दिखाते हैं—दर्शान्त १३।३१ में मध्यस्थिति १।४८ को घटाया तो शेष ११।४३ रहा इसमें स्पर्श लम्बन ०।२० धन को जोड़ा तो १२।३ यह स्पर्श काल हुआ फिर दर्शान्त घटिकाओं १३।३१ में मध्यस्थिति १।४८ को जोड़ा तो १५।२९ हुआ इसमें मोक्ष लम्बन १।४४ धन को जोड़ा तो १७।३ यह मोक्षकाल हुआ, मोक्षकाल १७।३ में स्पर्शकाल १२।३ को घटाया तो ५।० यह ग्रहण का पर्वकाल हुआ।

अब अयनवलन साधते हैं—पर्वान्त कालिक स्पष्ट रवि ९।०।२९।२५ में ३ राशि (सूर्यग्रहण होने से) जोड़ा तो ०।०।२९।२५ हुआ इसमें अयनांश २३।२३।४५ को जोड़ा तो ०।२३।५३।१० हुआ, इसको भुज राश्यादि ०।२३।५३।१० है तथा भुजांश २३।५३।१० हुआ राशि शून्य होने से १ प्रथम खण्ड ७ से अंशादि को गुणा किया तो १६७।१२।१० हुआ इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि अंगुलादि १।३४ यह अयनवलन हुआ, सायनरवि मेषादि होने से उत्तर है।

अब मध्यनत लाते हैं—सूर्यग्रहण के मध्यकाल १४।२६ और दिनार्ध १३।२ (पूर्वोक्त) का अन्तर किया १।२४ नत पश्चिम हुआ (दिनार्द्ध के बाद मध्यकाल है इससे नतपश्चिम है)।

अब अक्षवलन साधते हैं—मध्यनत १।२४ पश्चिम में ५ का भाग दिया तो लब्धि राश्यादि ०।८।२४।० हुई (अथवा १।२४ नत में ६ से गुणा किया तो भी अंशादि ८।२४।० हुआ) इसमें अयनांश नहीं मिलाकर इसी से वलन साधते हैं—राशिस्थान शून्य है इसलिते प्रथम खण्ड ७ से अंशादि ८।२४।० को गुणा करके ५८।४८।० इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि १।५७ यह वलन हुआ इसको पलभा ६।३३ से गुणा करके १२।४६।२१ इसमें ५ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि २।३३ यह अक्षवलन हुआ, मध्यनत पश्चिम है इससे अक्षबलन दक्षिण है।

अब वलनांघ्रि साधते हैं—पूर्वोक्त अयनवलन अंगुलादि ५।३४ उत्तर और अक्षवलन अंगुलादि २।३३ दक्षिण है—भिन्न दिशा के होने से परस्पर अन्तर किया तो अंगुलादि ३।१ उत्तर हुआ इसमें ६ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ०।३० यह उत्तर वलनाघ्रि हुआ।

अब ग्रासांघ्रि साधते हैं—ग्रास ३।२० को ६० से गुणा किया तो २००।०।० हुआ इसमें मानैक्यखण्ड ११।२० का भाग दिया तो लब्ध १७।३८ हुआ इसका वर्गमूल किया तो ४।१२ यह ग्रासांघ्रि हुआ।

इसी प्रकार ग्रहणों का गणित करना चाहिये मकरन्द और ग्रहलाघवीय गणित से अन्तर पड़ता है क्योंकि मकरन्दानुसार ग्रास ६।३० हैं (पूर्वोक्त गणित में देखें) और ग्रह लाघवानुसार ३।१० है अर्थात् अंगुलादि ३।२० का अन्तर पड़ता है यह बड़ा अन्तर है क्योकि नवग्रहण अंगुलादि ३।२० मकरन्द से हो तो ग्रहलाघव का अभाव जाने इत्यादि। इसका कारण केवल राहु है, इस लिये ग्रहलाघवीय राहु द्वारा ग्रहण गणित करना चाहिये।

अबप्रथम ग्रहण का सामयिक स्पर्श मध्य मोक्ष दिखलाकर फिर राहु के अन्तर की जानने की सारणी तथा क्रम लिखेंगे।

अंगुलादि

सूर्य बिम्ब	११। ९	चन्द्रविम्ब	११।३०
ग्रास	३।१०	स्पष्ट शर	८।१० दक्षिण
वलनांघ्रि	०।३० उत्तर	ग्रासाङ्घ्रि	४।१२

स्पष्टशर ८।१० दक्षिण है इसलिये दक्षिण के विन्दु से वलनांघ्रि ०।३० उत्तर होने से उत्क्रम से अर्थात् वाम

हाथ से दक्षिण हाथ की तरफ को चिन्ह दिया वहाँ ग्रहण का मध्य होगा इसके ठीक सामने चिन्ह दिया वहाँ शेष बिम्ब का मध्य होगा, अब मध्य चिन्ह से ग्रासांघ्रि ४।१२ को पश्चिम की ओर को दिया वहाँ ग्रहण का स्पर्श होगा और पूर्व की ओर को दिया तहाँ ग्रहण का मोक्ष होगा इस प्रकार त्रिज्या से आकृति बनाकर स्पर्श मोक्ष आदि का स्थान जानना चाहिये।

यह सूर्य ग्रहण नहीं हुआ था कारण की उत्तर के व्यग्वर्क के ८ अंश से कम अंश, परन्तु मकरन्द और ग्रह लाघव से ग्रहण होना पाया गया इसी कारण इसी ग्रहण का उदाहरण दिखाया गया है।

इति ग्रहणाधिकार समाप्त

अब यह जानना चाहिये की ग्रह लाघवीय राहु किस प्रकार जाना जावे इसलिए ग्रहलाघवीय और मकरन्दीय राहु का अन्तर बतलाकर १ चक्र (सारिणी) बनाते हैं जो सदैव काम आवेगी। मकरन्द के अनुसार राहु १ दिन में जितना चलता है ऋण को १२ राशि में घटाने से धनगति हो जाती है अर्थात् १ दिन में धनगति अंशादि ५६।५६।४६।१५।५।०।१७।३६।०।०।० इतना चलता है और ग्रहलाघवीय अंशादि ५९।५६।४६।१२।४७।१६।५०।२६ १७।४१।२१।१८ इतना चलता है इसका अन्तर करने से अंशादि ०।०।०।२।१७।४०।२७।६।४२।१८।३८।४२ इतना हुआ अर्थात् प्रत्येक दिन में इतना ग्रहलाघवीयानुसार कम चलता है जिसके अन्तर का चक्र नीचे बनाया है।

क्षेपक कलादि २३।२१ युक्त करके फिर मकरन्दीय राहु में घटाने से ग्रहलाघवीय राहु होता हैं।

मकरन्द ग्रहलाघवीय अन्तर सारिणी—

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२२	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५
	५६	२२	४५	८	२१	५४	१७	४०	३	२६	४६	१२	३५	५८	२१
अंशादि	४४	५६	५३	५०	४६	५३	४०	३७	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४
	३१	४४	२६	१३	५८	४२	२७	११	५६	४०	२५	६	५४	३८	१२
	३७	३१	३	३४	६	३८	६	४६	१२	४४	१६	४७	१६	५१	२२
	३	३७	१५	५१	२८	५	४२	१६	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८
	६	३	६	६	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३
	२७	६	१२	१६	२५	३२	३८	४५	५१	५८	४	१०	१७	२३	३०
	०	२७	५४	२१	४८	१५	४२	६	३६	३	३०	५७	२४	५१	१८

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११
	४४	७	३०	५३	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५
अंशादि	११	७	४	१	५८	५४	५१	४८	५४	४१	३८	३५	३२	२८	२५
	७	५२	३६	२१	६	५०	३५	१९	४	४८	३३	१७	२	४६	३१
	५४	२५	५७	२९	०	३२	३	३५	७	३८	१०	४२	१३	४५	१६
	१५	५२	२९	६	४३	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०	१७	५४
	४६	४९	५२	५५	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	३०
	३६	४३	४९	५६	२	९	१५	२१	२८	३४	४१	४७	५४	०	७
	४५	१२	३९	६	३३	०	२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३७	३

	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६
	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९
अंशादि	२२	१९	१५	१२	९	५	२	५९	५६	५२	४९	२६	४	३९	३६
	१५	०	४४	२९	१३	५८	४२	२७	१२	५६	४१	२५	३०	५४	३९
	४८	२०	५१	२३	५४	२६	५८	२९	१	३३	४	३६	७	३९	११
	३१	८	४५	२२	५९	३६	१६	५०	२८	५	४२	१९	५६	६३	१०
	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१६
	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	५	११	१८	२४	३०	३७	४३
	३०	५७	२४	५१	१८	४५	१२	३९	६	३३	७	२७	५४	२१	४८

	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२
	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२४	४७	१०	३३
अंशादि	३३	३०	२६	२३	२०	१७	१३	१०	७	४	०	५७	५४	५१	४७
	२३	८	५२	३७	२१	६	५०	३५	१९	४	४८	३३	१८	२	४७
	४२	१४	४६	१७	४९	२०	५२	२४	५५	२७	५७	३०	२	३३	५
	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४७	२१	५७	३४	११	४९	२६
	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३
	५०	५६	३	९	१६	३२	२८	३५	४१	४८	५४	१	७	१४	२०
	१५	४२	९	३६	३	३०	५७	२४	५१	१८	४५	१२	३९	६	३३

इसी प्रकार प्रत्येक मध्यम ग्रह की भी सारिणी बन सकती है। अर्थात् इसका छठाभाग अंशादि ०।०।०।० २२।५६।४४ ३१।३७।३।६।२७ को प्रथम कोष्ठ मे रखकर ६० कोष्ठों में इतना ही जोड़कर रखदिए।

शाके १४४२ चै० शु० १ भौम इस दिन से ग्रहलाघवीय गणित आरम्भ हुआ है। इसके १ दिन पहले अर्थात् सोमवार को ग्रहलाघवीय राहु राश्यादि ०।२७।३८।० (क्षेपक) था और इसी दिन मकरन्दीय अहर्गण के सर्वेदिन १६८७८५१ थे तथा वल्ली हुई ७।४८।५०।५१ इतनी थी। वल्ली द्वारा मकरन्दसारिणी से राहु लाने से राश्यादि ०।२७ ५९ २८ यह अर्द्धरात्रि का हुआ। प्रातः ६ बजे का बनाने पर क्योंकि (ग्रहलाघवीय राहु प्रातः ६ का है) राहु की कलादि ३।११ वक्रगति का १।४ पौना कलादि २।२३ को और जोड़ा तो (ऋण उलटा + किया) राश्यादि ० २८।१५ यह प्रातः ६ बजे का हुआ इसका और ग्रहलाघवीय ०।२७।३८।० का अन्तर किया तो राश्यादि ०।०।२३।५१ उस समय इतना कम था अर्थात् मकरन्दीय में इतना ऋण करना था।

अब इसका यह क्रम है कि, मकरन्दीय दिनग्रह वल्ली में पूर्वोक्त बल्ली ७।४८।५०।५१ घटाकर जो शेष रहे (यह शेष है जो ग्रहलाघवीय अहर्गण है) शेष बल्ली द्वारा राहु की अन्तिम अन्तर सारिणी से मध्यमग्रह लाने की भांति लाकर उसे ६ से गुणा करके जो राश्यादि हो उसे पूर्वोक्त अन्तर कलादि २३।५१ जोड़ ले जो प्राप्त हो उसको मकरन्दीय राहु में घटा देने से जो राश्यादि हो वह प्रातः ६ बजे का ग्रहलाघवीय राहु स्पष्ट हो जायगा।